विशद

# जिनसहस्त्रनाम
# श्री सम्मेदशिखर कूट पूजन
# श्री भक्तामर विधान
# कल्याण मंदिर स्तोत्र विधान

**(पूजा विधान एवं दीप अर्चना)**

## माण्डला

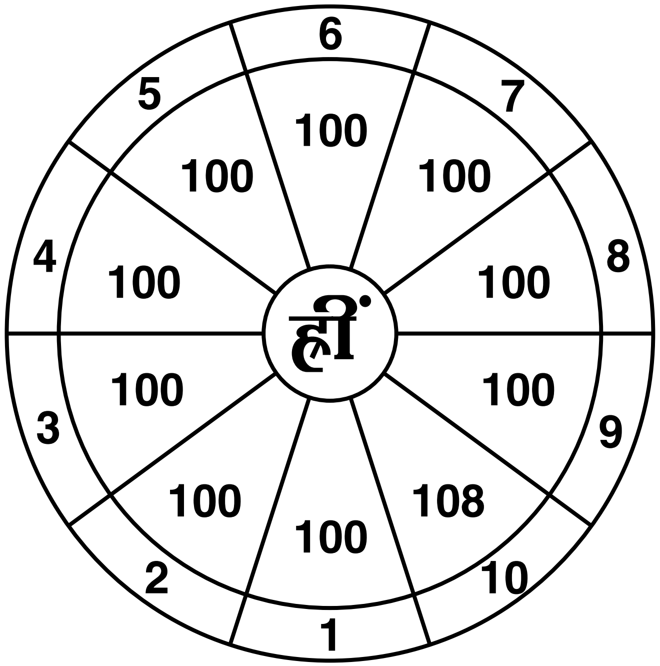


**रचयिता :**

**प. पू. साहित्य रत्नाकार आचर्य 108 श्री विशदसागर जी महाराज**


कृति – विशद जिनसहस्त्रनाम, श्री सम्मेदशिखर कूट पूजन, श्री भक्तामर विधान, कल्याण मंदिर स्तोत्र एवं दीपार्चना

रचयिता – प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज

संस्करण – चतुर्थ–2024, प्रतियाँ – 1000

सम्पादन – स्थविर मुनि 108 श्री विशाल सागर जी महाराज
मुनि 108 श्री विशुभ सागर जी महाराज
मुनि 108 श्री विभोर सागर जी महाराज
मुनि 108 श्री विलक्ष्य सागर जी महाराज

सहयोग – आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी
क्षुल्लिका श्री वात्सल्य भारती माताजी

संकलन – ज्योति दीदी–9829076085, आस्था दीदी–9660996425
सपना दीदी–9829127533, आरती दीदी–8700876822

प्राप्ति स्थल – 1. सुरेश जैन सेठी, शांति नगर, जयपुर – 9413336017
2. हरीश जैन, दिल्ली – 9136248971
3. महेन्द्र कुमार जैन, सैक्टर–3 रोहिणी – 09810570747
4. पदम जैन, रेवाड़ी – 09416888879
5. श्री सरस्वती पेपर स्टोर, चांदी की टकसाल, जयपुर
मो.: 8114417253

**पुण्यार्जक :**
**श्री सुनील जैन, श्रीमती संगीता जैन, रितिक जैन**
ज्योति कॉलोनी, शाहदरा दिल्ली नं. 5, जे. आर. होजरी 9/493, परशुराम बाजार
गांधी नगर, दिल्ली–31 – फोन : 9910539652

मुद्रक – बसन्त जैन, श्री सरस्वती प्रिन्टिंग इण्स्ट्रीज, SBI के नीचे,
चांदी की टकसाल, जयपुर – मो.: 8114417253
ईमेल : jainbasant02@gmail.com

मूल्य – 30/– रु. मात्र

कृति – विशद जिनसहस्त्रनाम, श्री सम्मेदशिखर कूट पूजन, श्री भक्तामर विधान, कल्याण मंदिर स्तोत्र एवं दीपार्चना

रचयिता – प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज

संस्करण – चतुर्थ-2024, प्रतियाँ – 1000

सम्पादन – स्थविर मुनि 108 श्री विशाल सागर जी महाराज
मुनि 108 श्री विशुभ सागर जी महाराज
मुनि 108 श्री विभोर सागर जी महाराज
मुनि 108 श्री विलक्ष्य सागर जी महाराज

सहयोग – आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी
क्षुल्लिका श्री वात्सल्य भारती माताजी

संकलन – ज्योति दीदी-9829076085, आस्था दीदी-9660996425
सपना दीदी-9829127533, आरती दीदी-8700876822

प्राप्ति स्थल – 1. सुरेश जैन सेठी, शांति नगर, जयपुर – 9413336017
2. हरीश जैन, दिल्ली – 9136248971
3. महेन्द्र कुमार जैन, सैक्टर-3 रोहिणी – 09810570747
4. पदम जैन, रेवाड़ी – 09416888879
5. श्री सरस्वती पेपर स्टोर, चांदी की टकसाल, जयपुर
मो.: 8114417253

**पुण्यार्जक : ब्रह्मचारी मुकेश भैय्या की दीक्षा के उपलक्ष्य में**
**श्रीमान मुकेश जैन-श्रीमती ममता जैन**
**नितेश जैन-श्रीमती वैशाली जैन ( सुपुत्र एवं पुत्रवधु ), विरांश जैन ( सुपौत्र )**
शंकर नगर, दिल्ली-51 – मोबाइल : 9210338697

मुद्रक – बसन्त जैन, श्री सरस्वती प्रिन्टिंग इण्स्ट्रीज, SBI के नीचे, चांदी की टकसाल, जयपुर – मो.: 8114417253
ईमेल : jainbasant02@gmail.com

मूल्य – 30/- रु. मात्र

# लघु सहस्रनाम व्रत विधि

भारत देश के मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान आदि प्रांतों में व साधु संघों में सहस्रनाम व्रत में ग्यारह उपवास करने की भी परंपरा है। इसमें भी उपवास के दिन सहस्रनाम पूजा करके 1008 मंत्रों को पढ़कर समुच्चय जाप्य करना चाहिए। सहस्रनाम स्तोत्र पढ़कर एक-एक अध्याय के अंत में अर्घ्य चढ़ाने की भी परंपरा है। इस प्रकार विधिवत् पूजन करके समुच्चय जाप्य एवं

ग्यारह व्रतों में नीचे लिखी अलग-अलग जाप्य भी कर सकते हैं-

1. ॐ ह्री श्रीमदादि शतनाम धारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं दिव्यभाषापत्यादि शतनाम धारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं स्थविष्ठादि शतनाम धारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं महाशोकध्वजादि शतनाम धारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री वृक्षलक्षणादि शतनाम धारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं महामुन्यादि शतनाम धारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं असंस्कृतसुसंस्कारादि शतनामधारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं वृहद्बृहस्पत्यादि शतनाम धारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं त्रिकालदर्श्यादि शतनाम धारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं दिग्वासादिअष्टोत्तर शतनाम धारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्रीमदादि-अष्टोत्तरसहस्रनाम धारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।

इस व्रत को भी पूर्ण करके ''सहस्रनाम मंडल विधान'' करके यथाशक्ति उद्यापन करना चाहिए। इस सहस्रनाम व्रत के प्रभाव से भव्य जीव नाना सुखों को भोगकर अंत में एक हजार आठ लक्षण व नाम के धारक ऐसे जिनेंद्रदेव के पद को प्राप्त करने में समर्थ हो सकते हैं। जो इस व्रत को नहीं कर सकते वे भी यदि सहस्रनाम मंत्रों को पढ़ेंगे और पूजा करेंगे तो नियम से धन-धान्य व सुख-शांति को प्राप्त करेंगे एवं अपनी स्मरण शक्ति व सम्यग्ज्ञान को वृद्धिगंत करते हुए जीवन में चारित्र को ग्रहण कर महान् बनेंगे और परंपरा से मोक्ष प्राप्त करने के अधिकारी हो जावेंगे।

प.पू. आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज अब तक 225 पूजन विधानों की रचना कर चुके उन्हीं में से एक यह सहस्रनाम विधान भी है। अधिकाधिक संख्या में सहस्रनाम पाठ व विधान कर जीवन को सौभाग्यशाली बनाएँ।

**संकलन - स्थविर मुनि श्री विशाल सागर**



## भूतकाल तीर्थंकरा:

(1) ॐ ह्रीं श्री श्रीनिर्वाण जिनेन्द्राय नमः (2) श्री सागर जी (3) श्री महासाधु जी (4) श्री विमलप्रभ जी (5) श्री श्रीधर जी (6) श्री सुदत्त जी (7) श्री अमलप्रभ जी (8) श्री उद्धर जी (9) श्री अंगिर जी (10) श्री सन्मति जी (11) श्री सिंधु जी (12) श्री कुसुमांजलि जी (13) श्री शिवगण जी (14) श्री उत्साह जी (15) श्री ज्ञानेश्वर जी (16) श्री परमेश्वर जी (17) श्री विमलेश्वर जी (18) श्री यशोधर जी (19) श्री कृष्णमति जी (20) श्री ज्ञानमति जी (21) श्री शुद्धमति जी (22) श्री श्रीभद्र जी (23) श्री अतिक्रांत जी (24) श्री शांताश्चेति भूतकालसम्बन्धी चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमो नमः।

## वर्तमानकाल तीर्थंकरा:

(1) श्री ऋषभनाथ जी (2) श्री अजितनाथ जी (3) श्री संभवनाथ जी (4) श्री अभिनन्दननाथ जी (5) श्री सुमतिनाथ जी (6) श्री पद्मप्रभ जी (7) श्री सुपार्श्वनाथ जी (8) श्री चन्द्रप्रभ जी (9) श्री पुष्पदन्तनाथ जी (10) श्री शीतलनाथ जी (11) श्री श्रेयांसनाथ जी (12) श्री वासुपूज्य जी (13) श्री विमलनाथ जी (14) श्री अनन्तनाथ जी (15) श्री धर्मनाथ जी (16) श्री शान्तिनाथ जी (17) श्री कुन्थुनाथ जी (18) श्री अरहनाथ जी (19) श्री मल्लिनाथ जी (20) श्री मुनिसुव्रतनाथ जी (21) श्री नमिनाथ जी (22) श्री नेमिनाथ जी (23) श्री पार्श्वनाथ जी (24) श्री वर्द्धमानश्चेति वर्तमानकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमो नमः।

## भविष्यतकाल तीर्थंकरा:

(1) श्री महापद्म जी (2) श्री सुरदेव जी (3) श्री सुपार्श्व जी (4) श्री स्वयंप्रभ जी (5) श्री सर्वात्मभूत जी (6) श्री देवपुत्र जी (7) श्री कुलपुत्र जी (8) श्री उदंक जी (9) श्री प्रोष्ठिल जी (10) श्री जयकीर्ति जी (11) श्री मुनिसुव्रत जी (12) श्री अर जी (अमम) (13) श्री निष्पाप जी (14) श्री निष्कषाय जी (15) श्री विपुल जी (16) श्री निर्मल जी (17) श्री चित्रगुप्त जी (18) श्री समाधिगुप्त जी (19) श्री स्वयंभू जी (20) श्री अनिवर्तक जी (21) श्री जय जी (22) श्री विमल जी (23) श्री देवपाल जी (24) श्री अनन्तवीर्याश्चेति भविष्यत्काल-सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमो नमः।

## विदेहक्षेत्रस्थ विंशति तीर्थंकरा:

(1) ॐ ह्रीं श्री सीमंधर जिनेन्द्राय नमः (2) श्री युगमंधर जी (3) श्री बाहु जी (4) श्री सुबाहु जी (5) श्री सुजात जी (6) श्री स्वयंप्रभु जी (7) श्री वृषभानन जी (8) श्री अनन्तवीर्य जी (9) श्री सुरप्रभ जी (10) श्री विशालकीर्ति जी (11) श्री वज्रधर जी (12) श्री चन्द्रानन जी (13) श्री भद्रबाहु जी (14) श्री भुजंगम जी (15) श्री ईश्वर जी (16) श्री नेमप्रभ जी (नेमि) (17) श्री वीरसेन जी (18) श्री महाभद्र जी (19) श्री देवयश जी (20) श्री अजितवीर्याश्चेति विदेहक्षेत्रस्थविंशति तीर्थंकरेभ्यो नमो नमः।

**तीर्थंकर त्रय काल के, विद्यमान जिनराज।**
**विशद भाव से पूजते, तीन योग से आज।।**

ॐ ह्रीं त्रिकालवर्ति विद्यमान तीर्थंकरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

# लघु विनय पाठ

पूजा विधि से पूर्व यह, पढ़ें विनय से पाठ।
धन्य जिनेश्वर देवजी, कर्म नशाए आठ।।1।।
शिव वनिता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान।
अनन्त चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान।।2।।
पीड़ा हारी लोक में, भव-दधि नाशनहार।
ज्ञायक हो त्रायलोक के, शिवपद के दातार।।3।।
धर्मामृत दायक प्रभो !, तुम हो एक जिनेन्द्र।
चरण कमल में आपके, झुकते विनत शतेन्द्र।।4।।
भविजन को भवसिन्धु में, एक आप आधार।
कर्म बन्ध का जीव के, करने वाले क्षार।।5।।
चरण कमल तव पूजते, विघ्न रोग हों नाश।
भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश।।6।।
यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विराग।।7।।
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार।
अतः भक्त बन के प्रभो !, आया तुमरे द्वार।।8।।

# मंगल पाठ

मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत।
धर्मागम की अर्चना, से हो भव का अंत।।9।।
मंगल जिनगृह बिम्ब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार।।10।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत।।

# अथ पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ ह्रीं अनादिमूल मंत्रेभ्योनमः। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)



चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो, धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो, धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरिहंते शरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं, धम्मं शरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

# मंगल विधान

शुद्धाशुद्ध अवस्था में कोई, णमोकार को ध्याये।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाए।
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

# अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूज रहे जिन नाथ।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणेभ्यो अर्घ्यं नि.स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधूभ्यो अर्घ्य निर्व. स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्त्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं श्री द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं नि.स्व.।।4।।

ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरणकमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।5।।

# "पूजा प्रतिज्ञा पाठ"

अनेकांत स्याद्वाद के धारी, अनन्त चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन, का करने वाले कल्याण।
तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा, जग मंगलकारी भगवान।
भाव शुद्धि पाने हे स्वामी !, करता हूँ प्रभु का गुणगान।।1।।

निज स्वभाव विभाव प्रकाशक, श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के, विस्तृत ज्ञानी हे भगवान!
हे अर्हन्त! अष्ट द्रव्यों का, पाया मैंने आलम्बन।
होकर के एकाग्रचित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन।।2।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपामि।

## ''स्वस्ति मंगल पाठ''

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश।।
विमलानन्त धर्म शांती जिन, कुन्थु अरह मल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय।।

इति श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि।

## ''परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ''

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके, हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान।।
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निस्पृह होकर करें साधना, 'विशद' करें स्व पर कल्याण।।1।।
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नौं भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान।।
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान।।2।।
भेद आठ औषधि ऋद्धि के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश।।
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज।।3।।

।। इति परमर्षि-स्वस्ति-मंगल-विधानं।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)



# मूलनायक सहित समुच्चय पूजा

स्थापना (दोहा)

देव शास्त्र गुरु देव नव, विद्यमान जिन सिद्ध।
कृत्रिमा-कृत्रिम बिम्ब जिन, भू निर्वाण प्रसिद्ध।।
सहस्त्रनाम दशधर्म शुभ, रत्नत्रय णमोकार।
सोलह कारण का हृदय, आह्वानन् शत् बार।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व देव शास्त्र गुरु, नवदेवता, तीस चौबीसी विद्यमान विंशति जिन, पंचमेरु, नन्दीश्वर, त्रिलोक सम्बन्धी, कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, सहस्त्रनाम, सोलह कारण, दशलक्षण, रत्नत्रय, णमोकार, निर्वाण क्षेत्रादि समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी-छन्दः)

यह निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रुज विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय जलं निर्व.स्वाहा।

सुरभित यह गंध चढ़ाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय चंदनं निर्व.स्वाहा।

अक्षत के पुंज चढ़ाएँ, शाश्वत अक्षय पद पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय अक्षतान् निर्व.स्वाहा।

पुष्पित हम पुष्प चढ़ाएँ, कामादिक दोष नशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय पुष्पं निर्व.स्वाहा।

चरु यह रसदार चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

रत्नोंमय दीप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय दीपं निर्व.स्वाहा।

सुरभित यह धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय धूपं निर्व.स्वाहा।

फल ताजे शिव फलदायी, हम चढ़ा रहे हैं भाई।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय फलं निर्व.स्वाहा।

यह पावन अर्घ्य चढ़ाएँ, अनुपम अनर्घ्य पद पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा – शांती पाने के लिए, देते शांती धार।
हमको भी निज सम करो, कर दो यह उपकार।।

(शांतये शांतिधारा)

दोहा – पुष्पांजलि करते यहाँ, लेकर पावन फूल।
विशद भावना है यही, कर्म होंय निर्मूल।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

### जयमाला

दोहा – जैन धर्म जयवंत है, तीनों लोक त्रिकाल।
गाते जैनाराध्य की, भाव सहित जयमाल।।

(ज्ञानोदय छन्द)

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैन धर्म जिन चैत्य जिनालय, जैनागम का है अर्चन।।1।।
भरतैरावत ढाई द्वीप में, तीन काल के जिन तीर्थेश।
पंच विदेहों के तीर्थंकर, पूज रहे हम यहाँ विशेष।।2।।
स्वर्ग लोक में और ज्योतिषी, देवों के जो रहे विमान।
भावन व्यन्तर के गेहों में, रहे जिनालय महति महान।।3।।
मध्य लोक में मेरु कुलाचल, गिरि विजयार्ध है इष्वाकार।
रजताचल मानुषोत्तर गिरि तरु, नन्दीश्वर है मंगलकार।।4।।
रुचक सुकुण्डल गिरि पे जिनगृह, सिद्ध क्षेत्र जो हैं निर्वाण।
सहस्त्रकूट शुभ समवशरण जिन, मानस्तंभ हैं पूज्य महान।।5।।



उत्तम क्षमा मार्दव आदिक, बतलाए दश धर्म विशेष।
रत्नत्रय युत धर्म ऋद्धियाँ, सहसनाम पावें तीर्थेश।।6।।

दोहा – सोलह कारण भावना, और अठाई पर्व।
पंच कल्याणक आदि हम, पूज रहें हैं सर्व।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक 1008 श्री .........सहित वर्तमान भूत भविष्यत सम्बन्धी पंच भरत, पंच ऐरावत, पंच विदेह क्षेत्रावस्थित सर्व तीर्थंकर, नवदेवता, मध्य ऊर्ध्व एवं अधोलोक, नन्दीश्वर, पंचमेरु सम्बन्धित कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, गर्भ जन्म तप केवलज्ञान निर्वाण भूमि, तीर्थ क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, दशलक्षण, सोलहकारण, रत्नत्रयादि धर्म, ढाई द्वीप स्थित तीन कम नो करोड़ गणधरादि मुनिवरेभ्यो सम्पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – जिनाराध्य को पूजकर, पाना शिव सोपान।
यही भावना है विशद, पाएँ पद निर्वाण।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

# इष्ट प्रार्थना

भावना भगवान मेरी, यह सुखी संसार हो।
सत्य संयम शील धर, हर जीव का उद्धार हो।।1।।
पाप का परिहार होवे, धर्म का प्रचार हो।
वीर वाणी का विशद, व्यवहार घर-घर बार हो।।2।।
सप्त व्यसन का जहाँ से, हे प्रभू जी ह्रास हो।
शान्ति वा आनन्द में, हर जीव का विश्वास हो।3।।
देव गुरू वाणी में, हर इक जीव का विश्वास हो।
हर बुराई का जहाँ से, पूर्णता अब नाश हो।।4।।
खेद अरु भय शोक हे जिन!, जीव के सब दूर हों।
सौख्य शांती से सभी जन, पूर्णतः भरपूर हों।।5।।
संत श्रावक के हृदय से, मद सदा चकचूर हो।
हो 'विशद' धर्मात्मा हर, नूर का भी नूर हो।।6।।

दोहा– भाए जो यह भावना, मन में श्रद्धा धार।
अल्पकाल में जीव वह, हो जाए भव पार।।

आचार्य श्री कुंदकुंद देव द्वारा रचित सिद्ध-भक्ति

# लघु सिद्ध–भक्ति (प्राकृत)

**असरीरा जीवघणा, उवजुत्ता दंसणे य णाणे य।**
**सायार-मणायारा, लक्खण-मेयं तु सिद्धाणं।।1।।**
**मूलोत्तर-पयडीणं, बंधोदय-सत्त-कम्म-उम्मुक्का।**
**मंगलभूदा सिद्धा, अट्ठगुणातीद संसारा।।2।।**
**अट्ठविह-कम्मवियला, सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।**
**अट्ठगुणा किदकिच्चा, लोयग्ग णिवासिणो सिद्धा।।3।।**
**सिद्धा णट्ठट्ठमला, विसुद्धबुद्धी य लद्धि-सब्भावा।**
**तिहुअण सिर सेहरया, पसीयंतु भडारया सव्वे।।4।।**
**गमणागमण-विमुक्के, विहडिय कम्म पयडि संघारा।**
**सासय सुहसंपत्ते, ते सिद्धा वंदिमो णिच्चं।।5।।**
**जय मंगलभूदाणं, विमलाणं णाण दंसण-मयाणं।**
**तहलोय-सेहराणं, णमो सया सव्व सिद्धाणं।।6।।**
**सम्मत्त-णाण-दंसण, वीरिय-सुहुमं तहेव अवगहणं।**
**अगुरुलघु-मव्वावाहं, अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं।।7।।**
**तवसिद्धे णयसिद्धे, संजमसिद्धे चरित्तसिद्धे य।**
**णाणम्मि दंसणम्मि य, सिद्धे सिरसा णमंसामि।।8।।**

## अंचलिका

**इच्छामि भंते! सिद्ध भक्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण सम्म दंसण सम्मचरित्त जुत्ताणं, अट्ठविह-कम्म-विप्प मुक्काणं, अट्ठ गुण संपण्णाणं उड्ढलोय-मत्थयम्मि पयट्ठियाणं, तव सिद्धाणं, णय सिद्धाणं, संयम सिद्धाणं, चरित्त सिद्धाणं, अतीताणागद-वट्टमाण कालत्तय सिद्धाणं, सव्व सिद्धाणं, सया णिच्चकालं, अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, बोहिलाओ सुगइ-गमणं समाहि-मरणं जिण-गुण-संपत्ति होउमज्झं।**

।। इति श्री लघु सिद्ध भक्ति प्राकृत ।।

**वर्धमान मंत्र : ॐ णमो भयवदो वड्ढमाणस्य रिसहस्स चक्कं जलंतं गच्छइ आयासं, पायालं, लोयाणं, भूयाणं, जये वा, विवादे वा, थंभणे वा, रणंगणे वा, रायंगणे वा, मोहेण वा, सव्वजीव सत्ताणं, अपराजिदो भवदु रक्ख रक्ख स्वाहा।**



# जिन सहस्रनाम पाठ

## पात्र शुद्धि

**शोधये सर्व पात्राणि, पूजार्थानपि वारिभिः।**
**समाहितो यथाम्नायं, करोमि सकली क्रियाम्।।**

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते श्रीमते पवित्रतर जलेन पात्र शुद्धिं करोमि स्वाहा।

## दीपक स्थापना

**रुचिरदीप्तिकरं शुभदीपकं, सकललोकसुखाकर-मुज्ज्वलम्।**
**तिमिर जालहरं प्रकरं सदा, किल धरामि सुमंगलकं मुदा।।**

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि।

(मुख्य दिशानुसार आग्नेय कोण में दीपक स्थापित करें।)

## सर्व शुद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ठः ठः ह्रीं स्वाहा।

## रक्षासूत्र बन्धन मंत्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते तीर्थंकर परमेश्वराय कर पल्लवे रक्षाबंधनं करोमि एतस्य समृद्धिरस्तु। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः स्वाहा।

## अग्नि प्रज्ज्वलन मंत्र

**दुरंतमोह सन्तान, कांतारदहन क्षमं।**
**दर्भैः प्रज्ज्वालयाम्यग्निं, ज्वाला प्रज्ज्वाल वितांवरं।।**

ॐ ह्रीं श्रीं क्ष्रीं अग्निं प्रज्ज्वालयामि स्वाहा।

(कर्पूर प्रज्ज्वलन करके अग्नि प्रज्ज्वलन करना चाहिये।)

# जिन सहस्रनाम पूजा

स्थापना

**वृषभादिक चौबिस तीर्थंकर, तीन लोक में पूज्य महान।**
**एक हजार आठ गुण धारी, जिनका हम करते गुणगान।।**
**सहस्रनाम की पूजा करते, मन में होके भाव विभोर।**
**आह्वानन् करते हम उर में, विशद शांति हो चारों ओर।।**

ॐ ह्रीं श्री मदादिधर्मसाम्राज्यनायकान्त अष्टाधिक सहस्र शुभनाम धारक श्री जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् आहवानन्। अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितोभव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(ज्ञानोदय छन्द)

**भटक रहे चारों गतियों में, पल भर शांति न मिल पाई।**
**सुख समझा जिन विषयों को, वे रहे घोर दुख की खाई।।**
**अब जन्म जरादिक नाश हेतु, हम पावन नीर चढ़ाते हैं।**
**श्री सहस्रनाम की पूजा करके, मन में बहु हर्षाते हैं।।1।।**

ॐ ह्रीं श्रीअष्टाधिक सहस्रनाम धारक श्रीजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि.स्वाहा।

**भवाताप में झुलस रहे हम, ज्वाला निज में धधक रही।**
**भ्रमित हुए अज्ञान तिमिर में, मिली ना हमको राह सही।।**
**शीतल चन्दन केसर पावन, सुरभित यहाँ चढ़ाते हैं।**
**श्री सहस्रनाम की पूजा करके, मन में बहु हर्षाते हैं।।2।।**

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्रनाम धारक श्री जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**जग की खोटी इच्छाओं ने, मन मैला कर डाला है।**
**मोह कषायों ने आतम को, किया सदा ही काला है।**
**अक्षय निधि पाने यह पावन, अक्षत यहाँ चढ़ाते हैं।**
**श्री सहस्रनाम की पूजा करके, मन में बहु हर्षाते हैं।।3।।**

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्रनाम धारक श्री जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

**जलकर काम रोग की ज्वाला, क्षण क्षण हमें जलाती है।**
**जितना उसको शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती है।**
**हम काम बाण के नाश हेतु, ये पावन पुष्प चढ़ाते हैं।**
**श्री सहस्रनाम की पूजा करके, मन में बहु हर्षाते हैं।।4।।**

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्रनाम धारक श्री जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**लख चौरासी योनी में हम, भोजन को ही भटकाए।**
**मन चाहे खाने पर भी हम, तृप्त कभी ना हो पाए।**
**इस क्षुधा रोग के नाश हेतु, ये व्यंजन सरस चढ़ाते हैं।**
**श्री सहस्रनाम की पूजा करके, मन में बहु हर्षाते हैं।।5।।**

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्रनाम धारक श्री जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।



**मिथ्यातम के नाश हेतु, यह ज्ञान दीप प्रजलाया है।**
**सोया था उपमान ज्ञान का, हमने आज जगाया है।।**
**हम दीप जलाकर हे स्वामी, तव चरण आरती गाते हैं।**
**श्री सहस्रनाम की पूजा करके, मन में बहु हर्षाते हैं।।6।।**

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्रनाम धारक श्री जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रभु भक्ति वन्दना करके हम, चेतन की शक्ति जगाएँगे।**
**जग के व्यापारों को तजकर, निज गुण अपने प्रगटाएँगे।**
**अब अष्ट कर्म के शमन हेतु, पावन ये धूप जलाते हैं।**
**श्री सहस्रनाम की पूजा करके, मन में बहु हर्षाते हैं।।7।।**

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्रनाम धारक श्री जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**सब अशुभ भाव का फल पाके, दुर्गति के भाजन बन जाते।**
**शुभ भाव बनाकर भक्ती से, नर सुर गति धर संयम पाते।**
**अब रत्नत्रय का फल पाने, फल ताजे यहाँ चढ़ाते हैं।**
**श्री सहस्रनाम की पूजा करके, मन में बहु हर्षाते हैं।।8।।**

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्रनाम धारक श्री जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**जल चन्दनादि यह द्रव्य आठ, हमने सब यहाँ मिलाए हैं।**
**जो है अनर्घ्य पद का कारण, वह अर्घ्य बनाकर लाए हैं।**
**अब पद अनर्घ्य पाने स्वामी, ये पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।**
**श्री सहस्रनाम की पूजा करके, मन में बहु हर्षाते हैं।।9।।**

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्रनाम धारक श्री जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोहा – नाथ! कृपा बरसाइये, भक्त करें अरदास।**
**शिवपथ के राही बनें, पूरी हो मम आस।।**

(शान्तये शान्तिधारा)

**गुण अनन्त के कोष जिन, सहस्र आठ हैं नाम।**
**पुष्पांजलिं करते 'विशद', करके चरण प्रणाम।।**

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

## जयमाला

दोहा – सहसनाम जिनराज के, गाये मंगलकार।
जयमाला गाते विशद, नत हो बारम्बार।।

(ताटंक छन्द)

तीन लोक के स्वामी जिनवर, केवलज्ञान के धारी हैं।
कर्मघातिया के हैं नाशी, पूर्ण रूप अविकारी हैं।।
पूर्व भवों के पुण्योदय से, पावन नर भव पाते हैं।
उत्तम कुल वय देह सुसंगति, धर्म भावना भाते हैं।।1।।
देव शास्त्र गुरु के दर्शन भी, पुण्य योग से मिलते हैं।
सम्यक् दर्शन ज्ञान आचरण, तप के उपवन खिलते हैं।।
केवल ज्ञान के धारी हों या, तीर्थंकर का समवशरण।
तीर्थंकर प्रकृति पाते हैं, भव्य जीव करते दर्शन।।2।।
सोलहकारण भव्य भावना, भव्य जीव जो भाते हैं।
पावन तीर्थंकर प्रकृति शुभ, बन्ध तभी कर पाते हैं।।
नरक गती का बन्ध ना हो तो, स्वर्गों में प्राणी जावें।
तीर्थंकर प्रकृति के फल से, भव्य जीव भव सुख पावें।।3।।
गर्भ कल्याणक में सुर आके, दिव्य रत्न वर्षाते हैं।
जन्म कल्याणक के अवसर पर, मेरु पें न्हवन कराते हैं।।
दीक्षा ज्ञान कल्याण मनाकर, पूजा पाठ रचाते हैं।
सहस्रनाम के द्वारा प्रभु पद, जय जय कार लगाते हैं।।4।।
एक हजार आठ शुभ प्रभु के, सार्थक नाम बताए हैं।
जिनकी अर्चा करके प्राणी, निज सौभाग्य जगाए हैं।
मंत्र कहा प्रत्येक नाम शुभ, उनका करते हैं जो जाप।
'विशद' भाव से ध्याने वालों, के कट जाते सारे पाप।।5।।

दोहा – सहसनाम जिनदेव के, गाये मंगलकार।
उनको ध्याए भाव से, पाए सौख्य अपार।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्रनाम धारकाय श्री जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – पूजा करने के लिए, सहसनाम की आज।
आये हैं तव चरण में, पूर्ण करो मम काज।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपामि ।। ।। इत्याशीर्वादः ।।



दोहा – श्री जिनवर के हैं विशद, सहस्राष्ट शुभ नाम।
नाम मंत्र का जाप कर, जिन पद करें प्रणाम।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

## 1. प्रथम शतकः

१. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमते नमः
२. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंभुवे नमः
३. ॐ ह्रीं अर्हं वृषभाय नमः
४. ॐ ह्रीं अर्हं शम्भवाय नमः
५. ॐ ह्रीं अर्हं शम्भवे नमः
६. ॐ ह्रीं अर्हं आत्मभुवे नमः
७. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयं प्रभाय नमः
८. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभवे नमः
९. ॐ ह्रीं अर्हं भोक्त्रे नमः
१०. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभुवे नमः
११. ॐ ह्रीं अर्हं अपुनर्भवाय नमः
१२. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वात्मने नमः
१३. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वलोकेशाय नमः
१४. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वतश्चक्षुषे नमः
१५. ॐ ह्रीं अर्हं अक्षराय नमः
१६. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वविदे नमः
१७. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वविद्येशाय नमः
१८. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वयोनये नमः
१९. ॐ ह्रीं अर्हं अनश्वराय नमः
२०. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वदृश्वने नमः
२१. ॐ ह्रीं अर्हं विभवे नमः
२२. ॐ ह्रीं अर्हं धात्रे नमः
२३. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वेशाय नमः
२४. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वलोचनाय नमः
२५. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वव्यापिने नमः
२६. ॐ ह्रीं अर्हं विधये नमः
२७. ॐ ह्रीं अर्हं वेधसे नमः
२८. ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वताय नमः
२९. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वतोमुखाय नमः
३०. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वकर्मणे नमः
३१. ॐ ह्रीं अर्हं जगज्ज्येष्ठाय नमः
३२. ॐ ह्रीं अर्हं विश्व मूर्तये नमः
३३. ॐ ह्रीं अर्हं जिनेश्वराय नमः
३४. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वदृशे नमः
३५. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभूतेशाय नमः
३६. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वज्योतिषे नमः
३७. ॐ ह्रीं अर्हं अनीश्वराय नमः
३८. ॐ ह्रीं अर्हं जिनाय नमः
३९. ॐ ह्रीं अर्हं जिष्णवे नमः
४०. ॐ ह्रीं अर्हं अमेयात्मने नमः
४१. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वरीशाय नमः
४२. ॐ ह्रीं अर्हं जगत्पतये नमः
४३. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तजिते नमः
४४. ॐ ह्रीं अर्हं अचिन्त्यात्मने नमः
४५. ॐ ह्रीं अर्हं भव्य बन्धवे नमः
४६. ॐ ह्रीं अर्हं अबन्धनाय नमः
४७. ॐ ह्रीं अर्हं युगादि पुरुषाय नमः
४८. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मणे नमः
४९. ॐ ह्रीं अर्हं पञ्च ब्रह्ममयाय नमः
५०. ॐ ह्रीं अर्हं शिवाय नमः
५१. ॐ ह्रीं अर्हं पराय नमः
५२. ॐ ह्रीं अर्हं परतराय नमः

५३. ॐ ह्रीं अर्हं सूक्ष्माय नमः
५४. ॐ ह्रीं अर्हं परमेष्ठिने नमः
५५. ॐ ह्रीं अर्हं सनातनाय नमः
५६. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयं ज्योतिषे नमः
५७. ॐ ह्रीं अर्हं अजाय नमः
५८. ॐ ह्रीं अर्हं अजन्मने नमः
५९. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मयोनये नमः
६०. ॐ ह्रीं अर्हं अयोनिजाय नमः
६१. ॐ ह्रीं अर्हं मोहारि विजयिने नमः
६२. ॐ ह्रीं अर्हं जेत्रे नमः
६३. ॐ ह्रीं अर्हं धर्म चक्रिणे नमः
६४. ॐ ह्रीं अर्हं दयाध्वजाय नमः
६५. ॐ ह्रीं अर्हं प्रशान्तारये नमः
६६. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तात्मने नमः
६७. ॐ ह्रीं अर्हं योगिने नमः
६८. ॐ ह्रीं अर्हं योगीश्वरार्चिताय नमः
६९. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मविदे नमः
७०. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्म तत्त्वज्ञाय नमः
७१. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मोद्याविदे नमः
७२. ॐ ह्रीं अर्हं यतीश्वराय नमः
७३. ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धाय नमः
७४. ॐ ह्रीं अर्हं बुद्धाय नमः
७५. ॐ ह्रीं अर्हं प्रबुद्धात्मने नमः
७६. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धार्थाय नमः
७७. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्ध शासनाय नमः
७८. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धान्तविदे नमः
७९. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धाय नमः
८०. ॐ ह्रीं अर्हं ध्येयाय नमः
८१. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्ध साध्याय नमः
८२. ॐ ह्रीं अर्हं जगद्धिताय नमः
८३. ॐ ह्रीं अर्हं सहिष्णवे नमः
८४. ॐ ह्रीं अर्हं अच्युताय नमः
८५. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्ताय नमः
८६. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभविष्णवे नमः
८७. ॐ ह्रीं अर्हं भवोद्भवाय नमः
८८. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभूष्णवे नमः
८९. ॐ ह्रीं अर्हं अजराय नमः
९०. ॐ ह्रीं अर्हं अजर्याय नमः
९१. ॐ ह्रीं अर्हं भ्राजिष्णवे नमः
९२. ॐ ह्रीं अर्हं धीश्वराय नमः
९३. ॐ ह्रीं अर्हं अव्याय नमः
९४. ॐ ह्रीं अर्हं विभाषसवे नमः
९५. ॐ ह्रीं अर्हं असम्भूष्णवे नमः
९६. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंभूष्णवे नमः
९७. ॐ ह्रीं अर्हं पुरातनाय नमः
९८. ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने नमः
९९. ॐ ह्रीं अर्हं परम ज्योतिषे नमः
१००. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगत्-परमेश्वराय नमः

दोहा – श्रीमदादि शत नाम के, धारी श्री जिनेश।
अर्घ्य चढ़ाते भाव से, जिन पद यहाँ विशेष।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमदादि त्रिजगत्परमेश्वरायान्त्य शत् नाम धरार्हत् परमेष्ठिने नमो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।



## 2. द्वितिय शतकः

१०१. ॐ ह्रीं अर्हं दिव्य भाषापतये नमः
१०२. ॐ ह्रीं अर्हं दिव्याय नमः
१०३. ॐ ह्रीं अर्हं पूतवाचे नमः
१०४. ॐ ह्रीं अर्हं पूत शासनाय नमः
१०५. ॐ ह्रीं अर्हं पूतात्मने नमः
१०६. ॐ ह्रीं अर्हं परम ज्योतिषे नमः
१०७. ॐ ह्रीं अर्हं धर्माध्यक्षाय नमः
१०८. ॐ ह्रीं अर्हं दमीश्वराय नमः
१०९. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपतये नमः
११०. ॐ ह्रीं अर्हं भगवते नमः
१११. ॐ ह्रीं अर्हं अर्हते नमः
११२. ॐ ह्रीं अर्हं अरजसे नमः
११३. ॐ ह्रीं अर्हं विरजसे नमः
११४. ॐ ह्रीं अर्हं शुचये नमः
११५. ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थकृते नमः
११६. ॐ ह्रीं अर्हं केवलिने नमः
११७. ॐ ह्रीं अर्हं ईशानाय नमः
११८. ॐ ह्रीं अर्हं पूजार्हाय नमः
११९. ॐ ह्रीं अर्हं स्नातकाय नमः
१२०. ॐ ह्रीं अर्हं अमलाय नमः
१२१. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्त दीप्त्ये नमः
१२२. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानात्मने नमः
१२३. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयं बुद्धाय नमः
१२४. ॐ ह्रीं अर्हं प्रजापतये नमः
१२५. ॐ ह्रीं अर्हं मुक्ताय नमः
१२६. ॐ ह्रीं अर्हं शक्ताय नमः
१२७. ॐ ह्रीं अर्हं निराबाधाय नमः
१२८. ॐ ह्रीं अर्हं निष्कलाय नमः
१२९. ॐ ह्रीं अर्हं भुवनेश्वराय नमः
१३०. ॐ ह्रीं अर्हं निरंजनाय नमः
१३१. ॐ ह्रीं अर्हं जगत् ज्योतिषे नमः
१३२. ॐ ह्रीं अर्हं निरुक्तोक्तये नमः
१३३. ॐ ह्रीं अर्हं निरामयाय नमः
१३४. ॐ ह्रीं अर्हं अचल स्थितये नमः
१३५. ॐ ह्रीं अर्हं अक्षोभ्याय नमः
१३६. ॐ ह्रीं अर्हं कूटस्थाय नमः
१३७. ॐ ह्रीं अर्हं स्थाणवे नमः
१३८. ॐ ह्रीं अर्हं अक्षयाय नमः
१३९. ॐ ह्रीं अर्हं अग्रण्यै नमः
१४०. ॐ ह्रीं अर्हं ग्रामण्यै नमः
१४१. ॐ ह्रीं अर्हं नेत्रे नमः
१४२. ॐ ह्रीं अर्हं प्रणेत्रे नमः
१४३. ॐ ह्रीं अर्हं न्यायशास्त्रकृते नमः
१४४. ॐ ह्रीं अर्हं शास्त्रे नमः
१४५. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मपतये नमः
१४६. ॐ ह्रीं अर्हं धर्म्याय नमः
१४७. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मात्मने नमः
१४८. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थकृते नमः
१४९. ॐ ह्रीं अर्हं वृषध्वजाय नमः
१५०. ॐ ह्रीं अर्हं वृषाधीशाय नमः
१५१. ॐ ह्रीं अर्हं वृषकेतवे नमः
१५२. ॐ ह्रीं अर्हं वृषायुधाय नमः
१५३. ॐ ह्रीं अर्हं वृषाय नमः
१५४. ॐ ह्रीं अर्हं वृषपतये नमः
१५५. ॐ ह्रीं अर्हं भर्त्रे नमः

१५६. ॐ ह्रीं अर्हं वृषभाङ्काय नमः
१५७. ॐ ह्रीं अर्हं वृषोद्भवाय नमः
१५८. ॐ ह्रीं अर्हं हिरण्यनाभये नमः
१५९. ॐ ह्रीं अर्हं भूतात्मने नमः
१६०. ॐ ह्रीं अर्हं भूतभृते नमः
१६१. ॐ ह्रीं अर्हं भूतभावनाय नमः
१६२. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभवाय नमः
१६३. ॐ ह्रीं अर्हं विभवाय नमः
१६४. ॐ ह्रीं अर्हं भास्वते नमः
१६५. ॐ ह्रीं अर्हं भवाय नमः
१६६. ॐ ह्रीं अर्हं भावाय नमः
१६७. ॐ ह्रीं अर्हं भवान्तकाय नमः
१६८. ॐ ह्रीं अर्हं हिरण्यगर्भाय नमः
१६९. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीगर्भाय नमः
१७०. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभूत विभवाय नमः
१७१. ॐ ह्रीं अर्हं अभवाय नमः
१७२. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयं प्रभवे नमः
१७३. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभूतात्मने नमः
१७४. ॐ ह्रीं अर्हं भूतनाथाय नमः
१७५. ॐ ह्रीं अर्हं जगत्पतये नमः
१७६. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वादये नमः
१७७. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वदृशे नमः
१७८. ॐ ह्रीं अर्हं सार्वाये नमः
१७९. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञाय नमः
१८०. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वदर्शनाय नमः
१८१. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वात्मने नमः
१८२. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वलोकेशाय नमः
१८३. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वविदे नमः
१८४. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वलोक जिते नमः
१८५. ॐ ह्रीं अर्हं सुगतये नमः
१८६. ॐ ह्रीं अर्हं सुश्रुताय नमः
१८७. ॐ ह्रीं अर्हं सुश्रुते नमः
१८८. ॐ ह्रीं अर्हं सुवाचे नमः
१८९. ॐ ह्रीं अर्हं सूरये नमः
१९०. ॐ ह्रीं अर्हं बहुश्रुताय नमः
१९१. ॐ ह्रीं अर्हं विश्रुताय नमः
१९२. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वतपादाय नमः
१९३. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वशीर्षाय नमः
१९४. ॐ ह्रीं अर्हं शुचिश्रवसे नमः
१९५. ॐ ह्रीं अर्हं सहस्रशीर्षाय नमः
१९६. ॐ ह्रीं अर्हं क्षेत्रज्ञाय नमः
१९७. ॐ ह्रीं अर्हं सहस्राक्षाय नमः
१९८. ॐ ह्रीं अर्हं सहस्रपदे नमः
१९९. ॐ ह्रीं अर्हं भूतभव्य भवद्भर्त्रे नमः
२००. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वविद्या महेश्वराय नमः

दोहा – दिव्य भाषापति आदि शत्, श्री जिनेन्द्र के नाम।
अर्चा करते भाव से, करके चरण प्रणाम्।।

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्य भाषापत्यादि विश्व विद्या महेश्वरान्त्य शत् नाम धरार्हत् परमेष्ठिने नमो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।



## 3. तृतिय शतकः

२०१. ॐ ह्रीं अर्हं स्थविष्ठाय नमः
२०२. ॐ ह्रीं अर्हं स्थविराय नमः
२०३. ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठाय नमः
२०४. ॐ ह्रीं अर्हं पृष्ठाय नमः
२०५. ॐ ह्रीं अर्हं प्रेष्ठाय नमः
२०६. ॐ ह्रीं अर्हं वरिष्ठधिये नमः
२०७. ॐ ह्रीं अर्हं स्थेष्ठाय नमः
२०८. ॐ ह्रीं अर्हं गरिष्ठाय नमः
२०९. ॐ ह्रीं अर्हं बंहिष्ठाय नमः
२१०. ॐ ह्रीं अर्हं श्रेष्ठाय नमः
२११. ॐ ह्रीं अर्हं अणिष्ठाय नमः
२१२. ॐ ह्रीं अर्हं गरिष्ठगिरे नमः
२१३. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभृते नमः
२१४. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वसृजे नमः
२१५. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वेशे नमः
२१६. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभुजे नमः
२१७. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वनायकाय नमः
२१८. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वाशिषे नमः
२१९. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वरूपात्मने नमः
२२०. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वजिते नमः
२२१. ॐ ह्रीं अर्हं विजितान्तकाय नमः
२२२. ॐ ह्रीं अर्हं विभवाय नमः
२२३. ॐ ह्रीं अर्हं विभयाय नमः
२२४. ॐ ह्रीं अर्हं वीराय नमः
२२५. ॐ ह्रीं अर्हं विशोकाय नमः
२२६. ॐ ह्रीं अर्हं विजराय नमः
२२७. ॐ ह्रीं अर्हं अजराय नमः
२२८. ॐ ह्रीं अर्हं विरागाय नमः
२२९. ॐ ह्रीं अर्हं विरताय नमः
२३०. ॐ ह्रीं अर्हं असंगाय नमः
२३१. ॐ ह्रीं अर्हं विविक्ताय नमः
२३२. ॐ ह्रीं अर्हं वीतमत्सराय नमः
२३३. ॐ ह्रीं अर्हं विनेय जनताबन्धवे नमः
२३४. ॐ ह्रीं अर्हं विलीनाशेष कल्मषाय नमः
२३५. ॐ ह्रीं अर्हं वियोगाय नमः
२३६. ॐ ह्रीं अर्हं योगविदे नमः
२३७. ॐ ह्रीं अर्हं विदुषे नमः
२३८. ॐ ह्रीं अर्हं विधात्रे नमः
२३९. ॐ ह्रीं अर्हं सुविधये नमः
२४०. ॐ ह्रीं अर्हं सुधिये नमः
२४१. ॐ ह्रीं अर्हं क्षान्तिभाजे नमः
२४२. ॐ ह्रीं अर्हं पृथ्वी मूर्त्तये नमः
२४३. ॐ ह्रीं अर्हं शान्तिभाजे नमः
२४४. ॐ ह्रीं अर्हं सलिलात्मकाय नमः
२४५. ॐ ह्रीं अर्हं वायुमूर्तये नमः
२४६. ॐ ह्रीं अर्हं असंगात्मने नमः
२४७. ॐ ह्रीं अर्हं वह्निमूर्त्तये नमः
२४८. ॐ ह्रीं अर्हं अधर्मधृत्ये नमः
२४९. ॐ ह्रीं अर्हं सुयज्वने नमः
२५०. ॐ ह्रीं अर्हं यजमानात्मने नमः
२५१. ॐ ह्रीं अर्हं सुत्वने नमः
२५२. ॐ ह्रीं अर्हं सूत्राम पूजिताय नमः

२५३. ॐ ह्रीं अर्हं ऋत्विजे नमः
२५४. ॐ ह्रीं अर्हं यज्ञपतये नमः
२५५. ॐ ह्रीं अर्हं यज्ञाय नमः
२५६. ॐ ह्रीं अर्हं यज्ञाङ्गाय नमः
२५७. ॐ ह्रीं अर्हं अमृताय नमः
२५८. ॐ ह्रीं अर्हं हविषे नमः
२५९. ॐ ह्रीं अर्हं व्योममूर्तये नमः
२६०. ॐ ह्रीं अर्हं अमूर्तात्मने नमः
२६१. ॐ ह्रीं अर्हं निर्लेपाय नमः
२६२. ॐ ह्रीं अर्हं निर्मलाय नमः
२६३. ॐ ह्रीं अर्हं अचलाय नमः
२६४. ॐ ह्रीं अर्हं सोममूर्तये नमः
२६५. ॐ ह्रीं अर्हं सुसौम्यात्मने नमः
२६६. ॐ ह्रीं अर्हं सूर्यमूर्तये नमः
२६७. ॐ ह्रीं अर्हं महाप्रभाय नमः
२६८. ॐ ह्रीं अर्हं मन्त्रविदे नमः
२६९. ॐ ह्रीं अर्हं मन्त्रकृते नमः
२७०. ॐ ह्रीं अर्हं मन्त्रिणे नमः
२७१. ॐ ह्रीं अर्हं मन्त्रमूर्तये नमः
२७२. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तगाय नमः
२७३. ॐ ह्रीं अर्हं स्वतन्त्राय नमः
२७४. ॐ ह्रीं अर्हं तन्त्रकृते नमः
२७५. ॐ ह्रीं अर्हं स्वान्ताय नमः
२७६. ॐ ह्रीं अर्हं कृतान्ताय नमः
२७७. ॐ ह्रीं अर्हं कृतान्त-कृते नमः
२७८. ॐ ह्रीं अर्हं कृतिने नमः
२७९. ॐ ह्रीं अर्हं कृतार्थाय नमः
२८०. ॐ ह्रीं अर्हं सत्कृत्याय नमः
२८१. ॐ ह्रीं अर्हं कृतकृत्याय नमः
२८२. ॐ ह्रीं अर्हं कृतक्रतवे नमः
२८३. ॐ ह्रीं अर्हं नित्याय नमः
२८४. ॐ ह्रीं अर्हं मृत्युंजयाय नमः
२८५. ॐ ह्रीं अर्हं अमृत्यवे नमः
२८६. ॐ ह्रीं अर्हं अमृतात्मने नमः
२८७. ॐ ह्रीं अर्हं अमृतोद्भवाय नमः
२८८. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मनिष्ठाय नमः
२८९. ॐ ह्रीं अर्हं परंब्रह्मणे नमः
२९०. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मात्मने नमः
२९१. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मसम्भवाय नमः
२९२. ॐ ह्रीं अर्हं महाब्रह्मपतये नमः
२९३. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मजे नमः
२९४. ॐ ह्रीं अर्हं महाब्रह्म-पदेश्वराय नमः
२९५. ॐ ह्रीं अर्हं सुप्रसन्नाय नमः
२९६. ॐ ह्रीं अर्हं प्रसन्नात्मने नमः
२९७. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानधर्मदमप्रभवे नमः
२९८. ॐ ह्रीं अर्हं प्रशमात्मने नमः
२९९. ॐ ह्रीं अर्हं प्रशान्तात्मने नमः
३००. ॐ ह्रीं अर्हं पुराण-पुरुषोत्तमाय नमः

दोहा – स्थविष्ठादिक हैं विशद, श्री जिन के शत नाम।
जिन अर्चा करते यहाँ, पाने हम शिव धाम।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्थविष्ठादि पुराणपुरुषोत्तमान्त्य शत् नाम धरार्हत् परमेष्ठिने नमो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।



## 4. चतुर्थ शतकः

३०१. ॐ ह्रीं अर्हं महाशोकध्वजाय नमः
३०२. ॐ ह्रीं अर्हं अशोकाय नमः
३०३. ॐ ह्रीं अर्हं काय नमः
३०४. ॐ ह्रीं अर्हं सृष्टे नमः
३०५. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मविष्टराय नमः
३०६. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मेशाय नमः
३०७. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मसम्भूतये नमः
३०८. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मनाभये नमः
३०९. ॐ ह्रीं अर्हं अनुत्तराय नमः
३१०. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मयोनये नमः
३११. ॐ ह्रीं अर्हं जगद्योनये नमः
३१२. ॐ ह्रीं अर्हं इत्याय नमः
३१३. ॐ ह्रीं अर्हं स्तुत्याय नमः
३१४. ॐ ह्रीं अर्हं स्तुतीश्वराय नमः
३१५. ॐ ह्रीं अर्हं स्तवनार्हाय नमः
३१६. ॐ ह्रीं अर्हं हृषीकेशाय नमः
३१७. ॐ ह्रीं अर्हं जितजेयाय नमः
३१८. ॐ ह्रीं अर्हं कृतक्रियाय नमः
३१९. ॐ ह्रीं अर्हं गणाधिपाय नमः
३२०. ॐ ह्रीं अर्हं गणज्येष्ठाय नमः
३२१. ॐ ह्रीं अर्हं गण्याय नमः
३२२. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्याय नमः
३२३. ॐ ह्रीं अर्हं गणाग्रण्ये नमः
३२४. ॐ ह्रीं अर्हं गुणाकराय नमः
३२५. ॐ ह्रीं अर्हं गुणाम्भोधये नमः
३२६. ॐ ह्रीं अर्हं गुणज्ञाय नमः
३२७. ॐ ह्रीं अर्हं गुणनायकाय नमः
३२८. ॐ ह्रीं अर्हं गुणादरिणे नमः
३२९. ॐ ह्रीं अर्हं गुणोच्छेदिने नमः
३३०. ॐ ह्रीं अर्हं निर्गुणाय नमः
३३१. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यगिरे नमः
३३२. ॐ ह्रीं अर्हं गुणाय नमः
३३३. ॐ ह्रीं अर्हं शरण्याय नमः
३३४. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यवाचे नमः
३३५. ॐ ह्रीं अर्हं पूताय नमः
३३६. ॐ ह्रीं अर्हं वरेण्याय नमः
३३७. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यनायकाय नमः
३३८. ॐ ह्रीं अर्हं अगण्याय नमः
३३९. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यधिये नमः
३४०. ॐ ह्रीं अर्हं गुण्याय नमः
३४१. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यकृते नमः
३४२. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यशासनाय नमः
३४३. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मारामाय नमः
३४४. ॐ ह्रीं अर्हं गुणग्रामाय नमः
३४५. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यापुण्य-निरोधकाय नमः
३४६. ॐ ह्रीं अर्हं पापापेताय नमः
३४७. ॐ ह्रीं अर्हं विपापात्मने नमः
३४८. ॐ ह्रीं अर्हं विपाप्मने नमः
३४९. ॐ ह्रीं अर्हं वीतकल्मषाय नमः
३५०. ॐ ह्रीं अर्हं निर्द्वन्द्वाय नमः
३५१. ॐ ह्रीं अर्हं निर्मदाय नमः
३५२. ॐ ह्रीं अर्हं शान्ताय नमः
३५३. ॐ ह्रीं अर्हं निर्मोहाय नमः
३५४. ॐ ह्रीं अर्हं निरुपद्रवाय नमः

३५५. ॐ ह्रीं अर्हं निर्निमेषाय नमः
३५६. ॐ ह्रीं अर्हं निराहाराय नमः
३५७. ॐ ह्रीं अर्हं निष्क्रियाय नमः
३५८. ॐ ह्रीं अर्हं निरुपप्लवाय नमः
३५९. ॐ ह्रीं अर्हं निष्कलंकाय नमः
३६०. ॐ ह्रीं अर्हं निरस्तैनसे नमः
३६१. ॐ ह्रीं अर्हं निर्धूतागसे नमः
३६२. ॐ ह्रीं अर्हं निरास्रवाय नमः
३६३. ॐ ह्रीं अर्हं विशालाय नमः
३६४. ॐ ह्रीं अर्हं विपुलज्योतिषे नमः
३६५. ॐ ह्रीं अर्हं अतुलाय नमः
३६६. ॐ ह्रीं अर्हं अचिन्त्य वैभवाय नमः
३६७. ॐ ह्रीं अर्हं सुसंवृताय नमः
३६८. ॐ ह्रीं अर्हं सुगुप्तामने नमः
३६९. ॐ ह्रीं अर्हं सुभुजे नमः
३७०. ॐ ह्रीं अर्हं सुनयतत्त्वविदे नमः
३७१. ॐ ह्रीं अर्हं एकविद्याय नमः
३७२. ॐ ह्रीं अर्हं महाविद्याय नमः
३७३. ॐ ह्रीं अर्हं मुनये नमः
३७४. ॐ ह्रीं अर्हं परिवृढाय नमः
३७५. ॐ ह्रीं अर्हं पत्ये नमः
३७६. ॐ ह्रीं अर्हं धीशाय नमः
३७७. ॐ ह्रीं अर्हं विद्यानिधये नमः
३७८. ॐ ह्रीं अर्हं साक्षिणे नमः
३७९. ॐ ह्रीं अर्हं विनेत्रे नमः
३८०. ॐ ह्रीं अर्हं विहतान्तकाय नमः
३८१. ॐ ह्रीं अर्हं पित्रे नमः
३८२. ॐ ह्रीं अर्हं पितामहाय नमः
३८३. ॐ ह्रीं अर्हं पात्रे नमः
३८४. ॐ ह्रीं अर्हं पवित्राय नमः
३८५. ॐ ह्रीं अर्हं पावनाय नमः
३८६. ॐ ह्रीं अर्हं गतये नमः
३८७. ॐ ह्रीं अर्हं त्रात्रे नमः
३८८. ॐ ह्रीं अर्हं भिषग्वराय नमः
३८९. ॐ ह्रीं अर्हं वर्याय नमः
३९०. ॐ ह्रीं अर्हं वरदाय नमः
३९१. ॐ ह्रीं अर्हं परमाय नमः
३९२. ॐ ह्रीं अर्हं पुन्से नमः
३९३. ॐ ह्रीं अर्हं कवये नमः
३९४. ॐ ह्रीं अर्हं पुराणपुरुषाय नमः
३९५. ॐ ह्रीं अर्हं वर्षीयसे नमः
३९६. ॐ ह्रीं अर्हं वृषभाय नमः
३९७. ॐ ह्रीं अर्हं पुरवे नमः
३९८. ॐ ह्रीं अर्हं प्रतिष्ठा प्रसवाय नमः
३९९. ॐ ह्रीं अर्हं हेतवे नमः
४००. ॐ ह्रीं अर्हं भुवनैक-पितामहाय नमः

दोहा – महाशोक ध्वज आदि सौ, नामों का गुणगान।
करके करते अर्चना, पाएँ पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाशोकध्वाजादि भुवनैक पितामहान्त शत् नाम धरार्हत् परमेष्ठिने नमो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।



## 5. पञ्चम शतकः

४०१. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवृक्ष-लक्षणाय नमः
४०२. ॐ ह्रीं अर्हं श्लक्ष्णाय नमः
४०३. ॐ ह्रीं अर्हं लक्षण्याय नमः
४०४. ॐ ह्रीं अर्हं शुभलक्षणाय नमः
४०५. ॐ ह्रीं अर्हं निरक्षाय नमः
४०६. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्डरीकाक्षाय नमः
४०७. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्कलाय नमः
४०८. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करेक्षणाय नमः
४०९. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धिदाय नमः
४१०. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्ध संकल्पाय नमः
४११. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धात्मने नमः
४१२. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धसाधनाय नमः
४१३. ॐ ह्रीं अर्हं बुद्धबोध्याय नमः
४१४. ॐ ह्रीं अर्हं महाबोधये नमः
४१५. ॐ ह्रीं अर्हं वर्धमानाय नमः
४१६. ॐ ह्रीं अर्हं महर्धिकाय नमः
४१७. ॐ ह्रीं अर्हं वेदांगाय नमः
४१८. ॐ ह्रीं अर्हं वेदविदे नमः
४१९. ॐ ह्रीं अर्हं वेद्याय नमः
४२०. ॐ ह्रीं अर्हं जातरूपाय नमः
४२१. ॐ ह्रीं अर्हं विदांवराय नमः
४२२. ॐ ह्रीं अर्हं वेदवेद्याय नमः
४२३. ॐ ह्रीं अर्हं स्वसंवेद्याय नमः
४२४. ॐ ह्रीं अर्हं विवेदाय नमः
४२५. ॐ ह्रीं अर्हं वदतांवराय नमः
४२६. ॐ ह्रीं अर्हं अनादिनिधनाय नमः
४२७. ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्ताय नमः
४२८. ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्तवाचे नमः
४२९. ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्तशासनाय नमः
४३०. ॐ ह्रीं अर्हं युगादिकृते नमः
४३१. ॐ ह्रीं अर्हं युगाधाराय नमः
४३२. ॐ ह्रीं अर्हं युगादये नमः
४३३. ॐ ह्रीं अर्हं जगदादिजाय नमः
४३४. ॐ ह्रीं अर्हं अतीन्द्राय नमः
४३५. ॐ ह्रीं अर्हं अतीन्द्रियाय नमः
४३६. ॐ ह्रीं अर्हं धीन्द्राय नमः
४३७. ॐ ह्रीं अर्हं महेन्द्राय नमः
४३८. ॐ ह्रीं अर्हं अतीन्द्रियार्थ दृशे नमः
४३९. ॐ ह्रीं अर्हं अनिन्द्रियाय नमः
४४०. ॐ ह्रीं अर्हं अहमिन्द्रार्च्याय नमः
४४१. ॐ ह्रीं अर्हं महेन्द्रमहिताय नमः
४४२. ॐ ह्रीं अर्हं महते नमः
४४३. ॐ ह्रीं अर्हं उद्भवाय नमः
४४४. ॐ ह्रीं अर्हं कारणाय नमः
४४५. ॐ ह्रीं अर्हं कर्त्रे नमः
४४६. ॐ ह्रीं अर्हं पारगाय नमः
४४७. ॐ ह्रीं अर्हं भवतारकाय नमः
४४८. ॐ ह्रीं अर्हं अग्राह्याय नमः
४४९. ॐ ह्रीं अर्हं गहनाय नमः
४५०. ॐ ह्रीं अर्हं गुह्याय नमः
४५१. ॐ ह्रीं अर्हं परार्घ्याय नमः
४५२. ॐ ह्रीं अर्हं परमेश्वराय नमः

४५३. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तर्द्धये नमः
४५४. ॐ ह्रीं अर्हं अमेयर्द्धये नमः
४५५. ॐ ह्रीं अर्हं अचिन्त्यर्द्धये नमः
४५६. ॐ ह्रीं अर्हं समग्रधिये नमः
४५७. ॐ ह्रीं अर्हं प्राग्रयाय नमः
४५८. ॐ ह्रीं अर्हं प्राग्रहराय नमः
४५९. ॐ ह्रीं अर्हं अभ्यग्राय नमः
४६०. ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्यग्राय नमः
४६१. ॐ ह्रीं अर्हं अग्राय नमः
४६२. ॐ ह्रीं अर्हं अग्रिमाय नमः
४६३. ॐ ह्रीं अर्हं अग्रजाय नमः
४६४. ॐ ह्रीं अर्हं महातपसे नमः
४६५. ॐ ह्रीं अर्हं महातेजसे नमः
४६६. ॐ ह्रीं अर्हं महोदर्काय नमः
४६७. ॐ ह्रीं अर्हं महोदयाय नमः
४६८. ॐ ह्रीं अर्हं महायशसे नमः
४६९. ॐ ह्रीं अर्हं महाधाम्ने नमः
४७०. ॐ ह्रीं अर्हं महासत्त्वाय नमः
४७१. ॐ ह्रीं अर्हं महाधृतये नमः
४७२. ॐ ह्रीं अर्हं महाधैर्याय नमः
४७३. ॐ ह्रीं अर्हं महावीर्याय नमः
४७४. ॐ ह्रीं अर्हं महासंपदे नमः
४७५. ॐ ह्रीं अर्हं महाबलाय नमः
४७६. ॐ ह्रीं अर्हं महाशक्तये नमः
४७७. ॐ ह्रीं अर्हं महाज्योतिषे नमः
४७८. ॐ ह्रीं अर्हं महाभूतये नमः
४७९. ॐ ह्रीं अर्हं महाद्युतये नमः
४८०. ॐ ह्रीं अर्हं महामतये नमः
४८१. ॐ ह्रीं अर्हं महानीतये नमः
४८२. ॐ ह्रीं अर्हं महाक्षान्तये नमः
४८३. ॐ ह्रीं अर्हं महादयाय नमः
४८४. ॐ ह्रीं अर्हं महाप्राज्ञाय नमः
४८५. ॐ ह्रीं अर्हं महाभागाय नमः
४८६. ॐ ह्रीं अर्हं महानन्दाय नमः
४८७. ॐ ह्रीं अर्हं महाकवये नमः
४८८. ॐ ह्रीं अर्हं महामहसे नमः
४८९. ॐ ह्रीं अर्हं महाकीर्तये नमः
४९०. ॐ ह्रीं अर्हं महाकान्तये नमः
४९१. ॐ ह्रीं अर्हं महावपुषे नमः
४९२. ॐ ह्रीं अर्हं महादानाय नमः
४९३. ॐ ह्रीं अर्हं महाज्ञानाय नमः
४९४. ॐ ह्रीं अर्हं महायोगाय नमः
४९५. ॐ ह्रीं अर्हं महागुणाय नमः
४९६. ॐ ह्रीं अर्हं महामहपतये नमः
४९७. ॐ ह्रीं अर्हं प्राप्तमहा-पंचकल्याणकाय नमः
४९८. ॐ ह्रीं अर्हं महाप्रभवे नमः
४९९. ॐ ह्रीं अर्हं महा-प्रातिहार्याधीशाय नमः
५००. ॐ ह्रीं अर्हं महेश्वराय नमः

दोहा - श्रीवृक्षलक्षणादि सौ, नामों का व्याख्यान।
वंदन कर अर्चा करें, अतिशय महिमावान।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवृक्षलक्षणादि महेश्वारान्त्य शत् नाम धराहंत् परमेष्ठिने नमो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।



## 6. षष्ठम् शतकः

५०१. ॐ ह्रीं अर्हं महामुनये नमः
५०२. ॐ ह्रीं अर्हं महामौनिने नमः
५०३. ॐ ह्रीं अर्हं महाध्यानाय नमः
५०४. ॐ ह्रीं अर्हं महादमाय नमः
५०५. ॐ ह्रीं अर्हं महाक्षमाय नमः
५०६. ॐ ह्रीं अर्हं महाशीलाय नमः
५०७. ॐ ह्रीं अर्हं महायज्ञाय नमः
५०८. ॐ ह्रीं अर्हं महामखाय नमः
५०९. ॐ ह्रीं अर्हं महाव्रतपतये नमः
५१०. ॐ ह्रीं अर्हं मह्याय नमः
५११. ॐ ह्रीं अर्हं महाकान्तिधराय नमः
५१२. ॐ ह्रीं अर्हं अधिपाय नमः
५१३. ॐ ह्रीं अर्हं महामैत्रीमयाय नमः
५१४. ॐ ह्रीं अर्हं अमेयाय नमः
५१५. ॐ ह्रीं अर्हं महोपायाय नमः
५१६. ॐ ह्रीं अर्हं महोमयाय नमः
५१७. ॐ ह्रीं अर्हं महाकारुनिकाय नमः
५१८. ॐ ह्रीं अर्हं मन्त्रे नमः
५१९. ॐ ह्रीं अर्हं महामन्त्राय नमः
५२०. ॐ ह्रीं अर्हं महायतये नमः
५२१. ॐ ह्रीं अर्हं महानादाय नमः
५२२. ॐ ह्रीं अर्हं महाघोषाय नमः
५२३. ॐ ह्रीं अर्हं महेज्याय नमः
५२४. ॐ ह्रीं अर्हं महासांपतये नमः
५२५. ॐ ह्रीं अर्हं महाध्वरधराय नमः
५२६. ॐ ह्रीं अर्हं धुर्याय नमः
५२७. ॐ ह्रीं अर्हं महोदार्याय नमः
५२८. ॐ ह्रीं अर्हं महिष्ठवाचे नमः
५२९. ॐ ह्रीं अर्हं महात्मने नमः
५३०. ॐ ह्रीं अर्हं महासांधाम्ने नमः
५३१. ॐ ह्रीं अर्हं महर्षये नमः
५३२. ॐ ह्रीं अर्हं महितोदयाय नमः
५३३. ॐ ह्रीं अर्हं महाक्लेशांकुशाय नमः
५३४. ॐ ह्रीं अर्हं शूराय नमः
५३५. ॐ ह्रीं अर्हं महाभूतपतये नमः
५३६. ॐ ह्रीं अर्हं गुरवे नमः
५३७. ॐ ह्रीं अर्हं महापराक्रमाय नमः
५३८. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्ताय नमः
५३९. ॐ ह्रीं अर्हं महाक्रोधरिपवे नमः
५४०. ॐ ह्रीं अर्हं वशिने नमः
५४१. ॐ ह्रीं अर्हं महाभवाब्धिसंतारिणे नमः
५४२. ॐ ह्रीं अर्हं महामोहाद्रि सूदनाय नमः
५४३. ॐ ह्रीं अर्हं महागुणाकराय नमः
५४४. ॐ ह्रीं अर्हं क्षान्ताय नमः
५४५. ॐ ह्रीं अर्हं महायोगीश्वराय नमः
५४६. ॐ ह्रीं अर्हं शमिने नमः
५४७. ॐ ह्रीं अर्हं महाध्यानपतये नमः
५४८. ॐ ह्रीं अर्हं ध्यातमहाधर्मणे नमः

५४९. ॐ ह्रीं अर्हं महाव्रताय नमः
५५०. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मारिघ्ने नमः
५५१. ॐ ह्रीं अर्हं आत्मज्ञाय नमः
५५२. ॐ ह्रीं अर्हं महादेवाय नमः
५५३. ॐ ह्रीं अर्हं महेशित्रे नमः
५५४. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वक्लेशापहाय नमः
५५५. ॐ ह्रीं अर्हं साधवे नमः
५५६. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वदोषहराय नमः
५५७. ॐ ह्रीं अर्हं हराय नमः
५५८. ॐ ह्रीं अर्हं असंख्येयाय नमः
५५९. ॐ ह्रीं अर्हं अप्रमेयात्मने नमः
५६०. ॐ ह्रीं अर्हं शमात्मने नमः
५६१. ॐ ह्रीं अर्हं प्रशमाकराय नमः
५६२. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वयोगीश्वराय नमः
५६३. ॐ ह्रीं अर्हं अचिन्त्याय नमः
५६४. ॐ ह्रीं अर्हं श्रुतात्मने नमः
५६५. ॐ ह्रीं अर्हं विष्टरश्रवसे नमः
५६६. ॐ ह्रीं अर्हं दान्तात्मने नमः
५६७. ॐ ह्रीं अर्हं दमतीर्थेशाय नमः
५६८. ॐ ह्रीं अर्हं योगात्मने नमः
५६९. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञान सर्वगाय नमः
५७०. ॐ ह्रीं अर्हं प्रधानाय नमः
५७१. ॐ ह्रीं अर्हं आत्मने नमः
५७२. ॐ ह्रीं अर्हं प्रकृतये नमः
५७३. ॐ ह्रीं अर्हं परमाय नमः
५७४. ॐ ह्रीं अर्हं परमोदयाय नमः
५७५. ॐ ह्रीं अर्हं प्रक्षीणबन्धाय नमः
५७६. ॐ ह्रीं अर्हं कामारये नमः
५७७. ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमकृते नमः
५७८. ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमशासनाय नमः
५७९. ॐ ह्रीं अर्हं प्रणवाय नमः
५८०. ॐ ह्रीं अर्हं प्रणयाय नमः
५८१. ॐ ह्रीं अर्हं प्राणाय नमः
५८२. ॐ ह्रीं अर्हं प्राणदाय नमः
५८३. ॐ ह्रीं अर्हं प्रणतेश्वराय नमः
५८४. ॐ ह्रीं अर्हं प्रमाणाय नमः
५८५. ॐ ह्रीं अर्हं प्रणिधये नमः
५८६. ॐ ह्रीं अर्हं दक्षाय नमः
५८७. ॐ ह्रीं अर्हं दक्षिणाय नमः
५८८. ॐ ह्रीं अर्हं अध्वर्यवे नमः
५८९. ॐ ह्रीं अर्हं अध्वराय नमः
५९०. ॐ ह्रीं अर्हं आनन्दाय नमः
५९१. ॐ ह्रीं अर्हं नन्दनाय नमः
५९२. ॐ ह्रीं अर्हं नन्दाय नमः
५९३. ॐ ह्रीं अर्हं वन्द्याय नमः
५९४. ॐ ह्रीं अर्हं अनिन्द्याय नमः
५९५. ॐ ह्रीं अर्हं अभिनन्दनाय नमः
५९६. ॐ ह्रीं अर्हं कामघ्ने नमः
५९७. ॐ ह्रीं अर्हं कामदाय नमः
५९८. ॐ ह्रीं अर्हं काम्याय नमः
५९९. ॐ ह्रीं अर्हं कामधेनवे नमः
६००. ॐ ह्रीं अर्हं अरिञ्जयाय नमः

दोहा – महामुन्यादिक नाम शत्, श्री जिनके शुभकार।
जिन अर्चा कर पूजते, जिन पद बारम्बार।।

ॐ ह्रीं अर्हं महामुन्यादि अरिञ्जयान्त्य शत् नाम धरार्हत् परमेष्ठिने नमो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।



## 7. सप्तम शतकः

६०१. ॐ ह्रीं अर्हं
असंस्कृतसुसंस्काराय नमः
६०२. ॐ ह्रीं अर्हं प्राकृताय नमः
६०३. ॐ ह्रीं अर्हं वैकृतान्तकृते नमः
६०४. ॐ ह्रीं अर्हं अन्तकृते नमः
६०५. ॐ ह्रीं अर्हं कान्तिगवे नमः
६०६. ॐ ह्रीं अर्हं कान्ताय नमः
६०७. ॐ ह्रीं अर्हं चिन्तामणये नमः
६०८. ॐ ह्रीं अर्हं अभीष्टदाय नमः
६०९. ॐ ह्रीं अर्हं अजिताय नमः
६१०. ॐ ह्रीं अर्हं जितकामारये नमः
६११. ॐ ह्रीं अर्हं अमिताय नमः
६१२. ॐ ह्रीं अर्हं अमितशासनाय नमः
६१३. ॐ ह्रीं अर्हं जितक्रोधाय नमः
६१४. ॐ ह्रीं अर्हं जितामित्राय नमः
६१५. ॐ ह्रीं अर्हं जितक्लेशाय नमः
६१६. ॐ ह्रीं अर्हं जितान्तकाय नमः
६१७. ॐ ह्रीं अर्हं जिनेन्द्राय नमः
६१८. ॐ ह्रीं अर्हं परमानन्दाय नमः
६१९. ॐ ह्रीं अर्हं मुनीन्द्राय नमः
६२०. ॐ ह्रीं अर्हं दुन्दुभिस्वनाय नमः
६२१. ॐ ह्रीं अर्हं महेन्द्रवन्द्याय नमः
६२२. ॐ ह्रीं अर्हं योगीन्द्राय नमः
६२३. ॐ ह्रीं अर्हं यतीन्द्राय नमः
६२४. ॐ ह्रीं अर्हं नाभिनन्दनाय नमः
६२५. ॐ ह्रीं अर्हं नाभेयाय नमः
६२६. ॐ ह्रीं अर्हं नाभिजाय नमः
६२७. ॐ ह्रीं अर्हं अजाताय नमः
६२८. ॐ ह्रीं अर्हं सुव्रताय नमः
६२९. ॐ ह्रीं अर्हं मनवे नमः
६३०. ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमाय नमः
६३१. ॐ ह्रीं अर्हं अभेद्याय नमः
६३२. ॐ ह्रीं अर्हं अनत्याय नमः
६३३. ॐ ह्रीं अर्हं अनाश्वते नमः
६३४. ॐ ह्रीं अर्हं अधिकाय नमः
६३५. ॐ ह्रीं अर्हं अधिगुरवे नमः
६३६. ॐ ह्रीं अर्हं सुधिये नमः
६३७. ॐ ह्रीं अर्हं सुमेधसे नमः
६३८. ॐ ह्रीं अर्हं विक्रमिणे नमः
६३९. ॐ ह्रीं अर्हं स्वामिने नमः
६४०. ॐ ह्रीं अर्हं दुराधर्षाय नमः
६४१. ॐ ह्रीं अर्हं निरुत्सुकाय नमः
६४२. ॐ ह्रीं अर्हं विशिष्टाय नमः
६४३. ॐ ह्रीं अर्हं शिष्टभुजे नमः
६४४. ॐ ह्रीं अर्हं शिष्टाय नमः
६४५. ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्ययाय नमः
६४६. ॐ ह्रीं अर्हं कामनाय नमः
६४७. ॐ ह्रीं अर्हं अनघाय नमः
६४८. ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमिने नमः
६४९. ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमंकराय नमः
६५०. ॐ ह्रीं अर्हं अक्षय्याय नमः
६५१. ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमधर्मपतये नमः
६५२. ॐ ह्रीं अर्हं क्षमिने नमः
६५३. ॐ ह्रीं अर्हं अग्राह्याय नमः

६५४. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञान निग्रह्याय नमः
६५५. ॐ ह्रीं अर्हं ध्यानगम्याय नमः
६५६. ॐ ह्रीं अर्हं निरुत्तराय नमः
६५७. ॐ ह्रीं अर्हं सुकृतिने नमः
६५८. ॐ ह्रीं अर्हं धातवे नमः
६५९. ॐ ह्रीं अर्हं इज्यार्हाय नमः
६६०. ॐ ह्रीं अर्हं सुनयाय नमः
६६१. ॐ ह्रीं अर्हं चतुराननाय नमः
६६२. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीनिवासाय नमः
६६३. ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्वक्त्राय नमः
६६४. ॐ ह्रीं अर्हं चतुरास्याय नमः
६६५. ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्मुखाय नमः
६६६. ॐ ह्रीं अर्हं सत्यात्मने नमः
६६७. ॐ ह्रीं अर्हं सत्यविज्ञानाय नमः
६६८. ॐ ह्रीं अर्हं सत्यवाचे नमः
६६९. ॐ ह्रीं अर्हं सत्यशासनाय नमः
६७०. ॐ ह्रीं अर्हं सत्याशिषे नमः
६७१. ॐ ह्रीं अर्हं सत्यसन्धानाय नमः
६७२. ॐ ह्रीं अर्हं सत्याय नमः
६७३. ॐ ह्रीं अर्हं सत्यपरायणाय नमः
६७४. ॐ ह्रीं अर्हं स्थेयसे नमः
६७५. ॐ ह्रीं अर्हं स्थवीयसे नमः
६७६. ॐ ह्रीं अर्हं नेदीयसे नमः
६७७. ॐ ह्रीं अर्हं दवीयसे नमः
६७८. ॐ ह्रीं अर्हं दूरदर्शनाय नमः
६७९. ॐ ह्रीं अर्हं अणोरणीयसे नमः
६८०. ॐ ह्रीं अर्हं अनणवे नमः
६८१. ॐ ह्रीं अर्हं गरीयसामाद्यगुरवे नमः
६८२. ॐ ह्रीं अर्हं सदायोगाय नमः
६८३. ॐ ह्रीं अर्हं सदाभोगाय नमः
६८४. ॐ ह्रीं अर्हं सदातृप्ताय नमः
६८५. ॐ ह्रीं अर्हं सदाशिवाय नमः
६८६. ॐ ह्रीं अर्हं सदागतये नमः
६८७. ॐ ह्रीं अर्हं सदासौख्याय नमः
६८८. ॐ ह्रीं अर्हं सदाविद्याय नमः
६८९. ॐ ह्रीं अर्हं सदोदयाय नमः
६९०. ॐ ह्रीं अर्हं सुघोषाय नमः
६९१. ॐ ह्रीं अर्हं सुमुखाय नमः
६९२. ॐ ह्रीं अर्हं सौम्याय नमः
६९३. ॐ ह्रीं अर्हं सुखदाय नमः
६९४. ॐ ह्रीं अर्हं सुहिताय नमः
६९५. ॐ ह्रीं अर्हं सुहृदे नमः
६९६. ॐ ह्रीं अर्हं सुगुप्ताय नमः
६९७. ॐ ह्रीं अर्हं गुप्तिभृते नमः
६९८. ॐ ह्रीं अर्हं गोप्त्रे नमः
६९९. ॐ ह्रीं अर्हं लोकाध्यक्षाय नमः
७००. ॐ ह्रीं अर्हं दमेश्वराय नमः

दोहा – असंस्कृत सुसंस्कार को, आदि कर शत् नाम।
पूज रहे हम भाव से, करके विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं अर्हं असंस्कृत सुसंस्कारादि दमेश्वरान्त्य शत् नाम धरार्हत् परमेष्ठिने नमो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।



## 8. अष्ठम शतकः

७०१. ॐ ह्रीं अर्हं बृहद्बृहस्पतये नमः
७०२. ॐ ह्रीं अर्हं वाग्मिने नमः
७०३. ॐ ह्रीं अर्हं वाचस्पतये नमः
७०४. ॐ ह्रीं अर्हं उदारधिये नमः
७०५. ॐ ह्रीं अर्हं मनीषिणे नमः
७०६. ॐ ह्रीं अर्हं धिषणाय नमः
७०७. ॐ ह्रीं अर्हं धीमते नमः
७०८. ॐ ह्रीं अर्हं शेमुषीशाय नमः
७०९. ॐ ह्रीं अर्हं गिरांपतये नमः
७१०. ॐ ह्रीं अर्हं नैकरूपाय नमः
७११. ॐ ह्रीं अर्हं नयोत्तुङ्गाय नमः
७१२. ॐ ह्रीं अर्हं नैकात्मने नमः
७१३. ॐ ह्रीं अर्हं नैकधर्मकृते नमः
७१४. ॐ ह्रीं अर्हं अविज्ञेयाय नमः
७१५. ॐ ह्रीं अर्हं अप्रतर्क्यात्मने नमः
७१६. ॐ ह्रीं अर्हं कृतज्ञाय नमः
७१७. ॐ ह्रीं अर्हं कृतलक्षणाय नमः
७१८. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानगर्भाय नमः
७१९. ॐ ह्रीं अर्हं दयागर्भाय नमः
७२०. ॐ ह्रीं अर्हं रत्नगर्भाय नमः
७२१. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभास्वराय नमः
७२२. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मगर्भाय नमः
७२३. ॐ ह्रीं अर्हं जगद्गर्भाय नमः
७२४. ॐ ह्रीं अर्हं हेमगर्भाय नमः
७२५. ॐ ह्रीं अर्हं सुदर्शनाय नमः
७२६. ॐ ह्रीं अर्हं लक्ष्मीवते नमः
७२७. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिदशाध्यक्षाय नमः
७२८. ॐ ह्रीं अर्हं दृढीयसे नमः
७२९. ॐ ह्रीं अर्हं इनाय नमः
७३०. ॐ ह्रीं अर्हं ईशित्रे नमः
७३१. ॐ ह्रीं अर्हं मनोहराय नमः
७३२. ॐ ह्रीं अर्हं मनोज्ञांगाय नमः
७३३. ॐ ह्रीं अर्हं धीराय नमः
७३४. ॐ ह्रीं अर्हं गम्भीरशासनाय नमः
७३५. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मयूपाय नमः
७३६. ॐ ह्रीं अर्हं दयायागाय नमः
७३७. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मनेमये नमः
७३८. ॐ ह्रीं अर्हं मुनीश्वराय नमः
७३९. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मचक्रायुधाय नमः
७४०. ॐ ह्रीं अर्हं देवाय नमः
७४१. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मघ्ने नमः
७४२. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मघोषणाय नमः
७४३. ॐ ह्रीं अर्हं अमोघवाचे नमः
७४४. ॐ ह्रीं अर्हं अमोघाज्ञाय नमः
७४५. ॐ ह्रीं अर्हं निर्मलाय नमः
७४६. ॐ ह्रीं अर्हं अमोघशासनाय नमः
७४७. ॐ ह्रीं अर्हं सुरूपाय नमः
७४८. ॐ ह्रीं अर्हं सुभगाय नमः
७४९. ॐ ह्रीं अर्हं त्यागिने नमः
७५०. ॐ ह्रीं अर्हं समयज्ञाय नमः
७५१. ॐ ह्रीं अर्हं समाहिताय नमः
७५२. ॐ ह्रीं अर्हं सुस्थिताय नमः
७५३. ॐ ह्रीं अर्हं स्वास्थभाजे नमः
७५४. ॐ ह्रीं अर्हं स्वस्थाय नमः

७५५. ॐ ह्रीं अर्हं नीरजस्काय नमः
७५६. ॐ ह्रीं अर्हं निरुद्धवाय नमः
७५७. ॐ ह्रीं अर्हं अलेपाय नमः
७५८. ॐ ह्रीं अर्हं निष्कलंकात्मने नमः
७५९. ॐ ह्रीं अर्हं वीतरागाय नमः
७६०. ॐ ह्रीं अर्हं गतस्पृहाय नमः
७६१. ॐ ह्रीं अर्हं वश्येन्द्रियाय नमः
७६२. ॐ ह्रीं अर्हं विमुक्तात्मने नमः
७६३. ॐ ह्रीं अर्हं निःसपत्नाय नमः
७६४. ॐ ह्रीं अर्हं जितेन्द्रियाय नमः
७६५. ॐ ह्रीं अर्हं प्रशान्ताय नमः
७६६. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तधामर्षये नमः
७६७. ॐ ह्रीं अर्हं मंगलाय नमः
७६८. ॐ ह्रीं अर्हं मलघ्ने नमः
७६९. ॐ ह्रीं अर्हं अनघाय नमः
७७०. ॐ ह्रीं अर्हं अनीदृशे नमः
७७१. ॐ ह्रीं अर्हं उपमा भूताय नमः
७७२. ॐ ह्रीं अर्हं दिष्टये नमः
७७३. ॐ ह्रीं अर्हं दैवाय नमः
७७४. ॐ ह्रीं अर्हं अगोचराय नमः
७७५. ॐ ह्रीं अर्हं अमूर्त्ताय नमः
७७६. ॐ ह्रीं अर्हं मूर्तिमते नमः
७७७. ॐ ह्रीं अर्हं एकाय नमः
७७८. ॐ ह्रीं अर्हं नैकाय नमः
७७९. ॐ ह्रीं अर्हं नानैकतत्त्वदृशे नमः
७८०. ॐ ह्रीं अर्हं अध्यात्मगम्याय नमः
७८१. ॐ ह्रीं अर्हं अगम्यात्मने नमः
७८२. ॐ ह्रीं अर्हं योगविदे नमः
७८३. ॐ ह्रीं अर्हं योगवन्दिताय नमः
७८४. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वत्रगाय नमः
७८५. ॐ ह्रीं अर्हं सदाभाविने नमः
७८६. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिकालविषयार्थदृशे नमः
७८७. ॐ ह्रीं अर्हं शंकराय नमः
७८८. ॐ ह्रीं अर्हं शंवदाय नमः
७८९. ॐ ह्रीं अर्हं दान्ताय नमः
७९०. ॐ ह्रीं अर्हं दमिने नमः
७९१. ॐ ह्रीं अर्हं क्षान्तिपरायणाय नमः
७९२. ॐ ह्रीं अर्हं अधिपाय नमः
७९३. ॐ ह्रीं अर्हं परमानन्दाय नमः
७९४. ॐ ह्रीं अर्हं परात्मज्ञाय नमः
७९५. ॐ ह्रीं अर्हं परात्पराय नमः
७९६. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगद् वल्लभाय नमः
७९७. ॐ ह्रीं अर्हं अभ्यर्च्याय नमः
७९८. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगन्मंगलोदयाय नमः
७९९. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगत्पतिपूजांघ्रये नमः
८००. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोकाग्रशिखामणये नमः

दोहा – बृहद बृहस्पत्यादि शत्, नामों का व्याख्यान।
करके पूजें भाव से, पाएँ सम्यक् ज्ञान।।

ॐ ह्रीं अर्हं बृहद बृहस्पत्यादि त्रिलोकाग्र शिखामणयन्त्य शत् नाम धरार्हत् परमेष्ठिने नमो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।



## 9. नवम शतकः

८०१. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिकाल दर्शिने नमः
८०२. ॐ ह्रीं अर्हं लोकेशाय नमः
८०३. ॐ ह्रीं अर्हं लोकधात्रे नमः
८०४. ॐ ह्रीं अर्हं दृढव्रताय नमः
८०५. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वलोकातिगाय नमः
८०६. ॐ ह्रीं अर्हं पूज्याय नमः
८०७. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वलोकैक-सारथये नमः
८०८. ॐ ह्रीं अर्हं पुराणाय नमः
८०९. ॐ ह्रीं अर्हं पुरुषाय नमः
८१०. ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वाय नमः
८११. ॐ ह्रीं अर्हं कृतपूर्वांग विस्ताराय नमः
८१२. ॐ ह्रीं अर्हं आदिदेवाय नमः
८१३. ॐ ह्रीं अर्हं पुराणाद्याय नमः
८१४. ॐ ह्रीं अर्हं पुरुदेवाय नमः
८१५. ॐ ह्रीं अर्हं अधिदेवतायै नमः
८१६. ॐ ह्रीं अर्हं युगमुख्याय नमः
८१७. ॐ ह्रीं अर्हं युगज्येष्ठाय नमः
८१८. ॐ ह्रीं अर्हं युगादिस्थिति देशकाय नमः
८१९. ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणवर्णाय नमः
८२०. ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणाय नमः
८२१. ॐ ह्रीं अर्हं कल्याय नमः
८२२. ॐ ह्रीं अर्हं कल्याण लक्षणाय नमः
८२३. ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणप्रकृतये नमः
८२४. ॐ ह्रीं अर्हं दीप्त कल्याणात्मने नमः
८२५. ॐ ह्रीं अर्हं विकल्मषाय नमः
८२६. ॐ ह्रीं अर्हं विकलंकाय नमः
८२७. ॐ ह्रीं अर्हं कलातीताय नमः
८२८. ॐ ह्रीं अर्हं कलिलघ्नाय नमः
८२९. ॐ ह्रीं अर्हं कलाधराय नमः
८३०. ॐ ह्रीं अर्हं देवदेवाय नमः
८३१. ॐ ह्रीं अर्हं जगन्नाथाय नमः
८३२. ॐ ह्रीं अर्हं जगद्बन्धवे नमः
८३३. ॐ ह्रीं अर्हं जगद्विभवे नमः
८३४. ॐ ह्रीं अर्हं जगद्धितैषिणे नमः
८३५. ॐ ह्रीं अर्हं लोकज्ञाय नमः
८३६. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वगाय नमः
८३७. ॐ ह्रीं अर्हं जगदग्रजाय नमः
८३८. ॐ ह्रीं अर्हं चराचरगुरवे नमः
८३९. ॐ ह्रीं अर्हं गोप्याय नमः
८४०. ॐ ह्रीं अर्हं गूढात्मने नमः
८४१. ॐ ह्रीं अर्हं गूढगोचराय नमः
८४२. ॐ ह्रीं अर्हं सद्योजाताय नमः
८४३. ॐ ह्रीं अर्हं प्रकाशात्मने नमः
८४४. ॐ ह्रीं अर्हं ज्वलज्ज्वलन सप्रभाय नमः
८४५. ॐ ह्रीं अर्हं आदित्यवर्णाय नमः
८४६. ॐ ह्रीं अर्हं भर्माभाय नमः
८४७. ॐ ह्रीं अर्हं सुप्रभाय नमः
८४८. ॐ ह्रीं अर्हं कनकप्रभाय नमः
८४९. ॐ ह्रीं अर्हं सुवर्णवर्णाय नमः
८५०. ॐ ह्रीं अर्हं रुक्माभाय नमः
८५१. ॐ ह्रीं अर्हं सूर्यकोटिसम प्रभाय नमः
८५२. ॐ ह्रीं अर्हं तपनीयनिभाय नमः
८५३. ॐ ह्रीं अर्हं तुंगाय नमः

८५४. ॐ ह्रीं अर्हं बालार्काभाय नमः
८५५. ॐ ह्रीं अर्हं अनलप्रभाय नमः
८५६. ॐ ह्रीं अर्हं सन्ध्याभ्रबभ्रवे नमः
८५७. ॐ ह्रीं अर्हं हेमाभाय नमः
८५८. ॐ ह्रीं अर्हं तप्तचामीकरच्छवये नमः
८५९. ॐ ह्रीं अर्हं निष्टप्तकनकच्छायाय नमः
८६०. ॐ ह्रीं अर्हं कनत्काञ्चन-सन्निभाय नमः
८६१. ॐ ह्रीं अर्हं हिरण्यवर्णाय नमः
८६२. ॐ ह्रीं अर्हं स्वर्णाभाय नमः
८६३. ॐ ह्रीं अर्हं शातकुम्भ-निभप्रभाय नमः
८६४. ॐ ह्रीं अर्हं द्युम्नाभाय नमः
८६५. ॐ ह्रीं अर्हं जातरूपाभाय नमः
८६६. ॐ ह्रीं अर्हं तप्त जाम्बूनद द्युतये नमः
८६७. ॐ ह्रीं अर्हं सुधौत-कलधौतश्रिये नमः
८६८. ॐ ह्रीं अर्हं प्रदीप्ताय नमः
८६९. ॐ ह्रीं अर्हं हाटकद्युतये नमः
८७०. ॐ ह्रीं अर्हं शिष्टेष्टाय नमः
८७१. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्टिदाय नमः
८७२. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्टाय नमः
८७३. ॐ ह्रीं अर्हं स्पष्टाय नमः
८७४. ॐ ह्रीं अर्हं स्पष्टाक्षराय नमः
८७५. ॐ ह्रीं अर्हं क्षमाय नमः
८७६. ॐ ह्रीं अर्हं शत्रुघ्नाय नमः
८७७. ॐ ह्रीं अर्हं अप्रतिघाय नमः
८७८. ॐ ह्रीं अर्हं अमोघाय नमः
८७९. ॐ ह्रीं अर्हं प्रशास्त्रे नमः
८८०. ॐ ह्रीं अर्हं शासित्रे नमः
८८१. ॐ ह्रीं अर्हं स्वभुवे नमः
८८२. ॐ ह्रीं अर्हं शान्तिनिष्ठाय नमः
८८३. ॐ ह्रीं अर्हं मुनिज्येष्ठाय नमः
८८४. ॐ ह्रीं अर्हं शिवतातये नमः
८८५. ॐ ह्रीं अर्हं शिवप्रदाय नमः
८८६. ॐ ह्रीं अर्हं शान्तिदाय नमः
८८७. ॐ ह्रीं अर्हं शान्तिकृते नमः
८८८. ॐ ह्रीं अर्हं शान्तये नमः
८८९. ॐ ह्रीं अर्हं कान्तिमते नमः
८९०. ॐ ह्रीं अर्हं कामितप्रदाय नमः
८९१. ॐ ह्रीं अर्हं श्रेयोनिधये नमः
८९२. ॐ ह्रीं अर्हं अधिष्ठानाय नमः
८९३. ॐ ह्रीं अर्हं अप्रतिष्ठाय नमः
८९४. ॐ ह्रीं अर्हं प्रतिष्ठिताय नमः
८९५. ॐ ह्रीं अर्हं सुस्थिराय नमः
८९६. ॐ ह्रीं अर्हं स्थावराय नमः
८९७. ॐ ह्रीं अर्हं स्थाणवे नमः
८९८. ॐ ह्रीं अर्हं प्रथीयसे नमः
८९९. ॐ ह्रीं अर्हं प्रथिताय नमः
९००. ॐ ह्रीं अर्हं पृथवे नमः

दोहा – त्रिकाल दर्श्यादिक रहे, श्री जिन के सौ नाम।
मंत्र सभी जो हैं विशद, ध्याएँ श्रेष्ठ ललाम।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिकाल दर्श्यादि पृथवेयन्त्य शत् नाम धरार्हत् परमेष्ठिने नमो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।



## 10. दशम शतकः

९०१. ॐ ह्रीं अर्हं दिग्वाससे नमः
९०२. ॐ ह्रीं अर्हं वात रसनाय नमः
९०३. ॐ ह्रीं अर्हं निर्ग्रन्थेशाय नमः
९०४. ॐ ह्रीं अर्हं निरंबराय नमः
९०५. ॐ ह्रीं अर्हं निःकिञ्चिनाय नमः
९०६. ॐ ह्रीं अर्हं निराशंसाय नमः
९०७. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानचक्षुषे नमः
९०८. ॐ ह्रीं अर्हं अमोमुहाय नमः
९०९. ॐ ह्रीं अर्हं तेजोराशये नमः
९१०. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तौजसे नमः
९११. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानाब्धये नमः
९१२. ॐ ह्रीं अर्हं शीलसागराय नमः
९१३. ॐ ह्रीं अर्हं तेजोमयाय नमः
९१४. ॐ ह्रीं अर्हं अमितज्योतिषे नमः
९१५. ॐ ह्रीं अर्हं ज्योतिर्मूर्तये नमः
९१६. ॐ ह्रीं अर्हं तमोपहाय नमः
९१७. ॐ ह्रीं अर्हं जगच्चूडामणये नमः
९१८. ॐ ह्रीं अर्हं दीप्ताय नमः
९१९. ॐ ह्रीं अर्हं शंवते नमः
९२०. ॐ ह्रीं अर्हं विघ्नविनायकाय नमः
९२१. ॐ ह्रीं अर्हं कलिघ्नाय नमः
९२२. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मशत्रुघ्नाय नमः
९२३. ॐ ह्रीं अर्हं लोकालोक-प्रकाशकाय नमः
९२४. ॐ ह्रीं अर्हं अनिद्रालवे नमः
९२५. ॐ ह्रीं अर्हं अतन्द्रालवे नमः
९२६. ॐ ह्रीं अर्हं जागरुकाय नमः
९२७. ॐ ह्रीं अर्हं प्रमामयाय नमः
९२८. ॐ ह्रीं अर्हं लक्ष्मी पतये नमः
९२९. ॐ ह्रीं अर्हं जगज्ज्योतिषे नमः
९३०. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मराजाय नमः
९३१. ॐ ह्रीं अर्हं प्रजाहिताय नमः
९३२. ॐ ह्रीं अर्हं मुमुक्षवे नमः
९३३. ॐ ह्रीं अर्हं बन्धमोक्षज्ञाय नमः
९३४. ॐ ह्रीं अर्हं जिताक्षाय नमः
९३५. ॐ ह्रीं अर्हं जितमन्मथाय नमः
९३६. ॐ ह्रीं अर्हं प्रशान्तर सशैलूषाय नमः
९३७. ॐ ह्रीं अर्हं भव्यपेटक नायकाय नमः
९३८. ॐ ह्रीं अर्हं मूलकर्त्रे नमः
९३९. ॐ ह्रीं अर्हं अखिलज्योतिषे नमः
९४०. ॐ ह्रीं अर्हं मलघ्नाय नमः
९४१. ॐ ह्रीं अर्हं मूलकारणाय नमः
९४२. ॐ ह्रीं अर्हं आप्ताय नमः
९४३. ॐ ह्रीं अर्हं वागीश्वराय नमः
९४४. ॐ ह्रीं अर्हं श्रेयसे नमः
९४५. ॐ ह्रीं अर्हं श्रायसोक्तये नमः
९४६. ॐ ह्रीं अर्हं निरुक्तवाचे नमः
९४७. ॐ ह्रीं अर्हं प्रवक्त्रे नमः
९४८. ॐ ह्रीं अर्हं वचसामीशाय नमः
९४९. ॐ ह्रीं अर्हं मारजिते नमः
९५०. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभावविदे नमः
९५१. ॐ ह्रीं अर्हं सुतनवे नमः
९५२. ॐ ह्रीं अर्हं तनुनिर्मुक्ताय नमः
९५३. ॐ ह्रीं अर्हं सुगताय नमः
९५४. ॐ ह्रीं अर्हं हतदुर्नयाय नमः
९५५. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशाय नमः
९५६. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीश्रित पादाब्जाय नमः
९५७. ॐ ह्रीं अर्हं वीतभिये नमः

९५८. ॐ ह्रीं अर्हं अभयंकराय नमः
९५९. ॐ ह्रीं अर्हं उत्सन्नदोषाय नमः
९६०. ॐ ह्रीं अर्हं निर्विघ्नाय नमः
९६१. ॐ ह्रीं अर्हं निश्चलाय नमः
९६२. ॐ ह्रीं अर्हं लोकवत्सलाय नमः
९६३. ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तराय नमः
९६४. ॐ ह्रीं अर्हं लोकपतये नमः
९६५. ॐ ह्रीं अर्हं लोकचक्षुषे नमः
९६६. ॐ ह्रीं अर्हं अपारधिये नमः
९६७. ॐ ह्रीं अर्हं धीरधिये नमः
९६८. ॐ ह्रीं अर्हं बुद्ध सन्मार्गाय नमः
९६९. ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धाय नमः
९७०. ॐ ह्रीं अर्हं सूनृत पूतवाचे नमः
९७१. ॐ ह्रीं अर्हं प्रज्ञापारमिताय नमः
९७२. ॐ ह्रीं अर्हं प्राज्ञाय नमः
९७३. ॐ ह्रीं अर्हं यतये नमः
९७४.ॐ ह्रीं अर्हं नियमितेन्द्रियाय नमः
९७५. ॐ ह्रीं अर्हं भदन्ताय नमः
९७६. ॐ ह्रीं अर्हं भद्रकृते नमः
९७७. ॐ ह्रीं अर्हं भद्राय नमः
९७८. ॐ ह्रीं अर्हं कल्पवृक्षाय नमः
९७९. ॐ ह्रीं अर्हं वरप्रदाय नमः
९८०. ॐ ह्रीं अर्हं समुन्मूलित कर्मारये नमः
९८१. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मकाष्ठा शुशुक्षणये नमः
९८२. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मण्याय नमः
९८३. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मठाय नमः
९८४. ॐ ह्रीं अर्हं प्रांशवे नमः
९८५. ॐ ह्रीं अर्हं हेयादेय विचक्षणाय नमः
९८६. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तशक्तये नमः
९८७. ॐ ह्रीं अर्हं अच्छेद्याय नमः
९८८. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिपुरारये नमः
९८९. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोचनाय नमः
९९०. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिनेत्राय नमः
९९१. ॐ ह्रीं अर्हं त्र्यम्बकाय नमः
९९२. ॐ ह्रीं अर्हं त्र्यक्षाय नमः
९९३. ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञान वीक्षणाय नमः
९९४. ॐ ह्रीं अर्हं समन्तभद्राय नमः
९९५. ॐ ह्रीं अर्हं शान्तारये नमः
९९६. ॐ ह्रीं अर्हं धर्माचार्याय नमः
९९७. ॐ ह्रीं अर्हं दयानिधये नमः
९९८. ॐ ह्रीं अर्हं सूक्ष्मदर्शिने नमः
९९९. ॐ ह्रीं अर्हं जितानंगाय नमः
१०००. ॐ ह्रीं अर्हं कृपालवे नमः
१००१. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मदेशकाय नमः
१००२. ॐ ह्रीं अर्हं शुभंयवे नमः
१००३.ॐ ह्रीं अर्हं सुखसाद्भूताय नमः
१००४. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यराशये नमः
१००५. ॐ ह्रीं अर्हं अनामयाय नमः
१००६. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मपालाय नमः
१००७. ॐ ह्रीं अर्हं जगत्पालाय नमः
१००८. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मसाम्राज्य नायकाय नमः

दोहा – दिग्वासादिक नाम हैं, एक सौ आठ विशेष।
पूजें ध्याएँ जो 'विशद', पाएँ सुख अवशेष।।

ॐ ह्रीं अर्हं दिग्वासादि धर्म साम्राज्य नायकान्ताष्टोत्तर शत् नाम धरार्हत् परमेष्ठिने नमो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।



जाप्य :- ॐ ह्रीं अर्हं अष्टोत्तर सहस्रनाम धारक श्री चतुर्विंशंति तीर्थंकर जिनेन्द्राय नमः।

## समुच्चय जयमाला

दोहा – सहस्रनाम द्वारा किया, जिनवर का गुणगान।
जयमाला गाते यहाँ, पाने शिव सोपान।।

चौपाई

जय-जय तीन लोक के स्वामी, त्रिभुवनपति हे अन्तर्यामी!।
पूर्व भवों में पुण्य कमाया, पुण्योदय से नरभव पाया।।
तन निरोग पाकर के भाई, सुकुल प्राप्त कीन्हा सुखदायी।
तुमने उर में ज्ञान जगाया, अतिशय सम्यक् दर्शन पाया।।
भाव सहित संयम अपनाए, भव्य भावना सोलह भाए।
तीर्थंकर प्रकृति शुभ पाई, स्वर्गों के सुख भोगे भाई।।
गर्भादिक कल्याणक पाए, रत्न इन्द्र भारी बरषाए।
छह महीने पहले से भाई, देवों ने नगरी सजवाई।।
जन्म कल्याणक प्रभु जी पाये, सहस्राष्ट शुभ गुण प्रगटाए।
गुणानुरूप नाम भी पाए, सहस्र आठ संख्या में गाए।।
नाम सभी सार्थक हैं भाई, सहस्र नाम की महिमा गाई।
तीर्थंकर पदवी के धारी, नामों के होते अधिकारी।।
मंत्र सभी यह नाम कहाए, मंत्रों को श्रद्धा से गाए।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाए, जो भी इनका ध्यान लगाए।।
महिमा का न पार है भाई, श्री जिनेन्द्र की है प्रभुताई।
जगत प्रकाशी जिन कहलाए, ज्ञानादर्श सुगुण प्रभु पाए।।
श्री जिनेन्द्र रत्नत्रय पाए, अनंत चतुष्टय प्रभु प्रगटाए।
धर्म चक्र शुभ प्रभु जी धारे, समवशरणयुत किए विहारे।।
समवशरण शुभ देव बनाते, श्री जिनवर की महिमा गाते।
प्राणी अतिशय पुण्य कमाते, पूजा अर्चा कर हर्षाते।।
जय-जयकार लगाते भाई, यह है जिनवर की प्रभुताई।
पुरुषोत्तम यह नाम कहाए, उनकी यह शुभ माल बनाए।।
अर्पित करते तव पद स्वामी, करते हम तव चरण नमामी।
नाथ! प्रार्थना यही हमारी, दो आशीष हमें त्रिपुरारी।।

रत्नत्रय की निधि हम पाएँ, शिवपथ के राही बन जाएँ।
शिव स्वरूप हम भी प्रगटाएँ, शिवपुर जाकर शिवसुख पाएँ।।

दोहा – सहस्रनाम का कंठ में, धारें कंठाहार।
विशद गुणों को प्राप्त कर, पावें शिव का द्वार।।

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टाधिक सहस्रनाम धारक श्री जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – जिन गुण के अनुपम सुमन, जग में रहे महान्।
पुष्पांजलि कर पूजते, पाने पद निर्वाण।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

## सहस्रनाम की आरती

आज करें हम सहस्रनाम की, आरति मंगलकारी।
दीप जलाकर लाए घृत के, जिनवर के दरबार...।।
हो जिनवर – हम सब उतारें मंगल आरती..................
सहस्रनाम के धारी जिनवर, सहस्र गुणों को पाते।
एक हजार आठ गुणधारी, तीर्थंकर कहलाते।। हो जिनवर...।।1।।
श्री जिनेन्द्र के तन में नौ सौ, व्यंजन विस्मयकारी।
सुगुण एक सौ आठ जिनेश्वर, पाते अतिशयकारी।। हो जिनवर...।।2।।
भूत भविष्यत वर्तमान के, जिन इसके अधिकारी।
अनन्त चतुष्टय के धारी जिन, होते मंगलकारी।। हो जिनवर...।।3।।
सार्थक नाम प्राप्त करते हैं, तीर्थंकर अविकारी।
अनुक्रम से बन जाते हैं जो, शिवपद के अधिकारी।। हो जिनवर...।।4।।
सहस्रनाम की पूजा अर्चा, करने को हम आए।
'विशद' जगे सौभाग्य हमारे, चरण-शरण को पाए।। हो जिनवर...।।5।।

## सर्व आचार्य परमेष्ठी अर्घ्य

पूर्वाचार्यश्री कुन्द कुन्दादि, आदिसागराचार्य प्रवर।
महावीर कीर्ति वीर सिन्धु शिव, विमल सिन्धु सन्मति सागर।।
भरत सिन्धु कुन्थुसागर जी, विद्यानन्द विद्यासागर।
पुष्पदन्त गुरु विराग सिन्धुपद, वन्दन विशद मेरा सादर।।

ॐ ह्रूँ सर्व आचार्य परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



# श्री सहस्रनाम चालीसा

दोहा – अर्हंत्सिद्धाचार्य पद, उपाध्याय जिन संत।
सहस्रनाम जिनराज के, नमूँ अनन्तानन्त।।

चौपाई

है आकाश अनन्तानन्त, जिसका नहीं है कोई अंत।।1।।
जिसके मध्य है लोकाकाश, भरा है छह द्रव्यों से खास।।2।।
ऊर्ध्व अधो अरु मध्य प्रधान, तीन लोक कहते भगवान।।3।।
मध्य लोक में जम्बू द्वीप, मेरू जम्बू वृक्ष समीप।।4।।
जम्बू द्वीप धातकी खण्ड, पुष्करार्द्ध भी रहा अखण्ड।।5।।
भरतैरावत और विदेह, क्षेत्र कर्म भूमि का एह।।6।।
आर्य खण्ड में रहते आर्य, ऐसा कहते जैनाचार्य।।7।।
उत्सर्पण अवसर्पण काल, भरतैरावत रहे त्रिकाल।।8।।
दुषमा सुषमा काल विशेष, जिसमें चौबिस बनें जिनेश।।9।।
जिन विदेह में रहे त्रिकाल, विद्यमान रहते हर हाल।।10।।
जो भी पुण्य कमाय अतीव, उसका फल वह पावे जीव।।11।।
भव्य भावना सोलह भाय, जीव वही यह पदवी पाय।।12।।
तीर्थंकर प्रकृति का बंध, जो कषाय करते हैं मंद।।13।।
सम्यक् दृष्टी जीव महान, केवली द्विक के पद में आन।।14।।
मिलता है जब कोई निमित्त, भोगों से उठ जाता चित्त।।15।।
भव भोगों से होय विरक्त, शुभ भोगों में हो अनुरक्त।।16।।
सत् संयम पाते शुभकार, लेते महाव्रतों को धार।।17।।
कर्म निर्जरा करें महान, निज आतम का करके ध्यान।।18।।
क्षायक श्रेणी को फिर पाय, अपना केवलज्ञान जगाय।।19।।
त्रिभुवन चूड़ामणि बन जाय, तीर्थंकर के गुण प्रगटाय।।20।।
क्षायिक नव लब्धी कर प्राप्त, बनते जिन तीर्थंकर आप्त।21।।
चिन्तित चिंतामणि कहलाय, कल्पतरू फल वांछित पाय।।22।।
बनते समवशरण के ईश, इन्द्र झुकाते पद में शीश।।23।।
अनन्त चतुष्टय पाते नाथ, पंच कल्याणक भी हों साथ।।24।।
तीन गति से आते जीव, पुण्य कमाते वहा अतीव।।25।।
दिव्य देशना सुनके लोग, मुक्ती पथ का पाते योग।।26।।

भक्ती को आते शत् इन्द्र, सुर-नर-पशु आते अहमिन्द्र।।27।।
परम पिता जगती पति ईश, ऋद्धीधर हे नाथ! ऋशीष।।28।।
युग दृष्टा प्रभु रहे महान, तीर्थोंन्नायक हैं भगवान।।29।।
वाणी में जैनागम सार, अमृत रस की बहती धार।।30।।
भक्त आपके आते द्वार, करते हैं निशदिन जयकार।।31।।
करने से प्रभु का गुणगान, होती है कर्मों की हान।।32।।
महिमा गाकर के सब देव, हर्षित होते सभी सदैव।।33।।
हम भी महिमा गाते नाथ!, चरणों झुका रहे हैं माथ।।34।।
विविध नाम से है गुणगान, सहस्रनाम स्त्रोत महान।।35।।
सहस्रनाम कहलाए स्तोत्र, विशद धर्म का है जो स्त्रोत।।36।।
श्रीमान आदिक हैं सहस्र नाम, को करते हम सतत् प्रणाम।।37।।
पाठ किए हो ज्ञान प्रकाश, विशद गुणों का होय विकास।।38।।
वन्दन करते हम शत् बार, पाने भवोदधी से पार।।39।।
मेरा हो आतम कल्याण, पावें हम भी पद निर्वाण।।40।।

दोहा - चालीसा चालीस दिन, सहस्रनाम का पाठ।
पढ़ते हैं जो भाव से, होते ऊँचे ठाठ।।
ऋद्धि-सिद्धि आनन्द हो, शांती मिले अपार।।
'विशद' ज्ञान पाके मिले, मुक्ति वधू का प्यार।।

ॐ ह्रीं जिन सहस्रनामेभ्यो नमः।

## प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदि सागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीर कीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्य श्री भरत सागराचार्य श्री विराग सागराचार्या जातास्तत् शिष्य आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य- खण्डे भारतदेशे राजस्थान प्रान्ते मध्ये चैत्र मासे शुक्लपक्षे सप्तमी गुरुवासरे अद्य वीर निर्वाण सम्वत् 2541 वि.सं. 2071 विशद जिनसहस्रनाम विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात्।



# श्री सम्मेदशिखर कूट पूजन

स्थापना

नन्दन वन सी छटा निराली, हरियाली है चारों ओर।
खग मृग की किलकारी करती, मन मधुकर को भाव विभोर।।
कण-कण पावन है भूधर का, क्षण-क्षण होते कर्म शमन।
तीर्थ राज सम्मेद शिखर का, करते हैं हम आह्वानन्।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रे अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर सवौषट् आहवानन्। अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितोभव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(ज्ञानोदय छन्द)

ठण्डा गर्म नीर हो कैसा, आग बुझाए यथा-तथा।
पावन तीर्थ क्षेत्र की यात्रा, जन्म मरण की हरे व्यथा।।
शाश्वत तीर्थ क्षेत्र है पावन, श्री सम्मेद शिखर शुभ नाम।
भूधर भू से सिद्ध हुए जो, जिन पद मेरा विशद प्रणाम।।1।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योः नमः जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भ्रमण किया चारों गतियों में, निन्दा की दुर्गन्ध मिली।
सिद्ध क्षेत्र का वन्दन करने, आतम की हर कली खिली।।
शाश्वत तीर्थ क्षेत्र है पावन, श्री सम्मेद शिखर शुभ नाम।
भूधर भू से सिद्ध हुए जो, जिन पद मेरा विशद प्रणाम।।2।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योः नमः संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

वस्त्रों जैसे जीवन बदले, अब हालात बदलना है।
करके सिद्ध क्षेत्र की यात्रा, मोक्ष मार्ग पर चलना है।।
शाश्वत तीर्थ क्षेत्र है पावन, श्री सम्मेद शिखर शुभ नाम।
भूधर भू से सिद्ध हुए जो, जिन पद मेरा विशद प्रणाम।।3।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योः नमः अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव ने हार मानकर, जिन चरणों टेका माथा।
हुए सिद्ध जो सिद्ध भूमि से, गाते हम उनकी गाथा।।

शाश्वत तीर्थ क्षेत्र है पावन, श्री सम्मेद शिखर शुभ नाम।
भूधर भू से सिद्ध हुए जो, जिन पद मेरा विशद प्रणाम।।4।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योः नमः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भड़के भूख भोग से जैसे, घी से आग भड़क जाए।
सिद्धों के चरणों में हमने, क्षुधा हरण को गुण गाए।।
शाश्वत तीर्थ क्षेत्र है पावन, श्री सम्मेद शिखर शुभ नाम।
भूधर भू से सिद्ध हुए जो, जिन पद मेरा विशद प्रणाम।।5।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योः नमः क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन आंधी या तूफानों से, बुझ जाते दीपक अपने।
चेतन दीप जले जिन चरणों, पूर्ण होंय सारे सपने।।
शाश्वत तीर्थ क्षेत्र है पावन, श्री सम्मेद शिखर शुभ नाम।
भूधर भू से सिद्ध हुए जो, जिन पद मेरा विशद प्रणाम।।6।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योः नमः मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की आकुलता सुख दुख, भेद भाव दुख की दात्री।
कर्म धूल सब तजी आपने, पूजें धूप चढ़ा यात्री।।
शाश्वत तीर्थ क्षेत्र है पावन, श्री सम्मेद शिखर शुभ नाम।
भूधर भू से सिद्ध हुए जो, जिन पद मेरा विशद प्रणाम।।7।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योः नमः अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल खाने का फल क्या होता, लोग समझ ना पाते हैं।
फल के त्यागी यही समझ के, शिव फल पर ललचाते हैं।।
शाश्वत तीर्थ क्षेत्र है पावन, श्री सम्मेद शिखर शुभ नाम।
भूधर भू से सिद्ध हुए जो, जिन पद मेरा विशद प्रणाम।।8।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योः नमः मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य प्रभा श्री जिन सिद्धों की, कण-कण में भू पे बिखरे।
वैसे मूल्य अर्घ्य का का क्या हो, फिर भी आत्म रूप निखरे।।



शाश्वत तीर्थ क्षेत्र है पावन, श्री सम्मेद शिखर शुभ नाम।
भूधर भू से सिद्ध हुए जो, जिन पद मेरा विशद प्रणाम।।9।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योः नमः अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

# अर्घ्यावली

दोहा - कल्पतरु के पुष्प ले, पुष्पांजलि वर्षाय।
शास्वत तीरथ राज को, वन्दन कर हर्षाय।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

तीर्थंकर चौबीस के, चौबिस गणी प्रधान।
अर्घ्य चढ़ा वन्दन करें, पाने शिव सोपान।।1।।

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरादि विभिन्न स्थाने मोक्ष प्राप्त सर्व गणधरेभ्यः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

कूट ज्ञानधर से गये, कुन्थुनाथ शिव लोक।
अर्घ्य चढ़ा जिनके चरण, देते हैं हम ढोक।।2।।

ॐ ह्रीं ज्ञानधर कूटतः श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्रादि 96 कोड़ाकोड़ि 96 कोटि 32 लाख 96 हजार 742 मुनि श्रीसम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रात् सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पाए मित्रधर कूट से, नमि जिनवर शिवराज।
अर्घ्य चढ़ा जिनके चरण, वन्दन करते आज।।3।।

ॐ ह्रीं मित्रधर कूटतः श्री नमिनाथ जिनेन्द्रादि 9 कोड़ाकोड़ि 1 अरब 45 लाख 7 हजार 942 मुनि श्रीसम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रात् सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरहनाथ जिनराज का, गाया नाटक कूट।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, जाएँ कर्म से छूट।।4।।

ॐ ह्रीं नाटक कूटतः श्री अरहनाथ जिनेन्द्रादि 99 कोटि 99 लाख 99 हजार 999 मुनि श्रीसम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रात् सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिवपद पाए मल्लि जिन, संबल कूट महान।
अर्घ्य चढ़ा जिनका विशद, करते हम गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं संबल कूटतः श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्रादि 96 कोटि मुनि श्रीसम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रात् सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाए संकुल कूट से, जिन श्रेयांस शिवधाम।
अर्घ्य चढ़ा जिनके चरण, करते विशद प्रणाम।।6।।

ॐ ह्रीं संकुल कूटतः श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्रादि 96 कोड़ाकोड़ि 96 कोटि 96 लाख 9 हजार 542 मुनि श्रीसम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रात् सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पदंत भगवान का, सुप्रभ कूट विशाल।
अर्घ्य चढ़ाते भाव से, वन्दन करें त्रिकाल।।7।।

ॐ ह्रीं सुप्रभ कूटतः श्री पुष्पदंत जिनेन्द्रादि 1 कोड़ाकोड़ि 99 लाख 7 हजार 480 मुनि श्रीसम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रात् सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पद्म प्रभु भगवान का, मोहन कूट विशेष।
अर्चा करते भाव से, पाने निज स्वदेश।।8।।

ॐ ह्रीं मोहन कूटतः श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्रादि 99 कोटि 87 लाख 43 हजार 790 मुनि श्रीसम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रात् सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

निर्जर कूट से पाए शिव, मुनिसुव्रत भगवान।
जिन अर्चा कर जीव कई, किए आत्म कल्याण।।9।।

ॐ ह्रीं निर्जर कूटतः श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्रादि 99 कोड़ाकोड़ि 99 कोटि 99 लाख 999 मुनि श्रीसम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रात् सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

ललित कूट से शिव गये, चन्द्र प्रभु तीर्थेश।
अर्चा करते जिन चरण, देकर अर्घ्य विशेष।।10।।

ॐ ह्रीं ललित कूटतः श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्रादि 984 अरब 72 कोटि 80 लाख 84 हजार 595 मुनि श्रीसम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रात् सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

शिव पाए कैलाश गिरि, से श्री आदि जिनेश।
जिन चरणों की अर्चना, करते भक्त विशेष।।11।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्रादि 10 हजार मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यः श्री कैलाश गिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतलनाथ जिनेन्द्र का, विद्युत वर है कूट।
अर्चा करते जिन चरण, श्रद्धा धारअटूट।12।।

ॐ ह्रीं विद्युतवर कूटतः श्री शीतलनाथ जिनेन्द्रादि 18 कोड़ाकोड़ि 42 कोटि 32 लाख 42 हजार 905 मुनि श्रीसम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रात् सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



कूट स्वयंभू से हुए, जिनानन्त शिवकार।
अर्घ्य चढ़ा जिनके चरण, वन्दू बारम्बार।।13।।

ॐ ह्रीं स्वयंभू कूटतः श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्रादि 96 कोड़ाकोड़ि 70 कोटि 70 लाख 70 हजार 700 मुनि श्रीसम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रात् सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

धवल कूट से शिव गये, जिनवर सम्भवनाथ।
अर्चा करते जिन चरण, ऊपर करके हाथ।।14।।

ॐ ह्रीं धवल कूटतः श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्रादि 9 कोड़ाकोड़ि 12 लाख 42 हजार 500 मुनि श्रीसम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रात् सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पापुर से शिव गये, वासुपूज्य भगवान।
जिनपद करते भाव से, अर्घ्य चढ़ा गुणगान।।15।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्रादि एक सहस्र मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यः श्री चम्पापुर मन्दारगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनन्दन जिनराज का, कूट रहा आनन्द।
जिनकी अर्चा कर विशद, आश्रव होवे मंद।।16।।

ॐ ह्रीं आनंद कूटतः श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्रादि 72 कोड़ाकोड़ि 70 कोटि 70 लाख 42 हजार 700 मुनि श्रीसम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रात् सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष गये श्री धर्म जिन, कूट सुदत्त महान।
जिनकी अर्चा कर मिले, भव्यों को निर्वाण।17।।

ॐ ह्रीं सुदत्त कूटतः श्री धर्मनाथ जिनेन्द्रादि 29 कोड़ाकोड़ि 19 कोटि 9 लाख 9 हजार 765 मुनि श्रीसम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रात् सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

सुमति नाथ जी शिव गये, अविचल कूट है नाम।
जिनके चरणों में विशद, बारम्बार प्रणाम।।18।।

ॐ ह्रीं अविचल कूटतः श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्रादि 1 कोड़ाकोड़ि 84 कोटि 72 लाख 81 हजार 700 मुनि श्रीसम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रात् सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

कूट कुन्दप्रभ शांति जिन, का है जगत प्रसिद्ध।
ऋषियों के पद पूजते, हुए अभी तक सिद्ध।।19।।

ॐ ह्रीं कुन्दप्रभ कूटतः श्री शांतिनाथ जिनेन्द्रादि 9 कोड़ाकोड़ि 9 लाख 9 हजार 999 मुनि श्रीसम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रात् सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावापुर सर मध्य से, हुए वीर जिन सिद्ध।
पूज रहे जिन पाद हम, जो हैं जगत प्रसिद्ध।।20।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्रादि षड्विंशति मुनिश्री पावापुरस्य पद्म सरोवरात् सिद्धक्षेत्रेभ्यो सिद्धपद प्राप्तेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्व जिन शिव गये, कूट प्रभास सुनाम।
मुक्त हुए जो अन्य ऋषि, तिन पद विशद प्रणाम।।21।।

ॐ ह्रीं प्रभास कूटतः श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि 49 कोड़ाकोड़ि 84 कोटि 72 लाख 7 हजार 742 मुनि श्रीसम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रात् सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मुक्ती पाए विमल जिन, कूट कहाए सुवीर।
जिनकी अर्चा हम करें, पाने भव का तीर।।22।।

ॐ ह्रीं सुवीर कूटतः श्री विमलनाथ जिनेन्द्रादि 70 कोड़ाकोड़ि 60 लाख 6 हजार 742 मुनि श्रीसम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रात् सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ति सिद्धवर कूट से, पाए अजित जिनेश।
अर्घ्य चढ़ाते भाव से, श्री जिन चरण विशेष।।23।।

ॐ ह्रीं सिद्धवर कूटतः श्री अजितनाथ जिनेन्द्रादि 1 अरब 80 कोटि 54 लाख मुनि श्रीसम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रात् सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध हुए गिरनार से, नेमिनाथ भगवान।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजते, करके चरण प्रणाम।।24।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्रादि शम्बू प्रद्युम्न अनिरुद्ध इत्यादि 72 कोटि 700 मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यः श्री गिरिनार सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णभद्र शुभ कूट से, पाए जो शिवधाम।
पार्श्वनाथ जिन के चरण, बारम्बार प्रणाम।।25।।

ॐ ह्रीं स्वर्णभद्र कूटतः श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि 82 कोटि 84 लाख 45 हजार 742 मुनि श्रीसम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रात् सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – अर्चा शास्वत तीर्थ की, करते बारम्बार।
पुष्पांजलि करते तथा, देते शांतीधार।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि निर्वाण क्षेत्रेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा–पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जाप :- ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योः नमः।



# जयमाला

दोहा – शाश्वत तीरथ राज है, गिरि सम्मेद महान।
अर्चा करते भाव से , पाने पद निर्वाण।।

छन्द–तामरस

जय जय तीरथ राज नमस्ते, तारण तरण जहाज नमस्ते।
गणधर पद चौबीस नमस्ते, सिद्ध अनन्त ऋषीश नमस्ते।।1।।
प्रथम ज्ञानधर कूट नमस्ते, कूट मित्रधर पूज्य नमस्ते।
नाटक कूट प्रधान नमस्ते, संवल कूट महान नमस्ते।।2।।
संकुल कूट विशेष नमस्ते, सुप्रभ कूट जिनेश नमस्ते।
मोहन कूट पे जाय नमस्ते, निर्जर कूट जिनाय नमस्ते।।3।।
ललित कूट है दूर नमस्ते, अष्टापद भरपूर नमस्ते।
विद्युतवर मनहार नमस्ते, कूट स्वयंभू सार नमस्ते।।4।।
धवल कूट है स्वेत नमस्ते, चम्पापुर जी क्षेत्र नमस्ते।
आनन्द कूट गिरीश नमस्ते, कूट सुदत्त ऋषीश नमस्ते।।5।।
अविचल कूट मुनीश नमस्ते, कूट कुन्दप्रभ शीश नमस्ते।
पावापुर जी क्षेत्र नमस्ते, कूट प्रभास विशेष नमस्ते।।6।।
पावन कूट सुवीर नमस्ते, कूट सिद्धवर तीर नमस्ते।
गिरि गिरनार अटूट नमस्ते, स्वर्णभद्र शुभ कूट नमस्ते।।7।।

दोहा – महिमा तीर्थ सम्मेद गिरि, की है अपरम्पार।
''विशद'' भाव से पूजते, नत हो बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योः नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा – तीर्थराज की वंदना, करके प्रभु गुणगान।
मोक्षमार्ग पर जो बढ़ें, पावें शिव सोपान।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

---

# अर्घ्य

श्री सम्मेदशिखर अष्टापद, चम्पापुर जी गिरि गिरनार।
पावापुर हैं सिद्धक्षेत्र ये, अतिशय क्षेत्र हैं विस्मयकार।।
सिद्ध अनन्तानन्त विशद हैं, तीन लोक में मंगलकार।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर, अष्टापद, चम्पापुर, गिरनार, पावापुर आदि सर्व निर्वाण क्षेत्रेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

# श्री सम्मेदशिखर अड़तालिसा

दोहा – शाश्वत तीरथराज है, शिखर सम्मेद महान्।
भक्ति भाव से कर रहे, यहाँ विशद गुणगान।।
नव कोटी से देव नव, का करते हम ध्यान।
जाकर तीरथ राज से, पाएँ हम निर्वाण।।

(चौपाई)

शाश्वत तीर्थराज शुभकारी, गिरि सम्मेद शिखर मनहारी।।1।।
कण कण पावन जिसका पाया, मुनियों ने जहाँ ध्यान लगाया।।2।।
संत यहाँ आकर तप कीन्हे, निज चेतन में चित्त जो दीन्हे।।3।।
सौ सौ इन्द्र यहाँ पर आते, प्रभु के पद में शीश झुकाते।।4।।
हर युग के तीर्थंकर आते, मुक्तिवधू को यहाँ से पाते।।5।।
कालदोष के कारण जानो, इस युग का अन्तर पहिचानो।।6।।
बीस जिनेश्वर यहाँ पे आए, गिरि सम्मेद से मुक्ती पाए।।7।।
इन्द्रराज स्वर्गों से आए, रत्न कांकिणी साथ में लाए।।8।।
चरण उकेरे जिन के भाई, जिनकी महिमा है सुखदायी।।9।।
प्रथम टोंक गणधर की जानो, चौबिस चरण बने शुभ मानो।।10।।
द्वितीय कूट ज्ञानधर भाई, कुन्थुनाथ जिनवर की गाई।।11।।
कूट मित्रधर नमि जिन पाए, कर्म नाश कर मोक्ष सिधाए।।12।।
नाटककूट रही मनहारी, अरहनाथ की मंगलकारी।।13।।
संबलकूट की महिमा गाते, मल्लिनाथ जहाँ पूजे जाते।।14।।
संकुल कूट श्रेष्ठ कहलाए, श्री श्रेयांस मुक्ती पद पाए।।15।।
सुप्रभ कूट की महिमा न्यारी, पुष्पदंत जिन की मनहारी।।16।।
मोहन कूट पद्म प्रभु पाए, जन-जन के मन को जो भाए।।17।।
पूज्य कूट निर्जर फिर आए, मुनिसुव्रत जी शिवपद पाए।।18।।
ललितकूट चन्द्रप्रभु स्वामी, हुए यहाँ से अन्तर्यामी।।19।।
विद्युतवर है कूट निराली, शीतल जिन की महिमा शाली।।20।।
कूट स्वयंप्रभ आगे आए, जिन अनन्त की महिमा गाए।।21।।
धवलकूट फिर आगे जानो, संभव जिन की जो पहिचानो।।22।।
आनन्द कूट पे बन्दर आते, अभिनन्दन जिन के गुण गाते।।23।।
कूट सुदत्त श्रेष्ठ शुभ गाते, धर्मनाथ जिन पूजे जाते।।24।।



अविचल कूट पे प्राणी जाते, सुमतिनाथ पद पूज रचाते।।25।।
कुन्दकूट पर प्राणी सारे, शान्तिनाथ पद चिह्न पखारे।।26।।
कूट सुवीर पे जो भी जाए, विमलनाथ पद दर्शन पाए।।27।।
श्रीसुपार्श्व जिन का शुभकारी, कूट प्रभाष है मंगलकारी।।28।।
सिद्धकूट पर सुर-नर आते, अजितनाथ पद शीश झुकाते।।29।।
कूट स्वर्णप्रभ मंगलकारी, पार्श्वप्रभु का है मनहारी।।30।।
पक्षी भी तन्मय हो जाते, मानो प्रभु की महिमा गाते।।31।।
दूर-दूर से श्रावक आते, शुद्ध भाव से महिमा गाते।।32।।
नंगे पैरों चढ़ते जाते, प्रभु के पद में ध्यान लगाते।।33।।
भाँति-भाँति की भजनावलियाँ, वीतराग भावों की कलियाँ।।34।।
पुण्यवान ही दर्शन पावें, नरक पशु गति बंध नशावें।।35।।
तीर्थ वन्दना करने जावें, कर्मों के बन्धन कट जावें।।36।।
देव वन्दना करने आवें, चमत्कार कई इक दिखलावें।।37।।
भूले को भी राह दिखावें, दुखियों के सब दुःख मिटावें।।38।।
कभी श्वान बनकर आ जाते, डोली वाले बनकर आते।।39।।
गिरवर तुमरी है बलिहारी, भाव सहित गाते हैं सारी।।40।।
तुमरे गुण सारा जग गाए, सूर्य चाँद महिमा दिखलाए।।41।।
सन्त मुनि अर्हन्त निराले, शिव पदवी को पाने वाले।।42।।
गिरि सम्मेद शिखर की महिमा, बतलाने आये हैं गरिमा।।43।।
तुम हो सबके तारणहारे, दीन हीन सब पापी तारे।।44।।
आप स्वर्ग मुक्ती के दाता, ज्ञानी अज्ञानी के त्राता।।45।।
गिरि की धूल लगाकर माथे, भाव सहित हम गाथा गाते।।46।।
हमको मुक्ती मार्ग दिखाओ, जन्म मरण से मुक्ति दिलाओ।।47।।
सेवक बनकर के हम आए, पद में सादर शीश झुकाए।।48।।

दोहा – 'विशद' भाव से जो पढ़े, चालीसा चालीस।
सुख-शांती पावे अतुल, बने श्री का ईश।।
महिमा शिखर सम्मेद की, गाएँ मंगलकार।
उसी तीर्थ से ही स्वयं, पावें मुक्ती द्वार।।

जापः- ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो नमः।

# चौंसठ ऋद्धि के अर्घ

दोहा - चौंसठ ऋद्धी के यहाँ, चढ़ा रहे हैं अर्घ्य।
पुष्पांजलि करते प्रथम, पाने सुपद अनर्घ्य।।
(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

1 ॐ ह्रीं अवधिज्ञान बुद्धि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
2 ॐ ह्रीं मनः पर्ययज्ञान बुद्धि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
3 ॐ ह्रीं केवलज्ञान बुद्धि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
4 ॐ ह्रीं कोष्ठ बुद्धि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
5 ॐ ह्रीं बीज बुद्धि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
6 ॐ ह्रीं पदानुसारिणी बुद्धि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
7 ॐ ह्रीं संभिन्न श्रोतृत्व बुद्धि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
8 ॐ ह्रीं दूरास्वादित्व बुद्धि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
9 ॐ ह्रीं दूर स्पर्शत्व बुद्धि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
10 ॐ ह्रीं दूरघ्राणत्व बुद्धि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
11 ॐ ह्रीं दूरश्रवणत्व बुद्धि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
12 ॐ ह्रीं दूरदर्शित्व बुद्धि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
13 ॐ ह्रीं दश पूर्वित्व बुद्धि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
14 ॐ ह्रीं चतुर्दश पूर्वित्व बुद्धि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
15 ॐ ह्रीं अष्टांग महानिमित्त बुद्धि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
16 ॐ ह्रीं प्रज्ञा श्रमण बुद्धि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
17 ॐ ह्रीं प्रत्येक बुद्ध बुद्धि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
18 ॐ ह्रीं वादित्व बुद्धि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
19 ॐ ह्रीं अणिमा विक्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
20 ॐ ह्रीं महिमा विक्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
21 ॐ ह्रीं लघिमा विक्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
22 ॐ ह्रीं गरिमा विक्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
23 ॐ ह्रीं प्राप्ति विक्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



24 ॐ ह्रीं प्रकाम्य विक्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
25 ॐ ह्रीं ईशत्व विक्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
26 ॐ ह्रीं वशित्व विक्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
27 ॐ ह्रीं अप्रतिघात विक्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
28 ॐ ह्रीं अंतर्धान विक्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
29 ॐ ह्रीं कामरूप विक्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
30 ॐ ह्रीं नभ चारण क्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
31 ॐ ह्रीं जल चारण क्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
32 ॐ ह्रीं जंघा चारण क्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
33 ॐ ह्रीं पत्र चारण क्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
34 ॐ ह्रीं अग्नि चारण क्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
35 ॐ ह्रीं मेघ चारण क्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
36 ॐ ह्रीं तंतु चारण क्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
37 ॐ ह्रीं ज्योतिष चारण क्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
38 ॐ ह्रीं मरुच्चारण क्रिया ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
39 ॐ ह्रीं उग्रतपः ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
40 ॐ ह्रीं दीप्ततपः ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
41 ॐ ह्रीं तप्ततपः ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
42 ॐ ह्रीं महातपः ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
43 ॐ ह्रीं घोरतपः ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
44 ॐ ह्रीं घोरपराक्रम तपः ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
45 ॐ ह्रीं अघोर ब्रह्मचारित्व तपः ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
46 ॐ ह्रीं मनोबल ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
47 ॐ ह्रीं वचनबल ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
48 ॐ ह्रीं कायबल ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
49 ॐ ह्रीं आमर्शौषधि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

50 ॐ ह्रीं क्ष्वेलौषधि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
51 ॐ ह्रीं जल्लौषधि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
52 ॐ ह्रीं मलौषधि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
53 ॐ ह्रीं विप्रुषौषधि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
54 ॐ ह्रीं सर्वौषधि ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
55 ॐ ह्रीं मुखनिर्विष ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
56 ॐ ह्रीं दृष्टि निर्विष ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
57 ॐ ह्रीं आशीर्विष रस ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
58 ॐ ह्रीं दृष्टिर्विष रस ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
59 ॐ ह्रीं क्षीरस्रावि रस ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
60 ॐ ह्रीं मधुस्रावि रस ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
61 ॐ ह्रीं अमृतस्रावि रस ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
62 ॐ ह्रीं सर्पिस्रावि रस ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
63 ॐ ह्रीं अक्षीण महानस ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
64 ॐ ह्रीं अक्षीण महालय ऋद्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(ज्ञानोदय छन्द)

बुद्धि विक्रिया और सुतप बल, चारण औषधि रस अक्षीण।
चौंसठ भेद हैं इनके जिनगणि, पावें मुनिवर ज्ञान प्रवीण।।
भव्य जीव जिन अर्चा करके, पाएँ अतिशय पुण्य निधान।
विशद भाव से अर्चा करते, पाने को हम पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं चतुषष्ठिः ऋद्धिभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## आचार्य 108 श्री विशदसागर जी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ हूँ क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी यतिवरेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



# परमेष्ठी वाचक मन्त्रः

परमेष्ठियादिभिर्-मंत्रैः, षड्विंशति-मितैरथ।
इज्यावशिष्टहव्याद्यैः, कुर्वे तावतिथाहुतिः।।

१. ॐ सत्यजाताय नमः स्वाहा।
२. ॐ अर्हज्जाताय नमः स्वाहा।
३. ॐ परमजाताय नमः स्वाहा।
४. ॐ परमार्हताय नमः स्वाहा।
५. ॐ परमरूपाय नमः स्वाहा।
६. ॐ परमतेजसे नमः स्वाहा।
७. ॐ परमगुणाय नमः स्वाहा।
८. ॐ परमस्थानाय नमः स्वाहा।
९. ॐ परमयोगिने नमः स्वाहा।
१०. ॐ परमभाग्याय नमः स्वाहा।
११. ॐ परमर्द्धये नमः स्वाहा।
१२. ॐ परमप्रसादाय नमः स्वाहा।
१३. ॐ परमकांक्षिताय नमः स्वाहा।
१४. ॐ परमविज्ञानाय नमः स्वाहा।
१५. ॐ परमदर्शनाय नमः स्वाहा।
१६. ॐ परमसुखाय नमः स्वाहा।
१७. ॐ परमवीर्याय नमः स्वाहा।
१८. ॐ परमविजयाय नमः स्वाहा।
१९. ॐ परमसर्वज्ञाय नमः स्वाहा।
२०. ॐ अर्हंते नमः स्वाहा।
२१. ॐ परमेष्ठिने नमो नमः स्वाहा।
२२. ॐ परमनेत्रे नमः स्वाहा।

२३. ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे। त्रैलौक्यविजय त्रैलौक्यविजय। धर्ममूर्ते धर्ममूर्ते। धर्मनेमे धर्मनेमे स्वाहा।

# आशीर्वाद मन्त्रः

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधिमरणं भवतु।

विश्वशांति एवं कल्याण की भावना से निम्न शांतिमंत्रों की आहुति दे सकते हैं।

# वृहच्छान्ति आहुति–मन्त्रः

नव्येन गव्येन घृतेन सम्यक्-स्रुवार्पिते-नाहुतिभिः कृताभिः।
होमं विधस्यामि समित्समान, संख्याभिरत्यूर्जितशान्ति-मन्त्रैः।। 67।।प्र.ति.

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं।।

चत्तारि मंगलं - अरिहंता मंगलं सिद्धा मंगलं साहू मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरिहंते सरणं पव्वज्जामि सिद्धे सरणं पव्वज्जामि साहू सरणं पव्वज्जामि केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि। ॐ ह्रीं अनादिमूलमन्त्रेभ्यो नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु-कुरु स्वाहा॥१॥

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोष-कल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्यु-विनाशनाय सर्व- परकृच्छ्रक्षुद्रोपद्रवनाशनाय सर्वक्षामडामर-विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु-कुरु स्वाहा॥२॥

ॐ ह्रूं क्षूं फट् किरिटं किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्त्र-खण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमन्त्रान् भिन्द भिन्द क्षः क्षः ह्रूं सर्वशान्ति कुरु-कुरु स्वाहा॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहत-विद्यायै णमो अरिहंताणं ह्रौं सर्वविघ्नशान्तिर्भवतु स्वाहा॥४॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो नमः सर्वशान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा॥५॥

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं श्रीवृषभनाथतीर्थंकराय नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु-कुरु स्वाहा॥६॥

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूं उ ह्रौं सा ह्रः जगदातप-विनाशनाय ह्रीं शान्तिनाथाय नमः सर्वशान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय अशोकतरु-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय अशोकतरु-सत्प्रातिहार्य-शोभन-पदप्रदाय ह्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय सुरपुष्पवृष्टि - सत्प्रातिहार्य - मण्डिताय सुरपुष्पवृष्टि - सत्प्रातिहार्य - शोभन - पदप्रदाय भ्म्ल्व्र्यूं - बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा॥ ९॥



ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय दिव्यध्वनि-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय दिव्यध्वनि-सत्प्रातिहार्य-शोभन-पदप्रदाय म्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा॥१०॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय चामरोज्ज्वल-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय चामरोज्जवल - सत्प्रातिहार्य - शोभन - पदप्रदाय र्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा॥११॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय सिंहासन-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय सिंहासन-सत्प्रातिहार्य-शोभन-पदप्रदाय घ्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा॥१२॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय भामण्डल-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय भामण्डल-सत्प्रातिहार्य-शोभन-पदप्रदाय झ्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा॥१३॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय दुन्दुभि-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय दुन्दुभि-सत्प्रातिहार्य- शोभन-पदप्रदाय स्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा॥१४॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय छत्रत्रय-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय छत्रत्रय-सत्प्रातिहार्य- शोभन-पदप्रदाय ख्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा॥१५॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय प्रातिहार्याष्ट-सहिताय बीजाष्ट मण्डन-मण्डिताय सर्वविघ्नशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा॥१६॥

तव भक्ति - प्रसादाल्लक्ष्मी - पुर - राज्यगेह - पदभ्रष्टोपद्रव-दारिद्रोद्भवोपद्रव-स्वचक्र-परचक्रोद्-भवोपद्रव-प्रचण्ड-पवनानल-जलोद्-भवोपद्रव-शाकिनी-डाकिनी-भूत-पिशाच-कृतोपद्रव-दुर्भिक्षव्यापार-वृद्धिरहितोपद्रवाणां विनाशनं भवतु स्वाहा॥१७॥

ॐ ह्रीं सम्पूर्णकल्याण मंगलरूप-मोक्षपुरुषार्थश्च भवतु स्वाहा॥१८॥

# पुण्याहवाचन–1

ॐ पुण्याहं पुण्याहं लोकोद्योतनकरा अतीतकालसंजाता निर्वाणसागर–प्रभृत–यश्चतुर्विंशति–भूत–परमदेवाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्।

ॐ सम्प्रतिकालसम्भवा वृषभादि वीरान्ताश्चतुर्विंशति–वर्तमान् परमदेवाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्।

ॐ भविष्यत्कालाभ्युदय–प्रभवा महापद्मादि–चतुर्विंशति–भविष्यत्परम देवाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्।

ॐ त्रिकालवर्ति–परमधर्माभ्युदयाः सीमन्धर–प्रभृतयो विदेह क्षेत्रगत विंशति–परमदेवाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्।

ॐ वृषभसेनादिगणधरदेवाः वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्।

ॐ सप्तर्द्धि–विशोभिताः कुन्दकुन्दाद्यनेक–दिगम्बरसाधुचरणाः वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्।

इह वान्य–नगर–ग्राम–देवतामनुजाः सर्वे गुरु–भक्ता जिनधर्मपरायणा भवन्तु। दानतपोवीर्यानुष्ठानं नित्यमेवास्तु। सर्वजिनभक्तानां धनधान्यैश्वर्यवलद्युतियशः–प्रमोदोत्सवाः प्रवर्धन्ताम्। तुष्टिरस्तु। पुष्टिरस्तु। वृद्धिरस्तु। कल्याणमस्तु। अविघ्नमस्तु। आयुष्यमस्तु। आरोग्यमस्तु। कर्मसिद्धिरस्तु। इष्टसम्पत्तिरस्तु। काममाङ्गल्योत्सवाः सन्तु। पापानि शाम्यन्तु। घोराणि शाम्यन्तु। पुण्यं वर्धताम्। धर्मो वर्धताम्। श्रीवर्धताम्। कुलगोत्रे चाभिवर्धताम्। स्वस्ति भद्रं चास्तु इवीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा। श्रीमज्जिनेन्द्र–चरणारविन्देष्वानन्द–भक्तिः सदाऽस्तु, सदाऽस्तु, सदाऽस्तु।

---

# विसर्जनम्

ज्ञानतोऽज्ञानतो वाऽपि शास्त्रोक्तं न कृतं मया।
तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादाज्जिनेश्वर।।1।।
आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनम्।
विसर्जनं न जानामि क्षमस्व परमेश्वर।।2।।
मन्त्र–हीनं क्रिया–हीनं द्रव्य–हीनं तथैव च।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव! रक्ष रक्ष जिनेश्वर।।3।।
आहूता ये पुरा देवा लब्धभागा यथाक्रमम्।
ते मयाभ्यर्चिता भक्त्या सर्वे यांतु यथास्थितिम्।।4।।

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

**ॐ आं क्रों ह्रीं अस्मिन् सहस्त्रनाम पूजा विधान समये आगन्तुक सर्वेदेवाः स्वस्थाने गच्छतः गच्छतः जः जः जः अपराधक्षमापनं भवतुः।**



# श्री भक्तामर विधान

## "माण्डला"

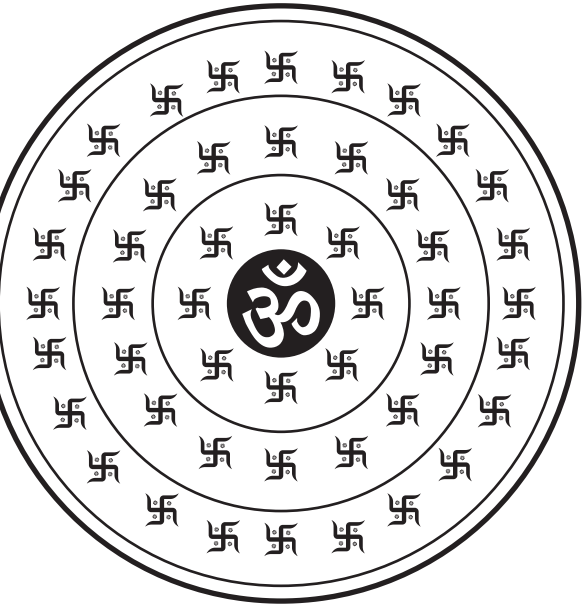

मध्य में – ॐ
प्रथम वलय – 8
द्वितीय वलय – 16
तृतिय वलय – 24
कुल वलय – 48 अर्घ्य

**रचयिता :**

**प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज**

# विशद सिद्धार्चना

समस्तघातिमर्द्दनं, सुरेन्द्रवृन्दमुज्ज्वलं।।
नवीनमालतीदलैर्-, यजामि मुक्तिसिद्धये।। 1।।
गुणाष्टकाद्यलंकृतं, समस्तसिद्धनायकम्।
नमेरुपारिजातकैर्-यजामि मुक्तिसिद्धये।। 2।।
अलंघ्यमुत्तमाधिपं, दयालुसूरिवृन्दकम्।
प्रफुल्लमल्लिपुष्पकैर्-यजामि मुक्तिसिद्धये।।3।।
समस्त शास्त्रदेशकं, चरित्रपात्रदेशकम्।
विकासि केतकीदलैर्-यजामि मुक्तिसिद्धये।।4।।
चिदर्थभावनापरं, सुसाधुसाधुवन्दकं।
सुवर्णवर्णचम्पकैर्-यजामि मुक्तिसिद्धये।। 5।।
धर्म सौख्यदायकं, अभीष्टफल प्रदायकं।
कनेर पुष्पसद्यकैर्-यजामि मुक्तिसिद्धये।। 6।।
अरिष्ट कर्म नाशकम्-ज्ञान विशद भाषकम्।
कदम्बकुन्द पुष्पकैर्-यजामि मुक्तिसिद्धये।। 7।।
जिनेन्द्र बिम्ब लायकं, विशिष्ट सिद्धिदायकम्।
गुलाब पद्म पुष्पकैर्-यजामि मुक्तिसिद्धये।। 8।।
'विशद' जैन मंदिरं,-मुक्ति निलय सुन्दरं।
मुनीन्द्र वृन्द्र सेवतैर्:-यजामि मुक्तिसिद्धये।। 9।।

# श्री भक्तामर महिमा

श्री भक्तामर का पाठ, कर्म का काठ, जलावन कारी, भव व्याधी मैटनहारी।
अन्तर में मेरे मोह जगा, जन्मादि जरा का रोग लगा
न कोई हमको मिला, जगत उपकारी भव व्याधी मैटनहारी...1
भक्तामर भक्ति का कारण है, जो भव का रोग निवारण है
यह तीन लोक में गाया, मंगलकारी, भव व्याधी मैटनहारी...2
श्री मानतुंग मुनिवर ज्ञानी, को कैद किए कुछ अज्ञानी
तब आदिनाथ को ध्याए, गुरु अनगारी, भव व्याधी मैटनहारी...3
जो पाठ करें व्रत ध्यान करें, उसका संकट सब पूर्ण हरें
सुखशांती पाता है, पावन व्रतधारी, भव व्याधी मैटनहारी...4
जो ''विशद'' ज्ञान का दाता है, जीवों को अभय प्रदाता है
शाश्वत मुक्ती का, हेतू है शुभकारी, भव व्याधी मैटनहारी...5



# श्री आदिनाथ स्तोत्र

ऋषभ जिनेन्द्र शतेन्द्र सुपूजित, अतिशय कारी पुण्य जगाए।
आदि जिनेश सुरेश कहे, सुर इन्द्र विशद जयकार लगाए।।
धर्म प्रवर्तन आप किए, षट् कर्मों का सन्देश सुनाए।
आदि प्रभो! जय आदि प्रभो!, ग्रह शांति करें गुरु दोष नशाए।।1।।
पुण्य सुयोग से पूरव भव में, वज्रजंघ चक्री पद पाए।
ऋद्धि धनी मुनि को प्रभु जी, वन में अतिशय आहार कराए।।
वानर सूकर शेर नकुल यह, अनुमोदन कर हर्ष मनाए।
आदि प्रभो!..............................।। 2।।
भोग भूमिज यह जीव बने सब, स्वर्ग लोक को आप सिधाए।
स्वर्गों के सुख भोग किए फिर, मर्त्य लोक में जन्म सुपाए।।
तीर्थेश बने वृषभेष सभी, पशु सुत बन के तिन गृह उपजाए।
आदि प्रभो!.................................।। 3।।
चक्री से मुनिराज बने फिर, सोलह कारण भाव विचारे।
कल्पातीत अतीत रहा प्रभु, सर्वार्थ सिद्धी में भव धारे।।
तेंतीस सागर आप रहे फिर, चयकर अंतिम गर्भ में आए।
आदि प्रभो!.................................।। 4।।
श्री गज बैल मृगेन्द्र रमा द्वय, माल दिवाकर चन्द्र प्रकाशी।
मीन कलश ह्द सिन्धु सिंहासन, देव विमान फणीन्द्र निवासी।।
रत्न-राशि निर्धूम अग्नी शुभ, सोलह सपने मात को आए।
आदि प्रभो!.................................।। 5।।
नगर अयोध्या जन्म लिए तब, हस्ति सजा हँसते मुस्कराए।
चाले सनासन, नाचे छमाछम, गद्गद् हो मद छोड़ के आए।।
भव्य महा अभिषेक किए सुर, महिमा को जिसकी कह पाए।
आदि प्रभो!.......................................।। 6।।
कंकण कुण्डल आदिक ले जिन, बालक को शचि ने पहराए।
इन्द्र स्वयं ही बालक बन प्रभु, के संग क्रीड़ा करने आए।।
युवराज बने, जिनराज महा, मण्डलेश्वर के पद को प्रभु पाए।
आदि प्रभो!...................................।। 7।।
यह संसार असार विचार, सुकेशलुंच कर संयम पाए।
भेद विज्ञान जगाए प्रभु! तब, छैः महिने का ध्यान लगाए।।
कर्म किए चउ घात विशद! फिर, पावन केवल ज्ञान जगाए।
आदि प्रभो!...................................।। 8।।
करके विहार दिग्देश देशान्तर, अष्टापद गिरि पे प्रभु आए।
योग निरोध किए चौदह दिन, कर्म अघाती आप नशाए।।
नित्य निरंजन ज्ञान शरीरी, सिद्ध शिला पे धाम बनाए।
आदि प्रभो!....................................।। 9।।

# श्री भक्तामर विधान पूजा

स्थापना

**दोहा – आदिनाथ की भक्ति का, है पावन सोपान।**
**भक्तामर स्तोत्र का, करते हम आह्वान।।**

ॐ ह्रीं भक्तामर स्तोत्राराध्य श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर सवौषट् आह्वानन्।
अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितोभव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौपाई)

**नीर क्षीर सा यहाँ चढ़ाएँ, भव रोगों से मुक्ती पाएँ।**
**भक्ती से भक्तामर ध्याएँ, आदिनाथ की महिमा गाएँ।।1।।**

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**सुरभित गंध बनाकर लाए, भव संताप पूर्णक्षय जाए।**
**भक्ती से भक्तामर ध्याएँ, आदिनाथ की महिमा गाएँ।।2।।**

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**अक्षत श्रेष्ठ धुवाकर लाए, अक्षय पद हमको मिल जाए।**
**भक्ती से भक्तामर ध्याएँ, आदिनाथ की महिमा गाएँ।।3।।**

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

**पुष्प सुगन्धित हम यह लाए, काम रोग हरने को आए।**
**भक्ती से भक्तामर ध्याएँ, आदिनाथ की महिमा गाएँ।।4।।**

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**शुभ नैवेद्य बनाकर लाए, क्षुधा नाश मेरी हो जाए।**
**भक्ती से भक्तामर ध्याएँ, आदिनाथ की महिमा गाएँ।।5।।**

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**रत्नमयी यह दीप जलाए, मोह महातम मम् क्षय जाए।**
**भक्ती से भक्तामर ध्याएँ, आदिनाथ की महिमा गाएँ।।6।।**

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**धूप अग्नि में हम प्रजलाएँ, अष्टकर्म से मुक्ती पाएँ।**
**भक्ती से भक्तामर ध्याएँ, आदिनाथ की महिमा गाएँ।।7।।**

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**सरस चढ़ाते हैं फल भाई, जो हैं महा मोक्ष फलदायी।**
**भक्ती से भक्तामर ध्याएँ, आदिनाथ की महिमा गाएँ।।8।।**

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**अर्घ्य विशद हम यहाँ चढ़ाएँ, पद अनर्घ्य हम भी पा जाएँ।**
**भक्ती से भक्तामर ध्याएँ, आदिनाथ की महिमा गाएँ।।9।।**

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



**सोरठा – चढ़ा रहे यह नीर, प्रासुक है जो श्रेष्ठतम।**
**मिट जाए भव पीर, काल अनादी जो विशद।।**

शान्तये शांतिधारा...

**सोरठा – पुष्प सुगन्धीवान, चढ़ा रहे हम भाव से।**
**करते हैं गुणगान, मुक्ती पाने के लिए।।**

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

## जयमाला

**दोहा – अर्चा करने हम यहाँ, आज हुए वाचाल।**
**भक्तामर स्तोत्र की, गाते हैं जयमाल।।**

(नरेन्द्र छन्द)

**आदि ब्रह्म आदीश्वर स्वामी, आदि सृष्टि के जो कर्ता।**
**तीर्थंकर पदवी के धारी, मुक्ति वधू के जो भर्ता।।**
**नाभिराय सुत मरुदेवी के, भाग्य जगाए हे स्वामी!।**
**जन्म लिए प्रभु नगर अयोध्या, त्रिभुवन पति अन्तर्यामी।।1।।**
**धर्म प्रवर्तन करने वाले, हैं षट् कर्मों के दाता।**
**मोक्ष मार्ग के उपदेष्टा प्रभु, जन जन के तुम हो त्राता।।**
**महिमा का ना पार आपकी, सुर नर मुनि यह गाते हैं।**
**भव्य जीव प्रभु भक्ती का फल, अनायास ही पाते हैं।।2।।**
**मानतुंग मुनिवर को राजा, कारागृह में जब डाले।**
**भक्तामर के अतिशय से तब, टूटे अड़तालिस ताले।।**
**पाठ रचाकर भक्तामर का, मुनिवर जी जयवंत हुए।**
**भक्तों के भक्तामर पढ़के, रोग शोक दुख अंत हुए।।3।।**
**आदिनाथ स्तोत्र मूलतः, भक्तामर यह कहलाए।**
**मानतुंग मुनिवर भक्तीकर, आदिनाथ जिनको ध्याए।।**
**अक्षर प्रथम स्तोत्र में है यह, भक्तामर अतएव कहा।**
**भक्ती की महिमा दर्शायक, पावन यह स्तोत्र रहा।।4।।**

**दोहा – सुख शांती सौभाग्य हो, पढ़कर यह स्तोत्र।**
**मुक्ती पद का मूलतः, रहा विशद जो स्रोत।।**

ॐ ह्रीं भक्तामर स्तोत्राराध्य श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोहा – ऋषभदेव के भक्त बन, मानतुंग मुनिराज।**
**भक्तामर रचना किए, पूजें जिन पद आज।।**

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

# भक्तामर स्तोत्र – प्रत्येकार्घ्य

## मूल रचयिता– आचार्य श्री मानतुंग जी

## (पद्यानुवाद– आचार्य श्री विशदसागर जी)

दोहा

**वृषभनाथ वृषभेष जिन, हो वृष के अवतार।**
**तारण तरण जहाज तव, करो 'विशद' भवपार।।**

**( इति मण्डलस्योपरिपुष्पांजलि क्षिपेत् )**

(बसन्त तिलका छन्द)

**भक्तामर-प्रणत मौलि-मणि-प्रभाणा-**
**मुद्योतकं-दलित-पाप-तमो वितानम्।**
**सम्यक्-प्रणम्य-जिन-पाद-युगं-युगादा-**
**वालम्बनं-भवजले-पततां-जनानाम्।।1।।**

चौपाई

**भक्त अमर नत मुकुट छवि देय, गहन पाप तम को हर लेय।**
**भव सर पतित को शरण विशाल, 'विशद' नमन जिन पद नत भाल।।1।।**

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो जिणाणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

**यः संस्तुतः सकल-वाङ् मय-तत्त्व-बोधा-**
**दुद्भूत-बुद्धि-पटुभिः सुर-लोक-नाथैः।**
**स्तोत्रैर् - जगत् - त्रितय - चित्त - हरै - रुदारैः**
**स्तोष्ये किलाह-मपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम्।।2।।**

**द्वादशांग ज्ञाता सुर देव, जिनवर की करते नित सेव।**
**शब्द अर्थ पद छन्द बनाय, थुति करता हूँ मैं सिरनाय।।2।।**

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो ओहि जिणाणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

**बुद्ध्या विनाऽपि विबुधार्चित-पाद-पीठ,**
**स्तोतुं समुद्यत-मतिर्-विगत-त्रपोऽहम्।**
**बालं विहाय जल-संस्थित-मिन्दु-बिम्ब-**
**मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम।।3।।**



**मंद बुद्धि हूँ अति अज्ञान, करता हूँ प्रभु का गुणगान।**
**जल में चन्द्र बिम्ब को पाय, बालक मन को ही ललचाय।।3।।**

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो परमोहि जिणाणं- ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

**वक्तुं गुणान् गुण-समुद्र! शशांक-कान्तान्,**
**कस्ते क्षमः सुरगुरु-प्रतिमोऽपि बुद्ध्या।**
**कल्पान्त - काल - पवनोद्धत - नक्र - चक्रं**
**को वा तरीतु-मल-मम्बु-निधिं भुजाभ्याम्।।4।।**

**गुणसागर प्रभु गुण की खान, सुर गुरु न कर सके बखान।**
**क्षुब्ध जंतु युत प्रलय अपार, सागर तैर करे को पार।।4।।**

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

**सोऽहं तथापि तव भक्ति-वशान्मुनीश,**
**कर्तुं स्तवं विगत-शक्ति-रपि प्रवृत्तः।**
**प्रीत्यात्म-वीर्य-मवि-चार्य मृगी मृगेन्द्रं**
**नाभ्येति किं निज-शिशोः परि-पाल-नार्थम्।।5।।**

**फिर भी 'विशद' भक्ति उर लाय, शक्ति हीन थुति करूँ बनाय।**
**हिरण शक्ति क्या छोड. न जाय, मृग पति ढिग निज शिशु न बचाय।।5।।**

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो अणंतोहि जिणाणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

**अल्पश्रुतं श्रुत-वतां परि-हास-धाम,**
**त्वद्-भक्ति-रेव मुखरी-कुरुते बलान्माम्।**
**यत्कोकिलः किल-मधौ मधुरं विरौति,**
**तच्चाम्र-चारु-कलिका-निक-रैक-हेतु।।6।।**

**मैं अल्पज्ञ हास्य का पात्र, भक्ति हेतु है पुलकित गात।**
**आम्रकली लख ऋतु बसंत, कोयल कुहुके कर पुलकंत।।6।।**

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो कोट्ठबुद्धीणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

**त्वत्संस्तवेन भव-सन्तति सन्निबद्धं,**
**पापं क्षणात्-क्षय-मुपैति शरीर-भाजाम्।**
**आक्रान्त-लोक-मलि-नील-मशेष-माशु,**
**सूर्यांशु-भिन्न-मिव शार्वर-मन्ध कारम्।।7।।**

पाप कर्म होता निर्मूल, तव थुति जो करता अनुकूल।
सघन तिमिर ज्यों रवि को पाय, क्षण में शीघ्र नष्ट हो जाय।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो बीजबुद्धीणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मत्वेति नाथ! तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनु-धियापि तव प्रभावात्।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनी-दलेषु
मुक्ता-फल-द्युति-मुपैति ननूद-बिन्दुः।।8।।

थुति करता हूँ मैं मति मंद, मन हरता मन्त्रों का छंद।
कमल पत्र पर जल कण जाय, ज्यों मुक्ता की शोभा पाय।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो पदानुसारिणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

दोहा - आदिनाथ की अर्चना, करते मंगलकार।
भाव विशुद्धी के लिए, वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं अष्टदल कमलाधिपतये श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आस्तां तव स्तवन-मस्त-समस्त-दोषं,
त्वत्-संकथाऽपि जगतां दुरि-तानि हन्ति।
दूरे सहस्त्र-किरणः कुरुते प्रभैव,
पद्मा-करेषु जलजानि विकास-भांजि।।9।।

तव संस्तुति की कथा विशाल, नाम काटता कर्म कराल।
दिनकर रहे बहुत ही दूर, कमल खिलाता सर में पूर।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो संभिन्नसोदारणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

नात्यद्-भुतं भुवन-भूषण भूतनाथ!,
भूतैर्-गुणैर्-भुवि भवन्त-मभिष्टु-वन्तः।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्या-श्रितं य इह नात्म समं करोति।।10।।

भवि थुतिकर तुम सम हो जाय, या में क्या अचरज कहलाय?
आश्रित करें न आप समान, ऐसे प्रभु का क्या सम्मान?।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो सयंबुद्धीणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।



दृष्ट्वा भवन्त-मनि-मेष-विलोक-नीयम्,
नान्यत्र तोष-मुपयाति जनस्य चक्षुः।
पीत्त्वा पयः शशिकर-द्युति-दुग्ध-सिन्धोः
क्षारं जलं जल-निधे-रसितुं क इच्छेत्।।11।।

नयन आपके तन को देख, और नहीं फिर लगते नेक।
क्षीर नीर जो करता पान, क्षार नीर क्यों करे पुमान?।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो पत्तेय बुद्धीणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

यैः शान्त-राग-रुचिभिः परमाणु-भिस्त्वं,
निर्मापितस्-त्रिभुवनैक-ललामभूत!।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्याम्,
यत्ते समान-मपरं न हि रूप-मस्ति।।12।।

प्रभु तुम शांत मनोहर रूप, परमाणू सम्पूर्ण अनूप।
तुम सा नहीं है जग में कोय, दर्शन की अभिलाषा होय।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो बोहिय बुद्धीणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

वक्त्रं क्व ते सुर-नरो-रग-नेत्र-हारि,
निःशेष-निर्जित-जगत्-त्रितयोप-मानम्।
बिम्बं कलंक-मलिनं क्व निशा-करस्य,
यद्-वासरे भवति पाण्डु-पलाश-कल्पम्।।13।।

तव अनुपम मुख है भगवान, निरुपम है अति शोभामान।
चन्द्रकांति दिन में छिप जाय, तव मुख शोभा निशदिन पाय।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो उजुमदीणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

सम्पूर्ण-मण्डल-शशांक-कला-कलाप,
शुभ्रा गुणास्-त्रिभुवनं तव लंघयन्ति।
ये संश्रितास्-त्रिजग-दीश्वर नाथ!-मेकम्,
कस्तान् निवार-यति संचरतो यथेष्टम्।।14।।

'विशद' गुणों के प्रभु भण्डार, तीन लोक को करते पार।
एक नाथ हो आश्रयवान, उन विचरण को रोके आन।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो विउलमदीणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

चित्रं कि-मत्र यदि ते त्रिदशांग-नाभिर्
नीतं मना-गपि मनो न विकार-मार्गम्।
कल्पान्त-काल-मरुता चलिता-चलेन,
किं मन्द-राद्रि-शिखरं चलितं कदाचित्।।15।।

**अचल चलावें प्रलय समीर, मेरु न हिलता हो अतिधीर।**
**सुर तिय न कर सके विकार, मन प्रभु का स्थिर अविकार।।15।।**

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो दसपुव्वीणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

निर्धूम - वर्ति - रप - वर्जित - तैल - पूरः
कृत्स्नं जगत्-त्रय-मिदं प्रकटी-करोषि।
गम्यो न जातु मरुतां चलिता-चलानाम्,
दीपोऽपरस्त्व-मसि नाथ! जगत्-प्रकाशः।।16।।

**जले तेल बाती बिन श्वाँस, त्रिभुवन का प्रभु करें प्रकाश।**
**दीप धूप बिन जलता जाय, तूफाँ उसको बुझा न पाय।।16।।**

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो चउदसपुव्वीणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

नास्तं कदाचि-दुप-यासि न राहु-गम्यः
स्पष्टी-करोषि सहसा युगपज्जगन्ति।
नाम्भो - धरो - दर - निरुद्ध - महा - प्रभावः
सूर्याति-शायि-महि-मासि मुनीन्द्र! लोके।।17।।

**ग्रसे राहु न होते अस्त, प्रभु जी रवि से अधिक प्रशस्त।**
**मेघ ढकें न अती प्रकाश, ज्ञान भानु हो अद्भुत खास।।17।।**

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो अट्ठंग महाणिमित्त' कुसलाणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

नित्यो - दयं दलित - मोह - महान्ध - कारं,
गम्यं न राहु-वदनस्य न वारि-दानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्ज - मनल्प - कान्ति,
विद्यो-तयज्-जग-दपूर्व-शशांक-बिम्बम्।।18।।

**उदित नित्य मुख जो तमहार, मेघ राहु से है विनिवार।**
**सौम्य मुखाम्बुज चन्द्र समान, लोक प्रकाशी कांति महान।।18।।**

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो विउव्व इड्ढिपत्ताणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।



किं शर्वरीषु शशि-नाह्नि विवस्वता वा,
युष्मन्-मुखेन्दु-दलितेषु तमःसु नाथ!।
निष्पन्न-शालि-वन-शालिनि जीव-लोके,
कार्यं कियज्-जलधरैर्-जलभार-नम्रैः।।19।।

**तमहर तव मुख चन्द्र महान, कहाँ करे निशदिन शशिभान।**
**खेत में ज्यों पक जाये धान, जलधर वर्षा है निष्काम।।19।।**

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो विज्जाहराणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृताव-काशं,
नैवं तथा हरि-हरादिषु नायकेषु।
तेजः महामणिषु याति यथा महत्त्वं,
नैवं तु काच-शकले किरणा-कुलेऽपि।।20।।

**शोभे ज्ञान तुम्हारे पास, हरि हर में न उसका वास।**
**कांति महामणि में जो होय, कम्ब में होती क्या वह सोय?।।20।।**

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो चारणाणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मन्ये वरं हरि-हरादय एव दृष्टा
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोष-मेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन् मनो हरति नाथ! भवान्तरेऽपि।।21।।

**देखे हरि हरादि कई देव, तुम से आज मिले जिनदेव!।**
**श्रद्धा हृदय जगी तव पाय, अन्य देव अब नहीं सुहाय।।21।।**

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो पण्ण समणाणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्व-दुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र-रश्मिम्,
प्राच्येव दिग्-जनयति स्फुर-दंशु-जालम्।।22।।

**शतनारी शत सुत उपजाय, तुम समान कोई न पाय।**
**रवि का पूरब में अवतार, तारागण के कई आधार।।22।।**

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो आगास गामीणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

त्वा-मा-मनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्य-वर्ण-ममलं तमसः पुरस्तात्।
त्वा-मेव सम्य-गुप-लभ्य जयन्ति मृत्युम्,
नान्यः शिवः शिव-पदस्य मुनीन्द्र! पन्थाः।।23।।

तुमको परम पुरुष मुनि माने, तमहर अमल सूर्यसम जाने।
मृत्युंजय हो प्रभु को पाय, शरण छोड़ जन जगत भ्रमाय।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो आसीविसाणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

त्वा-मव्ययं विभु-मचिन्त्य-मसंख्य-माद्यं,
ब्रह्माणमीश्वर - मनन्त - मनंग - केतुम्।
योगीश्वरं विदित - योग - मनेक - मेकं
ज्ञान-स्वरूप-ममलं प्रवदन्ति सन्तः।।24।।

भोगाव्यय असंख्य विभु ईश्वर, अचिन्त्य आद्य ब्रह्मा योगीश्वर।
अनेक ज्ञानमय अमल अनंत, कामकेतु इक कहते संत।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो दिट्ठि विसाणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

आदिम तीर्थंकर हुए, आदिनाथ जिननाथ।
करके जिनकी अर्चना, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं षोड्स दल कमलाधिपतये श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बुद्धस्त्व-मेव विबुधार्चित-बुद्धि-बोधात्,
त्वं शंकरोऽसि भुवन-त्रय-शंकरत्वात्।
धातासि धीर! शिव-मार्ग-विधेर्-विधानाद्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन्! पुरुषोत्तमोऽसि।।25।।

बुध विबुधार्चित बुद्ध महान, शंकर सुखकारी भगवान।
ब्रह्मा शिवपथ दाता नाथ!, सर्वश्रेष्ठ पुरुषोत्तम साथ।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो उग्गतवाणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

तुभ्यं नमस्-त्रिभुव-नार्ति-हराय नाथ!,
तुभ्यं नमः क्षिति-तलामल-भूषणाय!।
तुभ्यं नमस्-त्रिजगतः परमेश्वराय!,
तुभ्यं नमो जिन! भवोदधि-शोषणाय।।26।।



त्रिभुवन दुखहर तुम्हें प्रणाम! भूतल भूषण तुम्हें प्रणाम!।
त्रिभुवन स्वामी तुम्हें प्रणाम! भवसर शोषक तुम्हें प्रणाम!।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो दित्त तवाणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणै-रशेषैस्,
त्वं संश्रितो निरवकाश-तया मुनीश!।
दोषै - रुपात्त - विविधाश्रय - जात - गर्वैः,
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचि-दपी-क्षितोऽसि।।27।।

शरण में आये सब गुण आन, विस्मय क्या कोइ मिला न थान?
मुख न देखें स्वप्न में दोष, सारे जग में प्रभु निर्दोष।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो तत्त तवाणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

उच्चै - रशोक - तरु - संश्रित - मुन्मयूख
माभाति रूप - ममलं भवतो नितान्तम्।
स्पष्टोल्लसत्-किरण-मस्त-तमो-वितानं,
बिम्बं रवे-रिव पयोधर-पार्श्व-वर्ति।।28।।

तरु अशोक तल में भगवान, उज्ज्वल तन अति शोभामान।
मेघ निकट दिनकर के होय, उस भांती दिखते प्रभु सोय।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो महातवाणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

सिंहासने मणि-मयूख-शिखा-विचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनका-वदातम्।
बिम्बं वियद्-विलस-दंशु-लता-वितानम्,
तुंगो-दयाद्रि-शिर-सीव सहस्र-रश्मेः।।29।।

मणिमय सिंहासन पर देव, तव तन शोभे स्वर्णिम एव।
रवि का उदयाचल पर रूप, उदित सूर्य सम दिखे स्वरूप।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो घोर तवाणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

कुन्दा - वदात - चल - चामर - चारु - शोभम्,
विभ्राजते तव वपुः कल-धौत-कान्तम्।
उद्यच्छशांक - शुचि - निर्झर - वारिधार
मुच्चैस्तटं-सुरगिरे-रिव शात-कौम्भम्।।30।।

ढुरते चामर शुक्ल विशेष, स्वर्णिम शोभित है तव भेष।
ज्यों मेरू पर बहती धार, स्वर्णमयी पर्वत मनहार।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो घोर गुणाणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

छत्र-त्रयं तव विभाति शशांक-कान्त-
मुच्चैः स्थितं स्थगित-भानुकर-प्रतापम्।
मुक्ताफल-प्रकर-जाल-विवृद्ध-शोभम्,
प्रख्या-पयत् त्रिजगतः परमेश्वरत्वम्।।31।।

तीन छत्र तिय लोक समान, मणिमय शशि सम शोभावान।
सूर्य ताप का करे विनाश, श्री जिन के गुण करें प्रकाश।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो घोर परक्कमाणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

गम्भीर - तार - रव - पूरित - दिग्विभागस्
त्रैलोक्य-लोक-शुभ-संगम-भूति-दक्षः।
सद्-धर्मराज-जय-घोषण-घोषकः सन्,
खे दुन्दुभिर्-ध्वनति ते यशसः प्रवादी।।32।।

दश दिशि ध्वनि गूँजें गम्भीर, जय घोषक जिनवर की धीर।
तीन लोक में अति सुखदाय, सुयश दुन्दुभि बाजा गाय।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो घोरगुण बंभयारीणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मन्दार - सुन्दर - नमेरु - सुपारि - जात
सन्तान-कादि-कुसुमोत्कर-वृष्टि-रुद्धा।
गन्धोद-बिन्दु-शुभ-मन्द-मरुत्-प्रपाता,
दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा।।33।।

मंद मरुत गंधोदक सार, सुरगुरु सुमन अनेक प्रकार।
दिव्य वचन श्री मुख से खिरें, पुष्प वृष्टि नभ से ज्यों झरें।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो आमोसहि पत्ताणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

शुम्भत्-प्रभा-वलय-भूरि-विभा-विभोस्ते,
लोक-त्रये द्युतिमतां द्युति-मा-क्षिपन्ती।
प्रोद्यद् - दिवाकर - निरन्तर - भूरि - संख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशा-मपि सोम-सौम्याम्।।34।।



त्रिजग कांति फीकी पड़ जाय, भामण्डल की शोभा पाय।
चन्द्र कांति सम शीतल होय, सारे जग का आतप खोय।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो खेल्लोसहि पत्ताणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

स्वर्गा - पवर्ग - गम - मार्ग - विमार्गणेष्टः,
सद्धर्म - तत्त्व - कथनैक - पटुस् - त्रिलोक्याः।
दिव्यध्वनिर् - भवति ते विशदार्थ-सर्व-
भाषा-स्वभाव-परिणाम-गुणैः प्रयोज्यः।।35।।

स्वर्ग मोक्ष की राह दिखाय, द्रव्य तत्त्व गुण को प्रगटाय।
दिव्य ध्वनि है 'विशद' अनूप, ॐकार सब भाषा रूप।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो जल्लोसहि पत्ताणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

उन्निद्र - हेमनव - पंकज - पुंज - कान्ति,
पर्युल् - लसन् - नख - मयूख शिखाभि -रामौ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र! धत्तः,
पद्मानि तत्र विबुधाः परि - कल्प - यन्ति।।36।।

भवि जीवों का हो उपकार, प्रभु इच्छा बिन करें विहार।
जहँ जहँ प्रभु के पग पड़-पड़ जायँ, तहँ तहँ पंकज देव रचायँ।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो विप्पोसहि पत्ताणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

इत्थं यथा तव विभूति-रभूज्-जिनेन्द्र!
धर्मोप-देशन-विधौ न तथा परस्य।
यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक् कुतो ग्रह-गणस्य विकासिनोऽपि।।37।।

धर्म कथन में आप समान, अन्य देव न पाते आन।
तारा रवि की द्युति क्या पाय? वैभव देव न अन्य लहाय।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो सव्वोसहि पत्ताणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

श्च्योतन् - मदाविल - विलोल - कपोल - मूल-
मत्त - भ्रमद् - भ्रमर - नादविवृद्ध - कोपम्।
ऐरा - वताभ - मिभ - मुद्धत - मा - पतन्तं
दृष्ट्वा भयं भवति नो भव-दाश्रितानाम्।।38।।

गण्डस्थल मद जल से सने, गीत गूँजते अतिशय घने।
मत्त कुपित होकर गज आय, फिर भी भक्त नहीं भय खाय।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो मणबलीणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

भिन्नेभ - कुम्भ - गल - दुज्ज्वल - शोणिताक्त,
मुक्ताफल - प्रकर - भूषित - भूमिभागः।
बद्ध - क्रमः क्रम - गतं हरिणा - धिपोऽपि,
नाक्रामति क्रम - युगा - चल - संश्रितं ते।।39।।

भिदें कुम्भ गज मुक्ता द्वारा, हो भूषित भू भाग ही सारा।
तव भक्तों का केहरि आन, न कर सके जरा भी हान।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो वचिबलीणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-वह्नि-कल्पम्,
दावानलं ज्वलित-मुज्ज्वल-मुत्स्फुलिंगम्।
विश्वं जिघत्सु-मिव सम्मुख-मापतन्तं,
त्वन्नाम-कीर्तन-जलं शमयत्यशेषम्।।40।।

प्रलय पवन अग्नी घन-घोर, उठें तिलंगे चारों ओर।
जग भक्षण हेतू आक्रान्त, नाम रूप जल से हो शांत।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो कायबलीणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

रक्तेक्षणं समद-कोकिल-कण्ठ-नीलं,
क्रोधोद्धतं फणिन-मुत्फण-मा-पतन्तम्।
आक्रामति क्रमयुगेण निरस्त-शंकस्-
त्वन्नाम-नाग-दमनी-हृदि यस्य पुंसः।।41।।

काला नाग कुपित हो जाय, तो भी निर्भयता को पाय।
हाथ में नाग दमन ज्यों पाय, भक्त आपका बढ़ता जाय।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो खीर सवीणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

बल्गत्तुरंग - गज - गर्जित - भीमनाद-
माजौ बलं बलवता-मपि भूपतीनाम्।
उद्यद्-दिवाकर-मयूख-शिखा-पविद्धं,
त्वत्-कीर्तनात्तम इवाशु भिदा-मुपैति।।42।।



हय गय भयकारी रव होय, शक्तीशाली नृप दल सोय।
नाश होय कर प्रभु यशगान, रवि ज्यों करे तिमिर की हान।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो सप्पिसवीणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

कुन्ताग्र-भिन्न-गज-शोणित-वारि-वाह-
वेगा - वतार - तरणा - तुर - योध - भीमे।
युद्धे जयं विजित-दुर्जय-जेय-पक्षास्-
त्वत्पाद-पंकज-वना-श्रयिणो लभन्ते।।43।।

भाला गज के सिर लग जाय, सिर से रक्त की धार बहाय।
रण में दास विजय तव पाय, दुर्जय शत्रु भी आ जाय।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो महुरसवीणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

अम्भो-निधौ क्षुभित-भीषण-नक्र-चक्र-
पाठीन-पीठ-भय-दोल्वण-वाड-वाग्नौ।
रंग-तरंग-शिखर-स्थित-यान-पात्रास्-
त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति।।44।।

क्षुब्ध जलधि बड़वानल होय, मकरादिक भयकारी सोय।
करें आपका जो भी ध्यान, पार करें निर्भय हो थान।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो अमिय सवीणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

उद्भूत - भीषण - जलोदर - भार - भुग्नाः,
शोच्यां दशा-मुप-गताश्च्युत-जीवि-ताशाः।
त्वत् - पाद - पंकज - रजोऽमृत - दिग्ध - देहा,
मर्त्या भवन्ति मकरध्वज-तुल्य-रूपाः।।45।।

रोग जलोदर होवे खास, चिन्तित दशा तजी हो आस।
अमृत प्रभु पद रज सिर नाय, मदन रूपता को वह पाय।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो अक्खीण महाणसाणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

आपादकण्ठ - मुरु - श्रृंखल - वेष्टितांगा,
गाढं बृहन्-निगड-कोटि-निघृष्ट-जंघाः।
त्वन्-नाम-मन्त्र-मनिशं मनुजाः स्मरन्तः,
सद्यः स्वयं विगत-बन्ध-भया भवन्ति।।46।।

सांकल से हो बद्ध शरीर, खून से लथपत होवे पीर।
नाम मंत्र तव जपते लोग, शीघ्र बंध का होय वियोग।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो वड्ढमाणाणं' ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मत्त - द्विपेन्द्र - मृगराज - दवान - लाहि-
संग्राम - वारिधि - महोदर - बन्धनोत्थम्।
तस्याशु नाश - मुपयाति भयं भियेव,
यस्तावकं स्तव-मिमं मतिमा-नधीते।।47।।

गज अहि दव रण बंधन रोग, मृग भय सिंधू का संयोग।
सारे भय भी हों भयभीत, थुति प्रभु की जो करें विनीत।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'णमो सिद्धायदणाणं' वड्ढमाणाणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

स्तोत्र-स्रजं तव जिनेन्द्र! गुणैर् निबद्धां,
भक्त्या मया विविध-वर्ण-विचित्र-पुष्पाम्।
धत्ते जनो य इह कण्ठ - गता - मजस्रं,
तं ''मानतुंग''-मवशा समुपैति लक्ष्मीः।।48।।

विविध पुष्प जिनगुण की माल, प्रभु की संस्तुति रची विशाल।
कंठ में धारण जो कर लेय, मानतुंग सम लक्ष्मी सेय।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं ''णमो भयवदो महदि महावीर वड्ढमाण बुद्धरिसिणो'' नमो लोए सव्वसाहूणं ऋद्धि सहित श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा/प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

दोहा - मानतुंग की कृती का, भाषामय अनुवाद।
'विशद' शांति आनन्द का, भोग करें कर याद।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति दल कमलाधिपतये श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जाप्य** - ॐ ह्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ तीर्थंकराय नमः।

## जयमाला

दोहा - भक्ती कर जग जीव सब, होते विशद निहाल।
भक्तामर से भक्तिकर, गाते हैं जयमाल।।

(शम्भू छन्द)

जय जयति जयो जय तीर्थंकर, जय जयति जयो जय ज्ञान धनी।
जय जयति जयो जय ऋषभदेव, जय जयति जयो जय सर्व गुणी।।



जय जयति जयो जय भक्तामर, जय जयति जयो जय मुनि ज्ञानी।
जय जयति जयो जय जैन धर्म, जय जयति जयो जय जिनवाणी।।1।।
राजा मुनिवर जी मांनतुंग, को कारागृह में डाले थे।
तब भक्तामर की भक्ती से, वे टूट गये सब ताले थे।।
राजा ने मुनिवर मानतुंग, जिनधर्म का जय जयकार किया।
चरणों में गिरकर के मुनि का, राजा ने आशीर्वाद लिया।।2।।
जो भव बन्धन हरने वाले, उनको बन्धन में डाल दिया।
पर कारागृह में रहकर भी, गुरुवर ने विशद कमाल किया।।
मुनि मानतुंग से क्षमा मांग, जिन मत सबने स्वीकार किया।
मुनिवर ने क्षमादान दे कर, भक्तामर का उपहार दिया।।3।।
प्रभु आदिनाथ की अनुकम्पा, श्री मानतुंग मुनिवर पाए।
हे आदिनाथ! हे महा श्रमण!, अनुकम्पा हम पाने आए।।
हे जग उद्धारक तीर्थंकर!, मुझको भी भव से पार करो।
दे करके करुणा दान विशद, हम भक्तों का उद्धार करो।।4।।

दोहा - भक्तामर के सृजक हैं, मानतुंग ऋषिराज।
जिन गुरु की अर्चा विशद, करते हैं हम आज।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त सर्व लोकोत्तम जगत शरण श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - शांति रूप जिनवर परम, शांती के दातार।
पुष्पांजलि करते चरण, हे जिनेन्द्र! दुखहार।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

## श्री मानतुंग स्वामी का अर्घ्य

आदिनाथ की अर्चा पावन, भक्तामर में रही महान।
कैद कराए मुनि को राजा, अड़तालिस तालो में जान।।
भक्तामर स्तोत्र रचे मुनि, ऋद्धि सिद्धिकर अतिशयवान।
जिन मुनि के पद अर्घ्य चढ़ाते, विशद भाव से महति महान।।

ॐ ह्रीं भक्तामर स्तोत्र रचयिता श्री मानतुंगाचार्य नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## विधान रचयिता श्री विशद सागराचार्य जी का अर्घ्य

भक्तामर स्तोत्र की रचना, मानतुंगाचार्य जी किए महान।
ऋषभदेव की अर्चा करके, भक्त सभी करते गुणगान।।
भक्तामर विधान की रचना, विशदाचार्य जी किए विशाल।
पूजा अर्चा दीपार्चन कर, भक्त सभी हों मालामाल।।

ॐ ह्रीं भक्तामर विधान रचयिता आचार्य गुरुवरश्रीविशदसागर यतिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

# भक्तामर स्तोत्र के 48 ऋद्धि मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं झौं झौं नमः।
2. ॐ ह्रीं अर्हं णमोओहिजिणाणं झौं झौं नमः।
3. ॐ ह्रीं अर्हं णमोपरमोहिजिणाणं झौं झौं नमः।
4. ॐ ह्रीं अर्हं णमोसव्वोहिजिणाणं झौं झौं नमः।
5. ॐ ह्रीं अर्हं णमोअणंतोहिजिणाणं झौं झौं नमः।
6. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठ बुद्धीणं झौं झौं नमः।
7. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीजबुद्धीणं झौं झौं नमः।
8. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पादाणुसारीणं झौं झौं नमः।
9. ॐ ह्रीं अर्हं णमोसंभिण्णसोदारणं झौं झौं नमः।
10. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धीणं झौं झौं नमः।
11. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेय बुद्धाणं झौं झौं नमः।
12. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहिय बुद्धाणं झौं झौं नमः।
13. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं झौं झौं नमः।
14. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउल मदीणं झौं झौं नमः।
15. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दस पुव्वीणं झौं झौं नमः।
16. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदस पुव्वीणं झौं झौं नमः।
17. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंगमहा णिमित कुसलाणं झौं झौं नमः।
18. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वइड्ढि पत्ताणं झौं झौं नमः।
19. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं झौं झौं नमः।
20. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं झौं झौं नमः।
21. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्ण समणाणं झौं झौं नमः।
22. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगास गामीणं झौं झौं नमः।
23. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं झौं झौं नमः।
24. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं झौं झौं नमः।
25. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्ग तवाणं झौं झौं नमः।
26. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्त तवाणं झौं झौं नमः।
27. ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्तं तवाणं झौं झौं नमः।
28. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महा तवाणं झौं झौं नमः।
29. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर तवाणं झौं झौं नमः।
30. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणाणं झौं झौं नमः।
31. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर परक्कमाणं झौं झौं नमः।
32. ॐ ह्रीं अर्हं णमोघोरगुणबंभयारीणं झौं झौं नमः।
33. ॐ ह्रीं अर्हं णमोआमोसहिपत्ताणं झौं झौं नमः।
34. ॐ ह्रीं अर्हं णमोखेल्लोसहिपत्ताणं झौं झौं नमः।
35. ॐ ह्रीं अर्हं णमोजल्लोसहिपत्ताणं झौं झौं नमः।
36. ॐ ह्रीं अर्हं णमोविप्पोसहिपत्ताणं झौं झौं नमः।
37. ॐ ह्रीं अर्हं णमोसव्वोसहिपत्ताणं झौं झौं नमः।
38. ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं झौं झौं नमः।
39. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिबलीणं झौं झौं नमः।
40. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं झौं झौं नमः।
41. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं झौं झौं नमः।
42. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं झौं झौं नमः।
43. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुरसवीणं झौं झौं नमः।
44. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियसवीणं झौं झौं नमः।
45. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाणं झौं झौं नमः।
46. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं झौं झौं नमः।
47. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायदणाणं झौं झौं नमः।
48. ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवदो-महदि-महावीर वड्ढमाण-बुद्ध-रिसीणो (चेदि) झौं झौं नमः।

जाप्य : ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं श्री वृषभनाथ तीर्थंकराय नमः।



# श्री भक्तामर अड़तालीसा

दोहा - भक्तामर स्तोत्र यह, आदिनाथ के नाम।
मानतुंग मुनि ने लिखा, करके चरण प्रणाम।।
सुख शांती सौभाग्य हो, पढ़ने से स्तोत्र।
बाधाएँ सब दूर हों, बहे धर्म का स्रोत।।

चौपाई

भक्तामर स्तोत्र निराला, सब कष्टों को हरने वाला।। 1।।
आदिनाथ को मन से ध्याए, सच्चे मन से ध्यान लगाए।। 2।।
भक्ती के रस में खो जाए, पढ़ने वाला पुण्य कमाए।। 3।।
मानतुंग की रचना प्यारी, कहलाए जो संकटहारी।। 4।।
पढ़े पढ़ाये पाठ कराये, प्राणी पुण्यवान हो जाए।। 5।।
ग्रह क्लेश सारा नश जाए, मन में अनुपम शांती पाए।। 6।।
हरेक काव्य है महिमाशाली, भक्ती कभी न जाए खाली।। 7।।
एक एक अक्षर मंत्र कहाये, पाठक सुख सम्पत्ती पाए।। 8।।
सदी ग्यारहवी जानो भाई, उज्जैनी नगरी सुखदायी।। 9।।
जिसका प्रान्त मालवा गाया, विद्वानों का केन्द्र बताया।। 10।।
राजा भोज वहाँ का जानो, नौ मंत्री जिसके पहिचानो।। 11।।
कालीदास प्रथम कहलाया, सेठ सुदत्त वहाँ जब आया।। 12।।
पुत्र मनोहर जिसका जानो, पुस्तक हाथ लिए था मानो।। 13।।
राजा ने पूछा हे भाई!, पुस्तक कौन सी तुमने पाई।। 14।।
नाम माला तब नाम बताए, लेखक कवि धनंजय गाए।। 15।।
कवि को राजा ने बुलवाया, खुश होके सम्मान कराया।। 16।।
कृति नाम माला है प्यारी, राजा किए प्रशंसा भारी।। 17।।
गुरु के आशिष से यह पाया, मानतुंग को गुरु बतलाया।। 18।।
कालीदास को नहीं सुहाया, मुनिवर को मूरख बतलाया।। 19।।
शास्त्रार्थ कर ले तो जानें, हम इसकी महिमा पहिचानें।। 20।।
दूत सुमुनि के पास भिजाया, मुनिवर को संदेश सुनाया।। 21।।
सभा बीच मुनिवर न आए, चार बार संदेश भिजाए।। 22।।
कालिदास को गुस्सा आया, उसने राजा को भड़काया।। 23।।
क्रोध नृपति के मन में आया, सैनिक को आदेश सुनाया।। 24।।

बन्दी बना यहाँ पर लाओ, राजसभा में पेश कराओ।।25।।
दूत उठाकर मुनि को लाए, मुनि उपसर्ग मानकर आए।।26।।
मौन धार लीन्हे तब स्वामी, जैन धर्म के शुभ अनुगामी।।27।।
मुनिवर को वह कैद कराए, अड़तालिस ताले लगवाए।।28।।
नर नारी तब शोक मनाए, दुख के आँसू खूब बहाए।।29।।
मुनिवर मन में समता लाए, तीन दिनों का समय बिताए।।30।।
आदिनाथ को मुनिवर ध्याये, भक्तामर स्तोत्र रचाये।।31।।
मुनि के तन में बंधनें वाले, टूट गयीं जंजीरें ताले।।32।।
आपों आप खुले सब द्वारे, द्वारपाल सब लगा के हारे।।33।।
पास में राजा के वह आए, जाकर सारा हाल सुनाए।।34।।
राजा तभी वहाँ पर आया, मुनिवर को फिर कैद कराया।।35।।
मुनिवर जी फिर ध्यान लगाए, ताले फिर से टूटे पाए।।36।।
राजा तब मन में घबराया, कालिदास को पास बुलाया।।37।।
कालिदास ने शक्ति लगाई, देवी कालिका भी प्रगटाई।।38।।
देवी चक्रेश्वरी तब आई, देख कालिका तब घबराई।।39।।
महिमा जैन धर्म की गाई, सबने तब जयकार लगाई।।40।।
जैन धर्म लोगों ने धारा, धर्म का है बस यही सहारा।।41।।
'विशद' भक्ति की है बलिहारी, पुण्यवान होवे शुभकारी।।42।।
भाव सहित भक्तामर गाएँ, मानतुंग सम भक्ति जगाएँ।।43।।
अतिशयकारी पुण्य कमाएँ, अनुक्रम से फिर मुक्ती पाएँ।।44।।
भक्तामर है महिमा शाली, भक्ती भक्त की जाय ना खाली।।45।।
कोई पूजन पाठ रचाते, अखण्ड पाठ करते करवाते।।46।।
कोई विधान करके हर्षाते, कोई प्रभु की महिमा गाते।।47।।
हम भी श्री जिनवर को ध्याएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।48।।

दोहा - भक्तामर स्तोत्र से, भारी अतिशय होय।
नाना भाषा में रचा, पढ़े भाव से कोय।।
आधि व्याधि नाशक कहा, पावन शुभ स्तोत्र।
मंत्रों से परिपूर्ण है, 'विशद' धर्म का स्रोत।।

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ऐम् अर्हं श्री वृषभनाथ तीर्थंकराय नमः।



# आरती भक्तामर की

तर्ज - माई रे माई मुंडेर....

गाएँ जी गाएँ भक्तामर की, आरती मंगल गाएँ।
घृत के दीप जलाकर प्रभु के, चरणों शीश झुकाएँ।।
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्।। टेक।।
कृत युग के आदी में प्रभु जी, स्वर्ग से चयकर आए।।
नाभिराय अरु मरुदेवी का, जीवन धन्य बनाए।
नगर अयोध्या जन्म लिए प्रभु, नर नारी हर्षाए।।
घृत के दीप जलाकर प्रभु के, चरणों शीश झुकाएँ।
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्।।1।।
असि मसि कृषि वाणिज्य कला अरु, शिल्प का ज्ञान सिखाए।
नील परी की मृत्यू लखकर, प्रभु वैराग्य जगाए।।
विशद ज्ञान को पाए प्रभु जी, घाती कर्म नशाए।
घृत के दीप जलाकर प्रभु के, चरणों शीश झुकाएँ।।
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्।।2।।
मानतुंग स्वामी के ऊपर, उपसर्ग भोज ने ढाया।
अड़तालिस तालों के अन्दर, मुनि को कैद कराया।।
टूट गईं जंजीरें ताले, आदि प्रभु को ध्याए।
घृत के दीप जलाकर प्रभु के, चरणों शीश झुकाएँ।।
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्।।3।।
अतिशय देखा भोजराज ने, मुनि को शीश झुकाया।
जैन धर्म के जयकारों से, सारा गगन गुंजाया।।
आदिनाथ प्रभु का आराधन, भव से मुक्ति दिलाए।
घृत के दीप जलाकर प्रभु के, चरणों शीश झुकाएँ।।
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्।।4।।
कोड़ा-कोड़ी वर्ष बाद भी, प्राणी तुमको ध्याते।
आदिनाथ जिन भक्तामर को, सादर शीश झुकाते।।
''विशद'' भक्ति की महिमा को यह, सारा ही जग गाए।
घृत के दीप जलाकर प्रभु के, चरणों शीश झुकाएँ।।
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्।।5।।

# कल्याण मंदिर स्तोत्र विधान

## ''माण्डला''

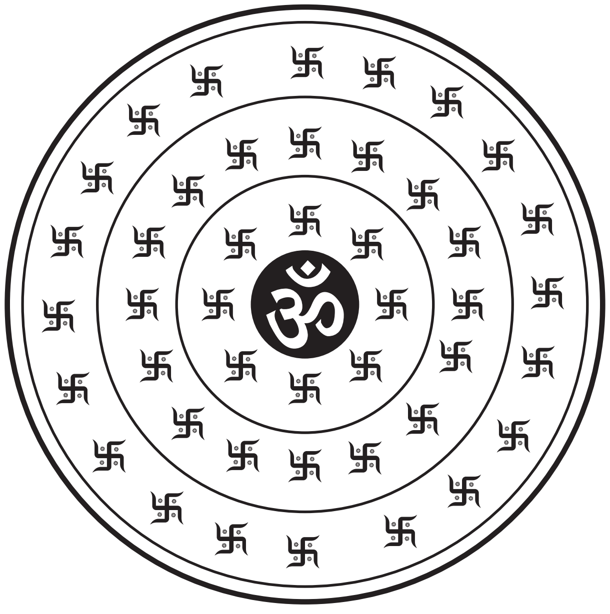

मध्य में - ॐ
प्रथम वलय - 8
द्वितीय वलय - 16
तृतिय वलय - 20
कुल वलय - 44 अर्घ्य

**रचयिता :**

**प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज**

# कल्याण मंदिर स्तवन

दोहा - अहिच्छत्र में पार्श्व जिन, पाए केवल ज्ञान।
भाव सहित उनका यहाँ, करते हम गुणगान।।

(शम्भू-छन्द)

हे पार्श्वनाथ करुणा निधान!, उपसर्ग विजेता तीर्थंकर।
हे परम ब्रह्म हे कर्मजयी!, हे मोक्ष प्रदाता शिवशंकर।।
हम नमन करें तव चरणों में, शुभ भावों से गुणगान करें।
स्वातम रस परमानन्दमयी, सुज्ञान सुधा का पान करें।। 1।।

वैशाख कृष्ण द्वितिया तिथि को, वामा के गर्भ पधारे थे।
श्री आदि देवियों ने आकर, माता के चरण पखारे थे।।
शुभ पौष वदी ग्यारस तिथि को, श्री पार्श्वनाथ ने जन्म लिया।
तब मेरु सुदर्शन के ऊपर, इन्द्रों ने शुभ अभिषेक किया।। 2।।

वह धन्य घड़ी थी धन्य दिवस, हो गई बनारस शुभ नगरी।
श्री अश्वसेन जी धन्य हुए, हो गई धन्य जनता सगरी।।
नौ हाथ उच्च तन था प्रभु का, शुभ हरितवर्ण जो पाये थे।
सौ वर्ष आयु पाने वाले, पग नाग चिन्ह प्रगटाये थे।। 3।।

तिथि पौषवदी एकादशि को, उत्तम संयम जिनवर धारे।
देवों ने हर्षित होकर के, प्रभुवर के बोले जयकारे।।
वन में जाकर प्रभु योग धरा, तन से ममत्व को त्याग किए।
निज आत्म सुधारस को पाया, निज से निज का ही ध्यान किए।।4।।

जब क्षपक श्रेणी पर चढ़े आप, घाती कर्मों का नाश किया।
श्री चैत्र कृष्ण की तिथि चौथ, प्रभु केवलज्ञान प्रकाश किया।।
शुभ ज्ञान लता फैली जग में, भव्यों को शुभ संदेश दिया।
श्रावण शुक्ल सप्तमी को प्रभु ने, मोक्ष महल को वरण किया।।5।।

दोहा - पार्श्वनाथ भगवान की, महिमा अगम अपार।
अतः भक्ति करते 'विशद', जिन पद बारम्बार।।

।। इत्याशीर्वादः।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

# कल्याण मन्दिर स्तोत्र पूजा

स्थापना

कुमुद चन्द्र आचार्य प्रवर जी, किए पार्श्व जिन का गुणगान।
हुआ प्रसिद्ध लोक में पावन, कल्याण मंदिर स्तोत्र महान।।
जिनकी अर्चा करने को हम, करते यह स्तोत्र विधान।
हृदय कमल में पार्श्व प्रभु का, विशद भाव से है आह्वान।।

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्र व्रताराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर सवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितोभव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

भोगों में लीन रहे प्रभुवर, इसमें ही सदा लुभाए हैं।
भौतिक पदार्थ में सुख माना, वह पाकर के हर्षाए हैं।।
कल्याण मन्दिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभू की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सन्तप्त हृदय मेरा प्रभुवर, चन्दन से ना शीतल होता।
हम नित्य कषाएँ करते हैं, पछताते और जीवन खोता।।
कल्याण मन्दिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभू की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु बाह्याभ्यन्तर शुद्ध रहे, अक्षत सम गुण प्रभु तेरे हैं।
हम भटक रहे चारों गति में, ना मिटे जगत के फेरे हैं।।
कल्याण मन्दिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभू की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

उपवन के पुष्प रहे अनुपम, ना पुष्प आप सा कोई है।
अफसोस है ज्ञानी यह आतम, फिर भी अनादि से सोई है।।
कल्याण मन्दिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभू की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।



नाना व्यंजन खाये हमने, फिर भी मन में ना शांति हुई।
चेतन को भोजन दिया नहीं, जिससे जीवन में भ्रान्ति हुई।।
कल्याण मन्दिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभू की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक जग का तम खोता है, आतम का तम ना मिटता है।
अन्तर में जले ज्ञान दीपक, कर्मों का राजा पिटता है।।
कल्याण मन्दिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभू की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की धूप सताती है, हे नाथ! कर्म वसु जल जाएँ।
हम धूप जलाते अग्नि में, तव गुण की प्रभु छाया पाएँ।।
कल्याण मन्दिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभू की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आँधी कर्मों की चले विशद, पुरुषार्थ हीन हो जाता है।
जो ध्यान करे निज आतम का, वह मोक्ष महाफल पाता है।।
कल्याण मन्दिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभू की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पथ मिले हमें बाधाओं के, अब दूर करें वे बाधाएँ।
जग की उलझन में उलझ रहे, सब छोड़ विशद मुक्ती पाएँ।।
कल्याण मन्दिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभू की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – कल्याण मन्दिर स्तोत्र का, किया यहाँ गुणगान।
यही भावना है विशद, पाएँ शिव सोपान।।

शान्तये शांतिधारा...

दोहा – पार्श्वनाथ भगवान की, महिमा अपरम्पार।
भक्ती के फल से सभी, पाएँ सौख्य अपार।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

# कल्याण मन्दिर विधान की अर्घावली

दोहा - कल्याण मन्दिर स्तोत्र यह, पूजा करें विधान।
भाव सहित जो भी करें, पावें जग सम्मान।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

## अभीप्सित कार्य सिद्धिदायक

कल्याणमन्दिर - मुदार - मवद्य - भेदि,
भीता-भय-प्रदम-निन्दित-मङ्घ्रिपद्मं।
संसार सागर निमज्ज-दशेष जन्तु,
पोतायमान मभिनम्य जिनेश्वरस्य।।1।।

हे कल्याण! धाम गुणवान, भव सर तारक पोत महान।
शिव मंदिर अघहारक नाम, पार्श्वनाथ के चरण प्रणाम।।1।।

ॐ ह्रीं भव समुद्र पतज्जन्तु तारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## सर्वसिद्धिदायक

यस्य स्वयं सुरगुरुर्-गरिमाम्बुराशेः,
स्तोत्रं सुविस्तृत-मतिर्-न विभुर्विधातुम्।
तीर्थेश्वरस्य कमठस्मय धूमकेतोस्,
तस्याह मेष किल संस्तवनं करिष्ये।।2।।

सागर सम हैं गौरववान, सुरगुरु न कर सकें बखान।
भंजन किया कमठ का मान, तव करता प्रभु मैं गुणगान।।2।।

ॐ ह्रीं अनन्तगुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## जलभय निवारक

सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप-,
मस्मादृशाः कथमधीश! भवन्त्यधीशाः।
धृष्टोऽपि कौशिक शिशुर्-यदि वा दिवान्धो,
रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः।।3।।

तव स्वरूप प्रभु अगम अपार, मंदबुद्धि न पावे पार।
प्रखर सूर्य ज्यों आभावान, उल्लू देख सके न आन।।3।।

ॐ ह्रीं चिद्रूपाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।



## असमय निधन निवारक

मोह-क्षयादनुभवन्नपि नाथ! मर्त्यो,
नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत्।
कल्पान्त-वान्त-पयसः प्रकटोऽपि यस्मान्-,
मीयेत केन जलधेर्-ननु रत्नराशिः।।4।।

मोह की भी हो जाए हान, कह पावें तव को गुणगान।
जल सागर से भी बह जाय, प्रकट रत्न भी को गिन पाय।।4।।

ॐ ह्रीं गहन गुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## प्रछन्न धन प्रदर्शक

अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ! जडाशयोऽपि,
कर्तुं स्तवं लसदसंख्य-गुणाकरस्य।
बालोऽपि किं न निज- बाहु-युगं वितत्य,
विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाम्बुराशेः।।5।।

तुम गुण रत्नों के आगार, मैं मतिहीन बुद्धि अनुसार।
ज्यों बालक निज बाँह पसार, उद्यत करने सागर पार।।5।।

ॐ ह्रीं परमोन्नत गुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## संतान सम्पत्ति प्रदायक

ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश!,
वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः।
जाता तदेव-मसमीक्षित-कारितेयं।
जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि।।6।।

तव गुण गाने को लाचार, योगी जन भी माने हार।
ज्यों पक्षी बोले निज बान, त्यों करते हम तव गुणगान।।6।।

ॐ ह्रीं अगम्य गुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## अभीप्सित जनाकर्षक

आस्तामचिन्त्य-महिमा जिन! संस्तवस्ते,
नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति।

तीव्राऽऽतपो - पहत - पान्थ - जनान्निदाघे,
प्रीणाति पद्म-सरसः स-रसोऽनिलोऽपि।।7।।

**तव महिमा जिन! अगम अपार, नाम एक जग जन आधार।**
**पवन पद्म सरवर से आय, ग्रीष्म तपन को पूर्ण नशाय।।7।।**

ॐ ह्रीं स्तवनार्हाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## कुपितोपिदंश विनाशक

हृद्वर्तिनि त्वयि विभो! शिथिली भवन्ति,
जन्तोः क्षणेन निबिडा अपि कर्म-बन्धाः।
सद्यो भुजङ्गम-मया इव मध्य-भाग-,
मभ्यागते वन-शिखण्डिनि चन्दनस्य।।8।।

**मन से ध्यायें जिन अर्हन्त, कर्म बन्ध हों शिथिल तुरन्त।**
**बोले ज्यों चन्दन तरु मोर, नाग डरें भागे चहुँ ओर।।8।।**

ॐ ह्रीं कर्मबन्ध विनाशकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

पूर्णार्घ्यं

**दोहा- अष्टम वसुधा प्राप्त हो, हमको हे भगवान!।**
**अष्ट द्रव्य के अर्घ्य से, करते हम गुणगान।।**

ॐ ह्रीं हृदय स्थिताय अष्ट दल कमलाधिपतये श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## सर्पवृश्चिकविष विनाशक

मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र!
रौद्रै-रुपद्रव-शतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि।
गो-स्वामिनि स्फुरित-तेजसि दृष्टमात्रे,
चौरैरिवाऽऽशु पशवः प्रपलायमानैः।।9।।

**जिन दर्शन यों विपद नशाय, सूर्योदय से तम नश जाय।**
**निशि में पशु ज्यों घेरें चोर, देख ग्वाल को भागे छोड़।।9।।**

ॐ ह्रीं दुष्टोपसर्ग विनाशकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।



## तस्कर भय विनाशक

त्वं तारको जिन! कथं भविनां त एव,
त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः।
यद्वा दृतिस्तरति यज्जल मेष नून-,
मन्तर्गतस्यऽमरुतः स किलानुभावः।।10।।

**भविजन तारक आप जिनेश, भवि जीवों के लिए विशेष।**
**मसक कराए सिन्धू पार, त्यों जन करते जिन उद्धार।।10।।**

ॐ ह्रीं सुध्येयाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## जलाग्निभय विनाशक

यस्मिन् हर-प्रभृतयोऽपि हत-प्रभावाः,
सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन।
विध्यापिता हुतभुजः पयसाथ येन,
पीतं न किं तदपि दुर्धर-वाडवेन।।11।।

**काम से ज्यों हारे सब देव, विजय आप कीन्हे जिनदेव।**
**जल अग्नी का कर दे नाश, बड़वानल फिर करें विनाश।।11।।**

ॐ ह्रीं अनंगमथनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## अग्नि भय विनाशक

स्वामिन्ननल्प - गरिमाणमपि प्रपन्नास्-,
त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः।
जन्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाघवेन,
चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः।।12।।

**गुणानन्त हैं को गिन पाय, तुलना किसी से ना हो पाय।**
**प्रभु की महिमा अगम अपार, हृदय धरे पाए भव पार।।12।।**

ॐ ह्रीं अतिशय गुरवे क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## जलमिष्ठता कारक

क्रोधस्त्वया यदि विभो! प्रथमं निरस्तो,
ध्वस्तास्तदा वद कथं किल कर्मचौराः।

प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिरापि लोके,
नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ।।13 ।।

**प्रथम किए प्रभु क्रोध विनाश, कर्म किए फिर कैसे ? नाश।**
**बर्फ वृक्ष को ज्यों झुलसाय, शत्रु क्षमा से जीता जाय ।।13 ।।**

ॐ ह्रीं जित क्रोधाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## शत्रु स्नेह जनक

त्वां योगिनो जिन सदा परमात्मरूप-,
मन्वेष-यन्ति हृदयाम्बुज कोष-देशे।
पूतस्य निर्मल-रुचेर्-यदि वा किमन्य,
दक्षस्य संभव-पदं ननु कर्णिकायाः ।।14 ।।

**श्रेष्ठ महर्षी महिमा गाय, हृदय में अन्वेषण कर ध्याय।**
**बीज कर्णिका में उपजाय, हृदय में निज आतम को ध्याय ।।14 ।।**

ॐ ह्रीं महन्मृग्याय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## चोरिकागत द्रव्य दायक

ध्यानाज्जिनेश भवतो भविनः क्षणेन,
देहं विहाय परमात्म-दशां व्रजन्ति।
तीव्रानलादुपल-भावमपास्य लोके,
चामीकरत्वमचिरादिव धातु-भेदाः ।।15 ।।

**ज्यों अग्नी में जल पाषाण, स्वर्ण रूपता पाय महान।**
**त्यों प्रभु का करके भवि ध्यान, पाए वीतराग विज्ञान ।।15 ।।**

ॐ ह्रीं कर्मकिट्ट दहनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## गहन वन पर्वत भय विनाशक

अंतः सदैव जिन यस्य विभाव्यसे त्वं,
भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम्।
एतत्स्वरूपमथ मध्य-विवर्तिनो हि,
यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः ।।16 ।।



**बिठा देह में प्रभु को ध्याय, फिर तन को क्यों नाश कराय।**
**विग्रह जीव का रहा स्वभाव, सत्पुरुषों का है यह भाव ।।16 ।।**

ॐ ह्रीं देह देहि कलह निवारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## युद्ध विग्रह विनाशक

आत्मा मनीषिभि-रयं त्वदभेद-बुद्ध्या,
ध्यातो जिनेन्द्र! भवतीह भवत्प्रभावः।
पानीयमप् - यमृत - मित् - यनुचिन्त्यमानं,
किं नाम नो विष-विकारमपा-करोति ।।17 ।।

**हो अभेद प्रभु का कर ध्यान, योगी होवे प्रभू समान।**
**अमृत मान नीर का पान, कर क्यों होय ना रोग निदान ? ।।17 ।।**

ॐ ह्रीं संसार विष सुधोपमाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## सर्प विष विनाशक

त्वामेव वीत - तमसं परवादिनोऽपि,
नूनं विभो! हरि - हरादि धिया प्रपन्नाः।
किं काच-कामलिभिरीश सितोऽपि शंखो,
नोगृह्यते विविध-वर्ण-विपर्ययेण ।।18 ।।

**माने हरिहर ब्रह्मा रूप, अज्ञानी जिन का स्वरूप।**
**हुआ पीलिया रोग समान, शंख पीत दीखे यह मान ।।18 ।।**

ॐ ह्रीं सर्व जन वन्द्याय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## नेत्ररोग विनाशक

धर्मोपदेश - समये सविधानुभावा-,
दास्तां जनो भवति ते तरुरप्-यशोकः।
अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि,
किं वा विबोधमुपयाति न जीव-लोकः ।।19 ।।

**होय देशना प्रभु के पास, तरु अशोक का शोक विनाश।**
**प्रातः होते ही तरु बोध, निद्रा तज ज्यों पाए विबोध ।।19 ।।**

ॐ ह्रीं अशोक वृक्ष विराजमानाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## उच्चाटन कारक

**चित्रं विभो! कथम्वाङ्मुख-वृन्तमेव,**
**विष्वक्-पतत्य-विरला सुर-पुष्प-वृष्टिः।**
**त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश!**
**गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि।।20।।**

**पुष्प वृष्टि करते हैं देव, ऊर्ध्व पाँखुरी रहे सदैव।**
**डण्ठल कहें रहें प्रभु पास, आते हों कर्मों का नाश।।20।।**

ॐ ह्रीं सुर पुष्प वृष्टि शोभिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## ज्ञानवृद्धि प्रदायक

**स्थाने गभीर-हृदयोदधि-सम्भवायाः,**
**पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति।**
**पीत्त्वाः यतः परम-सम्मद-संग-भाजो,**
**भव्याव्रजन्ति तरसाप्-यजरा-ऽमरत्वम्।।21।।**

**दिव्य ध्वनि प्रभु की गम्भीर, सुधा समान हरे भव पीर।**
**आकुलता का करे विनाश, अक्षय सौख्य दिलाए खास।।21।।**

ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनि विराजिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## मधुर फल प्रदायक

**स्वामिन्सुदूर - मवनम्य समुत्पतन्तो,**
**मन्येवदन्ति शुचयः सुर - चामरौघाः।**
**येऽस्मै नतिं विदधते मुनि - पुंगवाय,**
**ते-नून-मूर्ध्व-गतयः खलु शुद्ध-भावाः।।22।।**

**चौंसठ चँवर ढुराएँ देव, विनय शील हो झुकें सदैव।**
**विनयशील जो करें प्रणाम, प्राप्त करें वे मुक्ती धाम।।22।।**

ॐ ह्रीं सुर चामर प्रातिहार्य विराजमानाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## राज्य सन्मानदायक

**श्यामं गभीर - गिरमुज्ज्वल - हेम - रत्न,**
**सिंहासनस्थमिह भव्य - शिखण्डिनस्त्वाम्।**



**आलोकयन्ति - रभसेन नदन्तमुच्चैश्-,**
**चामीकराद्रि-शिरसीव नवाम्बुवाहम्।।23।।**

**सिंहासन पर श्री जिनेश, दिव्य ध्वनि प्रगटाएँ विशेष।**
**ज्यों मेरू पे मेघ समान, हर्षित मोर करे गुणगान।।23।।**

ॐ ह्रीं पीठत्रय नायकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## शुष्कवनोपवन विनाशक

**उद्गच्छता तव शिति-द्युति-मण्डलेन,**
**लुप्त-च्छदच्छवि-रशोक - तरुर्बभूव।**
**सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग,**
**नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि।।24।।**

**भामण्डल है आभावान, प्रभा दिखाए श्रेष्ठ महान।**
**भव्य जीव जो जिन के पास, आके पाएँ मोक्ष निवास।।24।।**

ॐ ह्रीं भामण्डल मण्डिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

पूर्णार्घ्य

**दोहा- सोलह कारण भावना, भा बनते तीर्थेश।**
**वह पद पाने हम यहाँ, देते अर्घ्य विशेष।।**

ॐ ह्रीं हृदय स्थिताय षोडशदलकमलाधिपतये श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## विंशति दल कमल पूजा

**भो-भोः प्रमादमवधूय भजध्वमेन-,**
**मागत्य निर्वृति-पुरीं प्रति सार्थवाहम्।**
**एतन्निवेदयति देव जगत्त्रयाय,**
**मन्ये नदन्-नभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते।।25।।**

**देवों से हो दुन्दुभि नाद, मानो कहे तजो उन्माद।**
**मुक्ती की मन में जो चाह, जिन पद करो विशद अवगाह।।25।।**

ॐ ह्रीं देव दुन्दुभिनादाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## वचन सिद्धि प्रतिष्ठापक

उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ!,
तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः।
मुक्ता-कलाप-कलितोरु-सितातपत्र-,
व्याजात्त्रिधा धृत-तनुर्ध्रुवमभ्युपेतः।।26।।

त्रिभुवन पति के सिर पे तीन, छत्र कहे हैं ज्ञान प्रवीण।
तीन रूप ज्यों चाँद दिखाय, खुश हो प्रभु सेवा को आय।।26।।

ॐ ह्रीं छत्र त्रय सहिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## वैर-विरोध विनाशक

स्वेनप्रपूरित - जगत्त्रय - पिण्डितेन,
कान्ति - प्रताप - यशसामिव संचयेन।
माणिक्य - हेम - रजत - प्रविनिर्मितेन,
सालत्रयेण भगवन्-नभितो विभासि।।27।।

स्वर्ण रजत माणिक के (कोट) साल, प्रभु का वैभव रहा विशाल।
तेज कांतिमय प्रभु यशवान, समवशरण शुभ रहा महान।।27।।

ॐ ह्रीं शालत्रयाधिपतये क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## यशः कीर्तिप्रसारक

दिव्य-स्रजो जिन नमत्त्रिदशाधिपाना-,
मुत्सृज्य रत्न-रचितानपि मौलि-बन्धान्।
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वापरत्र,
त्वत्संगमे सुमनसो न रमन्त एव।।28।।

इन्द्रों के मुकुटों की माल, जिन पद झुकते गिरे विशाल।
मानो जिन पद में जो आय, चरण छोड़ फिर कहीं ना जाय।।28।।

ॐ ह्रीं भक्त जनान वनपतिराय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## विशद आकर्षण कारक

त्वं नाथ! जन्म जलधेर् विपराङ्मुखोऽपि,
यत्तारयस्य सुमतो निज-पृष्ठ-लग्नान्।



युक्तं हि पार्थिव-निपस्य सतस्तवैव,
चित्रं विभो! यदसि कर्म-विपाक-शून्या।।29।।

गहन जलाशय को भी पाय, घड़ा अधोमुख पार कराय।
संत विमुख भव सिन्धु से जान, भव तारक हैं पोत महान।।29।।

ॐ ह्रीं निजपृष्ठलग्नभय, तारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## असंभव कार्यसाधक

विश्वेश्वरोऽपि जन-पालक दुर्गतस्त्वं,
किं वाऽक्षर - प्रकृतिरप् - यलिपिस्त्वमीश!
अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव,
ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्व-विकास-हेतुः।।30।।

त्रिभुवन पति निर्धन कहलाय, अक्षर कोई लिख ना पाय।
है त्रिकाल ज्ञाता अज्ञान, ज्ञाता सर्व चराचर जान।।30।।

ॐ ह्रीं विस्मयनीय मूर्तये क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## शुभाशुभ प्रश्नदर्शक

प्राग्भार-संभृत-नभांसि-रजांसि रोषा-,
दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि।
छायापि तैस्तव न नाथ! हता हताशो।
ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा।।31।।

कमठ गगन से धूल गिराय, प्रभु तन को जो छू ना पाय।
तिरस्कार की दृष्टीवान, कर्म बन्ध जो किया महान।।31।।

ॐ ह्रीं कमठोत्थापित धूल्युपद्रव जिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## दुष्टता प्रतिरोधी

यद्गर्जदूर्जित - घनौघमदभ्र - भीम -,
भ्रश्यत्तडिन् मुसल - मांसल - घोरधारम्।
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तर - वारिदध्रे,
तेनैव तस्य जिन दुस्तर-वारि कृत्यम्।।32।।

मेघ गरज बिजली चमकाय, जल वृष्टी जो भीम कराय।
प्रभु का कुछ भी ना कर पाय, निज पद में जो खड्ग गिराय।।32।।

ॐ ह्रीं कमठकृत जलधारोपसर्ग निवारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## उल्कापातातिवृष्ट्यनावृष्टि निरोधक

ध्वस्तोर्ध्व-केश-विकृताकृति-मर्त्य-मुण्ड-,
प्रालम्बभृद् - भयदवक्त्र - विनिर्यदग्निः।
प्रेतव्रजः प्रति भवन्तमपीरितो यः,
सोऽस्याभवत्प्रति भवं भव-दुःख-हेतुः।।33।।

नर मुण्डन की धारी माल, वदन से निकले अग्नी ज्वाल।
प्रेतादिक तप करने भंग, भेज कर्म का पाया बंध।।33।।

ॐ ह्रीं कमठकृत पैशाचिकोपद्रवजिन शीलाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## भूत-पिशाच पीड़ा तथा शत्रुभय नाशक

धन्यास्त एव भुवनाधिप ये त्रिसंध्य-,
माराधयन्ति विधिवद्विधुतान्य-कृत्याः।
भक्त्योल्लसत्पुलक - पक्ष्मल - देह - देशाः,
पाद-द्वयं तव विभो! भुवि जन्मभाजः।।34।।

हर्षभाव से जिन पद जाय, माया तज त्रय काल में आय।
विधिवत अर्चा करे कराय, भव-भव के वह कर्म नशाय।।34।।

ॐ ह्रीं धार्मिकवन्दिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## मृगी उन्माद अपस्मार विनाशक

अस्मिन्-नपार-भव-वारि-निधौ मुनीश!
मन्ये न मे श्रवण-गोचरतां गतोऽसि।
आकर्णिते तु तव गोत्र-पवित्र-मंत्रे,
किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति।।35।।

भव-भव के दुख सहे विशेष, नाम सुना ना कभी जिनेश!।
मंत्र बोल सुनता जो नाम, विपद नाश पाए ध्रुव धाम।।35।।



ॐ ह्रीं पवित्र नामध्येयाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## सर्प वशीकरण

जन्मान्तरेऽपि तव-पाद-युगं न देव,
मन्ये मया महितमीहित-दान-दक्षम्।
तेनेह जन्मनि मुनीश पराभवानां,
जातो निकेतन महं मथिताशयानाम्।।36।।

पूजा वांछित फल दातार, की ना आए प्रभु के द्वार।
सहा हृदय भेदी अपमान, शरण आय पाए सम्मान।।36।।

ॐ ह्रीं पूतपादाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## अनर्थ नाशक दर्शन

नूनं न मोह-तिमिरावृतलोचनेन,
पूर्वं विभो! सकृदपि प्रविलोकितोऽसि।
मर्मा विधो! विधुरयन्ति हि मामनर्थाः,
प्रोद्यत्प्रबन्ध-गतयः कथमन्यथैते।।37।।

मोहाच्छादित रहे विशेष, देख सके ना तुम्हे जिनेश!।
मर्म भेदि कुवचन हे देव!, पर संगति से सहे सदैव।।37।।

ॐ ह्रीं दर्शनीयाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## असंख्यकष्ट निवारक

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि,
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या।
जातोऽस्मि तेन-जन-बान्धव दुःखपात्रं,
यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भाव-शून्याः।।38।।

अर्चा पूजा की ( तव ) पद आन, हृदय धरे ना किन्तु पुमान।
भाव शून्य भक्ती कर देव!, फलदायी ना रही सदैव।।38।।

ॐ ह्रीं भक्तिहीन जनबान्धताय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## सर्वज्वर शामक

त्वं नाथ! दुःखि जन-वत्सल! हे शरण्य!,
कारुण्य-पुण्य-वसते वशिनां वरेण्य!।
भक्त्या नते मयि महेश दयां विधाय,
दुःखांकुरोद्दलन-तत्परतां विधेहि।।39।।

**शरणागत जन दीनदयाल, पतितोद्धारक हे प्रतिपाल!।**
**झुका रहे तव पद में शीश, दूर करो दुख दो आशीष।।39।।**

ॐ ह्रीं भक्तजन वत्सलाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## विषम ज्वर विघातक

निःसंख्य - सार - शरणं शरणं शरण्य,
मासाद्य सादित - रिपु प्रथितावदानम्।
त्वत्पाद - पंकजमपि प्रणिधान - वन्ध्यो,
वन्ध्योऽस्मि चेद्भुवन पावन हा हतोऽस्मि।।40।।

**अशरण शरण जगत प्रतिपाल, गुणानन्त धर दीनदयाल।**
**तव पद में रह किया ना ध्यान, सहे कर्म घन घात महान।।40।।**

ॐ ह्रीं सौभाग्यदायक पद कमल युगाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## अस्त्र-शस्त्र विघातक

देवेन्द्र - वन्द्य विदिताखिल - वस्तुसार!
संसार - तारक विभो! भुवनाधिनाथ।
त्रायस्व देव करुणा - ह्रद मां पुनीहि,
सीदन्तमद्य भयद-व्यसनाम्बु-राशेः।।41।।

**सुर वन्दित हे दया निधान!, जग तारक जगपति भगवान।**
**दुखियों का करते उद्धार, दुख सिन्धू से कर दो पार।।41।।**

ॐ ह्रीं सर्वपदार्थ वेदिने क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## स्त्री सम्बन्धि समस्त रोग शामक

यद्यस्ति नाथ! भवदङ्घ्रि-सरोरुहाणां,
भक्ते फलं किमपि सन्तत-संचितायाः।



तन्मेत्वदेक - शरणस्य शरण्य भूयाः,
स्वामी! त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि।।42।।

**किंचित पुण्य से भक्ति जिनेश!, हे प्रतिपालक पाई विशेष।**
**भव-भव में मेरे भगवान, भक्त बनें आदर्श महान।।42।।**

ॐ ह्रीं पुण्य बहुजनसेव्याय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## बन्धन मोचक

इत्थं समाहित-धियो विधिवज्जिनेन्द्र!,
सान्द्रोल्लसत्पुलक - कंचुकितांगभागाः।
त्वद्बिम्ब-निर्मल-मुखाम्बुज-बद्ध-लक्ष्या,
ये संस्तवं तव विभो! रचयन्ति भव्याः।।43।।

**हे जिन! सद्बुद्धी धर आन, दर्श करें खुश हो भगवान।**
**संस्तव करें सुविधि युत मान, वे पावें सुर पद निर्वाण।।43।।**

ॐ ह्रीं जन्म मृत्युनिवारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

## अन्तिम मंगल

(आर्या छन्द)

जन नयन 'कुमुदचन्द्र'-प्रभास्वराः स्वर्ग-संपदो भुक्त्वा।
ते विगलित-मल-निचया अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते।।44।।

**जन-मन रंजक हे कुमुदेश!, सुर पद हेतू स्वर्ग प्रवेश।**
**किंचित् काल भोग (नर-नाथ) भूपेश, कर्म नाश हों विशद जिनेश।।44।।**

ॐ ह्रीं कुमुदचन्द्रयति सेवितपादाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

पूर्णार्घ्य

**दोहा-विंशति दल पूजा करें, पाने शिव सोपान।**
**अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, करते हम गुणगान।।**

ॐ ह्रीं विंशति दल कमलाधिपतये श्री पार्श्वनाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जाप : ॐ ह्रीं सर्व विघ्न हराय श्री पार्श्वनाथाय नमः।**

# समुच्चय जयमाला

दोहा- पार्श्वनाथ के चरण में, वन्दन करूँ त्रिकाल।
कल्याण मन्दिर स्तोत्र की, गाता हूँ जयमाल।।

(चौपाई)

लोकालोक अनन्तानन्त, कहते केवल ज्ञानी संत।
चौदह राजू लोक महान्, ऊँचा सप्त राजू पहिचान।।1।।
राजू एक मध्य विस्तार, मध्य सुमेरू अपरम्पार।
दक्षिण दिशा रही मनहार, भरत क्षेत्र है मंगलकार।।2।।
आर्य खण्ड में भारत देश, जिसमें भाई रहा विशेष।
उज्जैनी नगरी में जान, विक्रम राजा रहे महान्।।3।।
उसी नगर में भक्त प्रधान, गंगा में करने स्नान।
वृद्ध महर्षी आए एक, जिनमें गुण थे श्रेष्ठ अनेक।।4।।
योग्य भक्त की रही तलाश, देख भक्त को जागी आश।
श्रेष्ठ वदन था कान्तीमान, सुन्दर दिखता आलीशान।।5।।
धक्का उसे लगाया जोर, वाद-विवाद हुआ फिर घोर।
शिष्य बने जिसकी हो हार, शर्त रखी यह अपरम्पार।।6।।
ग्वाल बाल निकला तव एक, निर्णायक माना वह नेक।
कई श्लोक सुनाए श्रेष्ठ, आगम वर्णित रहे यथेष्ठ।।7।।
ग्वाला उससे था अनभिज्ञ, श्रेष्ठ महर्षि अनुपम विज्ञ।
वह दृष्टांत सुनाए नेक, ग्वाला मुग्ध हुआ यह देख।।8।।
भक्त ने गुरु को किया प्रणाम, कुमुद चन्द रक्खा तव नाम।
क्षपणक जिनका था उपनाम, जिन भक्ति था उनका काम।।9।।
आप गये चित्तौड़ प्रदेश, दर्श पार्श्व के हुए विशेष।
था स्तंभ वहाँ पर एक, उसमें थे संकेत अनेक।।10।।
उस कुटीर का खोला द्वार, शास्त्र मिला जिसमें मनहार।
एक पृष्ठ पढ़ने के बाद, बन्द हुआ फिर शीघ्र कपाट।।11।।
अदृश वाणी हुई विशेष, भाग्य नहीं पढ़ने का शेष।
एक बार यौगिक ने आन, चमत्कार दिखलाए महान्।।12।।
क्षपणक को वह माने हीन, बने आप थे ज्ञान प्रवीण।
चमत्कार दिखलाओ यथेष्ट, तब मानेंगे तुमको श्रेष्ठ।।13।।
स्वीकारा क्षण में आह्वान, भक्ति करने लगे महान्।
महाकालेश्वर के स्थान, किया कपिल ने यह ऐलान।।14।।



भूप ने कीन्हा यही कथन, क्षपणक शिव को करो नमन्।
कुमुदचन्द आचार्य मुनीश, देख झुकाएँ अपना शीश।।15।।
गढ़ चित्तौड़ के वही महान्, दिखने लगे पार्श्व भगवान।
देखा वही श्रेष्ठ स्तंभ, भरा हुआ लोगों का दम्भ।।16।।
'आकर्णितोऽपि' आदी यह श्रेष्ठ, गुरु ने बोला काव्य यथेष्ठ।
तेजोमय शुभ आभावान, प्रगटे पार्श्वनाथ भगवान।।17।।
लोग किए तब बारम्बार, जैनाचार्य की जय-जयकार।
जैन धर्म कीन्हा स्वीकार, लोगों ने मुनिवर के द्वार।।18।।
कल्याण मन्दिर यह स्तोत्र, मिला धर्म का अनुपम स्रोत।
करने हम आतम कल्याण, अर्घ्य चढ़ाते प्रभुपद आन।।19।।

(घत्तानन्द छन्द)

जय-जय जिन त्राता, मुक्तीदाता, पार्श्वनाथ जिनवर वन्दन।
जय मोक्ष प्रदाता, भाग्य विधाता, तव चरणों में करूँ नमन्।।20।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रव जिताय कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय समुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- पुष्पांजलि हम नाथ!, करते हैं इस भाव से।
'विशद' झुकाएँ माथ, कल्याण मन्दिर स्तोत्र को।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

## श्री कुमुद चन्द्राचार्य जी का अर्घ्य

पार्श्व प्रभू का अर्चाकारी, है कल्याण मंदिर स्तोत्र।
तीन लोकवर्ती जीवों को, विशद पुण्य का पावन स्रोत्र।।
कुमुदचन्द आचार्य प्रवर हैं, इस स्तोत्र के रचनाकार।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री कुमुदचन्द्राचार्य चरण कमलेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## विधान रचयिता श्री विशदसागराचार्य जी का अर्घ्य

कल्याण मंदिर स्तोत्र की रचना, कुमुदचन्द्राचार्य महान।
पार्श्व प्रभु की स्तुति करके, भक्त करें प्रभु का गुणगान।।
कल्याण मंदिर विधान की रचना, विशदाचार्य जी किये महान।
पूजा अर्चा अरु विधान कर, हम भी करें गुरू गुणगान।।

ॐ ह्रीं विधान रचयिता आचार्य गुरुवरश्रीविशदसागर यतिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

# कल्याण मन्दिर स्तोत्र ऋद्धि मंत्र

१. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पासं पासं पासं फणं नमः।
२. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दव्वकराए नमः।
३. ॐ ह्रीं अर्हं णमो समुद्रभयसमनबुद्धीणं नमः।
४. ॐ ह्रीं अर्हं णमो धम्मराए जयतिए नमः।
५. ॐ ह्रीं अर्हं णमो धणबुद्धिं कराए नमः।
६. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पुत्तइच्छी कराए नमः।
७. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महाणं झाणाय नमः।
८. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उन्ह गदहारीए नमः।
९. ॐ ह्रीं अर्हं णमो को पं हं सः नमः।
१०. ॐ ह्रीं अर्हं णमो णमो रपणासणाए नमः।
११. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वारिबाल बुद्धीए नमः।
१२. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अग्गल भय वज्जणाय नमः।
१३. ॐ ह्रीं अर्हं णमो इक्खवज्जणाए नमः।
१४. ॐ ह्रीं अर्हं णमो मोझ्सण झूसणाए नमः।
१५. ॐ ह्रीं अर्हं णमो तक्खरधणप वप्पियाए नमः।
१६. ॐ ह्रीं अर्हं णमो णगभयपणासए नमः।
१७. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कुद्ध बुद्धि णासए नमः।
१८. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पासे सिद्धा सुणंति नमः।
१९. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खिगदे णासए नमः।
२०. ॐ ह्रीं अर्हं णमो गहिल गह णासए नमः।
२१. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पुप्फिंयतरूपत्ताए नमः।
२२. ॐ ह्रीं अर्हं णमो तरूपत्त पणासए नमः।
२३. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वज्जयहरणाए नमः।
२४. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगास गामियाए नमः।
२५. ॐ ह्रीं अर्हं णमो हिंडण मलाणायाए नमः।
२६. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जयदेयपासेवत्ताये नमः।
२७. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खल-दुट्ठणासए नमः।
२८. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उवदव वज्जणाए नमः।
२९. ॐ ह्रीं अर्हं णमो देवाणुप्पियाए नमः।
३०. ॐ ह्रीं अर्हं णमो भद्दाए नमः।
३१. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वीआणं पत्ताए नमः।
३२. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठमट्ठदणासए नमः।
३३. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जवित्ताय खित्ताए नमः।
३४. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उंजि अस्सायतक्खणणं नमः।
३५. ॐ ह्रीं अर्हं णमो मिज्जलिज्जणासए नमः।
३६. ॐ ह्रीं अर्हं णमो ग्रां हुं फट् विचक्राए नमः।
३७. ॐ ह्रीं अर्हं णमो स्वोभि ह्री खोभिए नमः।
३८. ॐ ह्रीं अर्हं णमो इट्ठि मिट्ठ भक्खं कराए नमः।
३९. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सत्तावरिएगु-णिज्जं नमः।
४०. ॐ ह्रीं अर्हं णमोण्हसौअय णासए नमः।
४१. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वप्पला हव्वए नमः।
४२. ॐ ह्रीं अर्हं णमो इत्थि वत्थ णासए नमः।
४३. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बंदि मोक्खए नमः।
४४. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीं क्लीं नमः।



# श्री पार्श्वनाथ चालीसा

दोहा - पार्श्वनाथ भगवान हैं, मंगलमयी महान।
विशद भाव से हम यहाँ, करते हैं यशगान।।
चालीसा गाते यहाँ, होके भाव विभोर।
हरी भरी खुशहाल हो, धरती चारों ओर।।

(चौपाई)

जय-जय पार्श्वनाथ हितकारी, महिमा तुमरी जग में न्यारी।।1।।
तुम हो तीर्थंकर पद धारी, तीन लोक में मंगलकारी।।2।।
काशी नगरी है मनहारी, सुखी जहाँ की जनता सारी।।3।।
राजा अश्वसेन कहलाए, रानी वामा देवी गाए।।4।।
जिनके गृह में जन्में स्वामी, पार्श्वनाथ जिन अन्तर्यामी।।5।।
देवों ने तब रहस रचाया, पाण्डुक वन में न्हवन कराया।।6।।
वन में गये घूमने भाई, तपसी प्रभु को दिया दिखाई।।7।।
पंचाग्नि तप करने वाला, अज्ञानी था भोला भाला।।8।।
तपसी तुम क्यों आग जलाते, हिंसा करके पाप कमाते।।9।।
नाग युगल जलते हैं कारे, मरने वाले हैं बेचारे।।10।।
तपसी ने ले हाथ कुल्हाड़ी, जलने वाली लकड़ी फाड़ी।।11।।
सर्प देख तपसी घबराया, प्रभु ने उनको मंत्र सुनाया।।12।।
नाग युगल मृत्यू को पाए, पद्मावती धरणेन्द्र कहाए।।13।।
तपसी मरकर स्वर्ग सिधाया, संवर नाम देव ने पाया।।14।।
प्रभू बाल ब्रह्मचारी गाए, संयम पाकर ध्यान लगाए।।15।।
पौष कृष्ण एकादशि पाए, अहीक्षेत्र में ध्यान लगाए।।16।।
इक दिन देव वहाँ पर आया, उसके मन में बैर समाया।।17।।
किए कई उपसर्ग निराले, मन को कम्पित करने वाले।।18।।
फिर भी ध्यान मग्न थे स्वामी, बनने वाले थे शिवगामी।।19।।
धरणेन्द्र पद्मावति तब आए, प्रभु के पद में शीश झुकाए।।20।।
पद्मावती ने फण फैलाया, उस पर प्रभु जी को बैठाया।।21।।
धरणेन्द्र ने माया दिखलाई, फण का छत्र लगाया भाई।।22।।
चैत कृष्ण की चौथ बताई, विजय हुई समता की भाई।।23।।
प्रभु ने केवल ज्ञान जगाया, समवशरण देवेन्द्र रचाया।।24।।
सवा योजन विस्तार बताए, धनुष पचास गंध कुटि पाए।।25।।
दिव्य देशना प्रभू सुनाए, भव्यों को शिवमार्ग दिखाए।।26।।

गणधर दश प्रभु के बतलाए, गणधर प्रथम स्वयंभू गाए।।27।।
गिरि सम्मेद शिखर प्रभु आए, स्वर्ण भद्र शुभ कूट बताए।।28।।
योग निरोध प्रभू जी पाए, एक माह का ध्यान लगाए।।29।।
श्रावण शुक्ल सप्तमी आई, खड्गासन से मुक्ती पाई।।30।।
श्रावक प्रभु के पद में आते, अर्चा करके महिमा गाते।।31।।
भक्ती से जो ढोक लगाते, भोगी भोग संपदा पाते।।32।।
पुत्रहीन सुत पाते भाई, दुखिया पाते सुख अधिकाई।।33।।
योगी योग साधना पाते, आत्म ध्यान कर शिवसुख पाते।।34।।
पूजा करते हैं नर-नारी, गीत भजन गाते मनहारी।।35।।
हम भी यह सौभाग्य जगाएँ, बार-बार जिन दर्शन पाएँ।।36।।
पार्श्व प्रभू के अतिशयकारी, तीर्थ बने कई हैं मनहारी।।37।।
'विशद' तीर्थ जो हैं शुभकारी, जिनके पद में ढोक हमारी।।38।।
भव्य जीव जो दर्शन पाते, अतिशयकारी पुण्य कमाते।।39।।
उभयलोक में वे सुख पाते, अनुक्रम से शिव सुख पा जाते।।40।।

दोहा-पाठ करें चालीस दिन, दिन में चालीस बार।
तीन योग से पार्श्व का, पावें सौख्य अपार।।
सुख-शांती सौभाग्य युत, तन हो पूर्ण निरोग।
'विशद' ज्ञान को प्राप्त कर, पावें शिव पद भोग।।

## "श्री पार्श्वनाथ जी की आरती"

(तर्ज : ॐ जय...)

ॐ जय पार्श्व प्रभो ! स्वामी जय जय पार्श्व प्रभो !।
तव चरणों में आरति, करते भक्त विभो !।। ॐ जय...।।
जन्म लिए काशी नगरी में, जग जन हितकारी-2
अश्वसेन वामा माँ के सुत, नाग चिन्ह धारी।। ॐ जय...।।1।।
युवा अवस्था में प्रभु तुमने, संयम धार लिया-2
धार दिगम्बर मुद्रा, निज का ध्यान किया।। ॐ जय...।।2।।
वैर विचार कमठ ने भाई, उपसर्ग किया भारी-2
समता रस में लीन हुए प्रभु, जिनवर अविकारी।। ॐ जय...।।3।।
अहिच्छत्र में प्रभु जी तुमने, 'विशद' ज्ञान पाया-2
सौ इन्द्रों ने प्रभु के, पद में सिरनाया।। ॐ जय...।।4।।
भक्त आपके चरणों, आकर सिरनाते-2
भक्ति भाव से गीत प्रभु जी, चरणों में गाते।। ॐ जय...।।5।



# समुच्चय महार्घ्य

अर्हंत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैनागम जिन चैत्य जिनालय, जैन धर्म को शत् वन्दन।।
सोलह कारण धर्म क्षमादिक, रत्नत्रय चौबिस तीर्थेश।
अतिशय सिद्धक्षेत्र नन्दीश्वर, की अर्चा हम करें विशेष।।

दोहा - अष्ट द्रव्य का अर्घ्यं यह, 'विशद' भाव के साथ।
चढ़ा रहे त्रययोग से, झुका चरण में माथ।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, सरस्वती देव्यै, सोलहकारण भावना, दशलक्षण धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, नन्दीश्वर, पंचमेरु सम्बन्धी चैत्य-चैत्यालय, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरनार, चम्पापुर, पावापुर आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, तीस चौबीसी, विद्यमान विंशति तीर्थंकर तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो समुच्च महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्पक्षेपण करते हुए शांति पाठ बोले)

# शांतिपाठ

शांतिपाठ शांति के दाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
परम शांत मुद्रा जो धारे, जग जीवों के तारण हारे।।
शरण आपकी जो भी आते, वे अपने सौभाग्य जगाते।
शांतिपाठ पूजा कर गाएँ, पुष्पांजलि कर शांति जगाएँ।।
जिन पद शांती धार कराएँ, जीवन में सुख शांति पाएँ-3।
जीवों को सुख शांति प्रदायी, धर्म सुधामृत के वरदायी।।
शांतिनाथ दुख दारिद्र नाशी, सम्यक्दर्शन ज्ञान प्रकाशी।
राजा प्रजा भक्त नर-नारी, भक्ति करें सब मंगलकारी।।
जैन धर्म जिन आगम ध्यायें, परमेष्ठी पद शीश झुकाएँ।
श्री जिन चैत्य जिनालय भाई, विशद बनें सब शांति प्रदायि।।

(शान्तये शान्तिधारा-3) (कायोत्सर्ग करोमि)

(दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

# विसर्जन पाठ

भूल हुई हो जो कोई, जान के या अन्जान।
बोधि हीन मैं हूँ विशद, क्षमा करो भगवान।।
ज्ञान ध्यान शुभ आचरण, से भी हूँ मैं हीन।
सर्व दोष का नाश हो, शुभाचरण हो लीन।।
पूजा अर्चा में यहाँ, आए जो भी देव।
करूँ विसर्जन भाव से, क्षमा करो जिन देव।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

(ठोने में पुष्पक्षेपण करें)

# आशिका लेने का मंत्र

पूजा कर आराध्य की, धरे आशिका शीश।
विशद कामना पूर्ण हो, पाएँ जिन आशीष।।

# विशद प्रायश्चित पाठ

तर्ज - दिन रात मेरे.....

अन्जान जानकर के, अपराध जो किए हैं।
करके प्रमाद जीवों, का ध्यान न दिए हैं।।1।।
समरम्भ समारम्भ, आरम्भ से जो सारे।
त्रय योग से हुए जो, वे दोष सब हमारे।।2।।
कृत कारितानुमत से, चारों कषाएँ करके।
मिथ्याचरण किए हैं, कुत्सित जो भेष धरके।।3।।
आसन शयन गमन में, कोई जीव जो सताए।
आसक्त इन्द्रियों में, होके अभक्ष्य खाये।।4।।
क्षण-क्षण में हमसे भारी, अपराध हो रहे हैं।
दुष्कर्म करके पापों, का बोझ ढो रहे हैं।।5।।
श्री देव शास्त्र गुरु पद, प्रायश्चित विशद पाएँ।
आराधना प्रभू की, कर मोक्ष शीघ्र जाएँ।।6।।



# आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्जः - माई री माई मुंडरे पर तेरे बोल रहा कागा...)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारें, आरति मंगल गावें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....
ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की...2, महिमा कही न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....
सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के....
जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला...2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....
धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के...जय...जय।।